डुग्गर की परा-विद्या

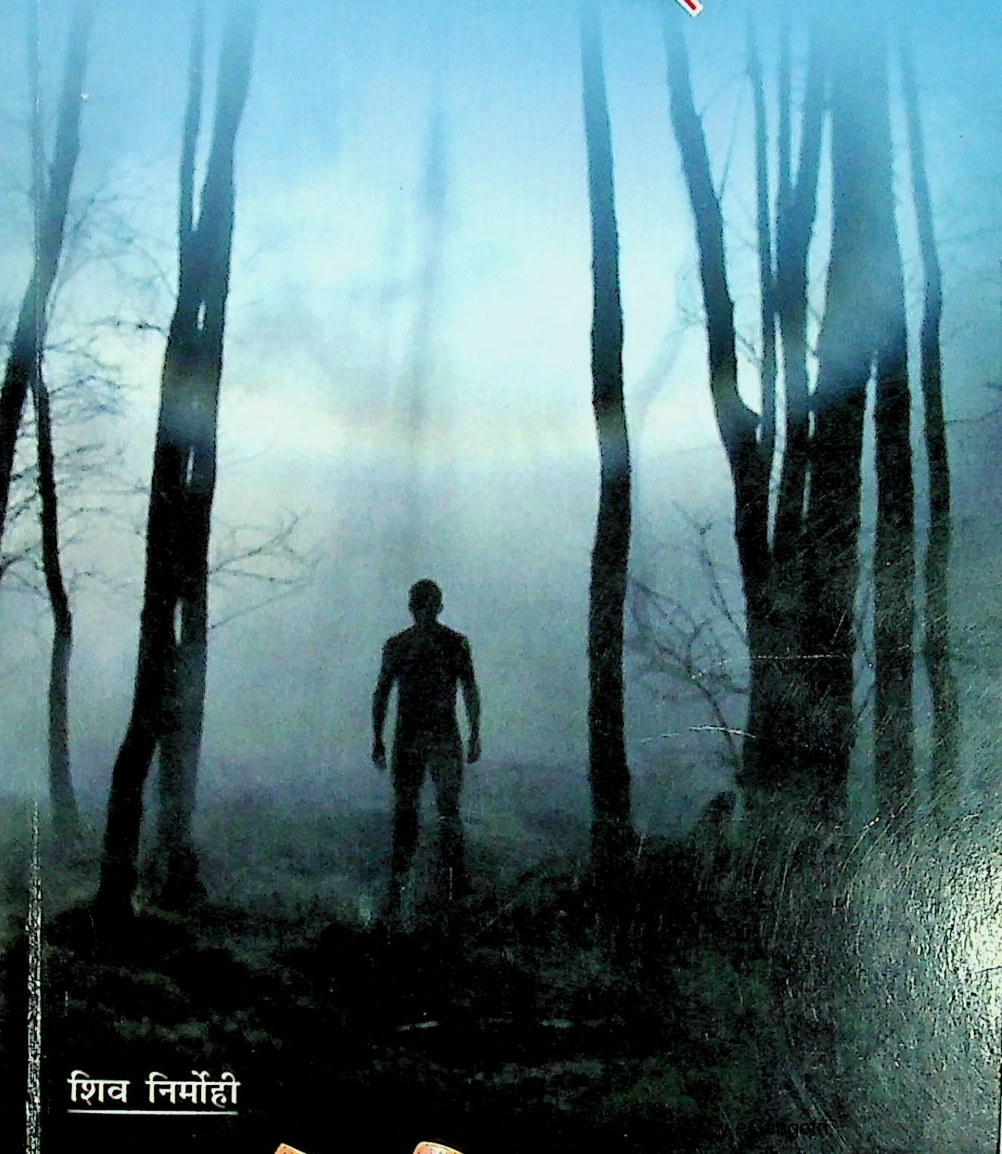

शिव निर्मोही

by eGangotri

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

डुग्गर की परा-विद्या

नाना जी देशमुख पुस्तकालय (भाजपा)
कमांक 1758

शिव निर्मोही

अक्षय प्रकाशन,
अंसारी रोड, नई दिल्ली।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

Duggar Ke Pra-Vidya

By : Shiv 'Nirmohi'

पुस्तक का नाम : डुग्गर की परा-विद्या

लेखक : शिव निर्मोही

© लेखक

प्रकाशक
अक्षय प्रकाशन,
अंसारी रोड, नई दिल्ली।
दूरभाष : 23280601/9910902828

प्रकाशन वर्ष : नवम्बर, 2020
प्रतियाँ : 500
मूल्य : रूपये 240/- (दो सौ चालीस रूपये)

सम्पर्क : शिवालिक प्रकाशन
पैंथल, कटड़ा वैष्णो देवी
जनपद : रियासी
मो. : 94695-31495

मुद्रक :
ओम ऑफसैट,
दिल्ली।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अपनी बात

मेरा जन्म जिस पहाड़ी गाँव में हुआ वहाँ की लोक मानसिकता रूढ़ियों, परम्पराओं और अन्ध-विश्वासों से जुड़ी हुई थी। लोग भूत-प्रेत, डायन, चुड़ैल, मसान आदि दुरात्माओं पर विश्वास करते थे और इनके कुप्रभाव से बचने के लिए शरीर में कई यंत्र-मंत्र भी धारण करते थे।

हम अभी बहुत ही छोटे थे तो हमें परिवार के लोग गाँव की कई महिलाओं के घरों में जाने से इसलिए मना करते थे कि उन पर डायन होने का लांछन था। हम भी जब उनके घरों के निकट से गुजरते तो अपना सिर इस डर से ढाँप लेते थे कि कहीं डायन महिला की कुदृष्टि हम पर न पड़े।

यदि कभी किसी कारण लांछित महिला किसी के घर चली जाती तो घर की एक महिला उस पर कड़ी दृष्टि रखती। जब वह वापस जाती तो उसके पीछे-पीछे घर की महिला भी जाती और चूल्हे से ली वभूति उसके पीछे डालती जाती। ऐसा करने से यह समझा जाता कि उसका जादू उसी के साथ लौट गया। अब घर सुरक्षित है।

गाँव में कई बार नवजात शिशु मर जाते। कई शिशु अल्पायु में ही किसी भीतरी रोग के कारण प्राण त्याग देते। उन दिनों गाँव में एक अपवाद फैलता कि शिशु की मृत्यु का कारण 'डायन' थी। उसने बच्चे का कलेजा खाया और बच्चा मर गया। इससे लांछित महिला का समाज में तिरस्कार होता। उसके लिए घर से बाहर निकलना कठिन हो जाता।

हमें हमारे माता-पिता डायनों से कोई वस्तु लेने से मना करते। यदि किसी पर्व पर कोई महिला हमें खाने के लिए फल देती तो उसे हम तालाब में फैंक देते। परिवार के लोग हमें कई प्राचीन वृक्षों के नीचे बैठने से भी मना करते। हमें बताया जाता कि उन वृक्षों के ऊपर प्रेतात्माओं का आवास है। उनकी पकड़ में जो आता है वह तड़प-तड़प कर मरता है। हम गाँव में घूमने-फिरने जाते तो कहीं-कहीं हमें पुरुषों की झुंडलियाँ बैठी दिखाई देतीं। हम भी उनके पास जाकर बैठ जाते। वे भी प्राय: भूतों और जादू-टोनों की बातें करतें। घर में सायंकाल के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

समय घर-मुहल्ले के लोग इक्ट्ठे बैठते तो वे भी बीच-बीच में भूतों-प्रेतों, डायनों की बातें हमें बताते और हम भी भयभीत हो जाते। कई बार स्वप्न में भी हमें भयंकर आकृतियाँ दिखाई देतीं तो हम चीख उठते।

हमारी सुरक्षा के लिए हमारे परिवार के लोग हमें किसी साधु संत पीर फकीर के स्थान पर ले जाते। वे हमें पहनने के लिए काले, सफेद, लाल धागे देते जिन्हें हम गले या कलाई में बाँध लेते। प्राय: प्रेत-बाधा से अधिक महिलाएँ ही प्रभावित होतीं। उनकी चिकित्सा के लिए गाँव के लोग बाहर से दोआलों को बुला लाते। वे महिलाओं में प्रेत जागृत करते। महिलाएँ उत्पात मचातीं, कोहराम मचता हमारी नींद टूटती। हम भी इन दृश्यों को देखने चले जाते। मेरी ममेर बहन 'शीला' पूर्ण युवावस्था में प्रेत के प्रभाव में आई तो उसकी चीखें पूरा गाँव सुनता था। दुआला और गारड़ी उसकी चिकित्सा जिस ढ़ंग से करते उसे देखकर हम भी डर जाते थे। वे कभी उसके बाल नोचते, कभी थप्पड़ मारते। वह चित्कार करती तो वे कहते भूत चीख रहा है।

बरसात आती तो झड़ियों के खेल आरम्भ हो जाते। गाँव में खबर फैल जाती कि अमूक महिला ने अमूक व्यक्ति को जड़ियाँ खिला दी थीं। अब वह बोल रही है। जड़ियों में जिस मसान का नाम आता वह गाँव का ही कोई अविवाहित लड़का होता। वह अपनी कहानी सुनाता, सारा गाँव उस की कहानी सुनकर रो पड़ता। उसे प्रेत-योनि से मुक्ति दिलवाने के लिए मृत लड़के के माँ-बाप को पिण्ड-दान देने के लिए 'गया जी' भेजने के लिए दबाव डाला जाता। यदि उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती तो वे ऋण लेकर या जमीन बेच कर 'गया जी' जाते। मैं बचपन में जब यह सब दृश्य देखता तो इन पर मनन करने के लिए विवश हो जाता।

मेरे गाँव में एक महान् संत रहते थे, नाम था स्वामी नित्यानंद जी महाराज। वे डोगरा राजा महाराजा प्रताप सिंह के राजगुरू भी थे किन्तु त्याग-भाव के कारण राजमहल छोड़कर पैंथल गाँव में आ गए थे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

और एक कुटिया में रहते थे। वे बड़े योगाभ्यासी भी थे। उनके विषय में कहा जाता था कि वे जब ध्यान में बैठते हैं तो कुण्डलिनी जागृत करके विश्व भ्रमण कर आते हैं। वे भूत, वर्तमान और भविष्य सब का ज्ञान रखते हैं। वे भी कभी-कभी गाँव में अपने चमत्कार दिखाते थे। बात सन 1946 की है। उन्होंने अपनी कुटिया खाली की। एक दुकानदार श्री निवास शाह से कहा कि कुटिया को ताला लगाकर चाबी अपने पास रखो। उन्होंने वैसा ही किया। आधे घंटे के बाद उन्होंने दुकानदार को ताला खोलने को कहा। उसने ताला खोता तो देखा कि कुटिया के भीतर बादाम का ढेर लगा था। स्वामी जी ने वे बादाम बच्चों में बाँटे। मैं भी उनकी कुटिया पर गया और मुट्ठी भर कर बादाम ले आया। स्वामी जी एक सिद्धि प्राप्त संत थे। वे मन की बात जान जाते थे। ऊधमपुर के डेरामल वकील को जब उन्होंने यह बताया कि मंथल और पैंथल के बीच मार्ग में उन्होंने उनके विषय में क्या-क्या बातें कीं। वकील डेरामल नतमस्तक होकर उनके पाँव में गिर पड़े और क्षमा याचना करने लगे।

मेरा एक सहपाठी गोपाल दत पंदोत्रा स्वामी जी का बड़ा भक्त था। स्वामी जी भी उससे बड़ा स्नेह करते थे। उसे अपने पास बिठा कर कुछ साधना कराते। बड़े होकर वह बालक एक प्रख्यात न्यायाधीश बना। स्वामी जी के समकाली एक संत देवी-पिण्डी में भी रहते थे। हम उनकी कहानियाँ भी सुना करते थे। यज्ञों में वे झज्झर का पानी लेकर पुड़ियाँ तलते थे और लोग बड़े चाव से वे पूड़ियाँ खाते थे। वे भी एक सिद्ध पुरूष थे। हम उनकी भी कई कहानियाँ सुनते थे।

गाँव में एक गंगा राम ड्राइवर भी थे। लोग कहते थे कि उन्हें भी सिद्धि प्राप्त है। वे कई वस्तुएँ आकाशीय मार्ग से मंगवाते थे। कई बार वे नोटों के ढेर लगा देते थे। हम उनके खेल देखते तो आश्चर्यचकित होते।

हमारे गाँव के आसपास छोटे-बड़े कई आश्रम थे। उन आश्रमों में साधु संत रहते थे। उनमें कई सात्विक वृति के थे और कई तामसिक

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

वृति के थे। जो तामसिक वृति के थे उन्हें स्थानीय लोग 'भूत-बाबा' भी कहते थे। वे लोगों को कई चमत्कार दिखाते थे जिन्हें देखने बीच-बीच में मैं जाता तो था किन्तु उनके चमत्कारों से प्रभावित नहीं होता था। वे चमत्कार मुझे जादूगिर के खेल जैसे लगते थे।

किशोरावस्था में मुझे अपना गाँव छोड़कर पंजाब जाना पड़ा। वहाँ रहते मुझे लगा कि जैसी मेरे गाँव के लोगों की मानसिकता है, वैसी ही मानसिकता पंजाब के गाँवों के लोगों की भी है। किन्तु नगरों में इस मानसिकता से ग्रसित लोगों की संख्या कम थी। पंजाब में रहते हुए परा शक्तियों के कुछ अनुभव मुझे भी हुए किन्तु मेरे जो मित्र आर्य-समाज परिवारों से थे, उन्होंने मेरे भ्रम को तोड़ दिया। युवावस्था में मैंने जम्मू-कश्मीर के अतिरिक्त हिमाचल और उतराखंड की यात्राएँ कीं तो मुझे लगा कि हमारे प्रदेश की ही भाँति वहाँ के लोग प्रेतात्माओं पर विश्वास ही नहीं करते हैं अपितु उनकी पूजा भी करते हैं।

मेरा व्यवसाय अध्यापन था। मेरा स्थानान्तरण एक स्थान से दूसरे स्थान होता रहता था। मेरी रूचि इतिहास और संस्कृति में थी। मैं यहाँ भी जाता वहाँ की स्थानीय संस्कृति पर गहन अध्ययन करता। मुझे आश्चर्य होता कि प्रेतात्माओं पर लोगों का विश्वास एक समान था। सन 1988 ई. में मेरा स्थानान्तरण सरकारी कॉलेज ऑफ एजुकेशन जम्मू में हुआ। वहाँ मैं शिक्षार्थी अध्यापकों को हिन्दी-शिक्षण पढ़ाता था। वहाँ एक ही क्लास थी। मेरे पास पर्याप्त समय था। अत: मैं कॉलेज के पुस्तकालय में चला जाता था। पुस्तकालय में मैंने मनो-विज्ञान और परा मनोविज्ञान पर ढेरों पुस्तकें देखीं। मनो विज्ञान पर मैंने अपनी प्रशिक्षण अवधि में कई पुस्तकें पढ़ी थी। किन्तु परा मनोविज्ञान पर एक भी पुस्तक नहीं पढ़ी थी। मैंने पहले वे पुस्तकें पढ़ीं जो हिन्दी में उपलब्ध थीं। इन पुस्तकों को पढ़कर मेरी अभिरूचि इस विषय की ओर बढ़ी। मैंने विदेशी विद्वानों की इस विषय पर लिखित पुस्तकों का अध्ययन प्रारम्भ किया। इन पुस्तकों का अध्ययन करने से मुझे लगा कि केवल मेरे प्रदेश या देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अब भी ऐसे लोग और विद्वान हैं जो परा-विद्या को कल्पना नहीं अपितु एक सत्य

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पर आधारित शास्त्र मानते हैं। मुझे यह जान कर भी आश्चर्य हुआ कि परा-विज्ञान पर जितना सटीक शोध कार्य विदेशों में हुआ है, उनकी तुलना में हम बहुत ही पिछड़े हैं।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल की ओर से 'सांचा-विद्या तथा पारम्परिक लोक विद्याओं' पर एक परिचर्चा हिमाचल प्रदेश के शक्ति-स्थल चिंतपूर्णी में दिनांक 21 जनवरी से 23 जनवरी सन 2002 में आयोजित की गई। इस परिचर्चा के संयोजक डा. वंशीराम शर्मा थे। उन्होंने मुझे भी पत्र लिखकर इस परिचर्चा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। मैं अपनी पत्नी को साथ लेकर चिंतपूर्णी पहुँच गया।

संयोजकों ने इस परिचर्चा में वैज्ञानिकों, तांत्रिकों, लोक वार्ता विदों, परा विज्ञानियों तथा ज्योतिषियों को भी आमंत्रित किया था। इस परिचर्चा में भाग लेने प्रसिद्ध बौद्ध-विद्वान छेरिंग दुर्जे भी आमंत्रित थे। इस परिचर्चा में मुझे परा-विद्या से संबंधित कई नए तथ्यों की जानकारी मिली। परा-विज्ञानी विषय को अपने ढ़ंग से प्रस्तुत करते तो वैज्ञानिक उनके तर्कों को विज्ञान की दृष्टि से परख कर अपना निष्कर्ष बताते। इस परिचर्चा में भाग लेने के बाद जब मैं घर वापस लौटा तो मैंने निश्चय किया कि मैं भी डुग्गर की परा-विद्या पर शोध करूँगा।

अगस्त 2005 में मैं अपने बड़े पुत्र नलिनाक्ष से मिलने अहमदाबाद गया। एक दिन हम नगर में घूम रहे थे तो एक वाटिका में मैंने पीत-वस्त्रधारी कुछ लोगों को देखा। उनके प्रति मेरी जिज्ञासा बढ़ी। मैं वाटिका के अन्दर चला गया। यह शिविर 'विराट गायत्री परिवार' की ओर से आयोजित किया गया था। शिविर में एक ओर पुस्तक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी। मैं प्रदर्शनी की ओर ही गया। वहाँ एक पुस्तक ने मुझे आकर्षित किया। पुस्तक का नाम था - मरणोतर जीवन : तथ्य एवं सत्य। इस पुस्तक के सम्पादक थे - 'ब्रह्म वर्चस', इस पुस्तक का मैंने गूढ़ाध्ययन किया। इससे प्रभावित होकर मैंने भी परा-विद्या पर पुस्तक लिखने का मन बनाया।

मेरे पास देश और विदेश के विद्वानों द्वारा परा-विज्ञान पर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

लिखित पुस्तकों की सूची थी। मैंने कई पुस्तकें पढ़ी और 'नोट्स' तैयार किए। मैंने निश्चय किया कि मैं अपने शोध को केवल डुग्गर तक ही सीमित रखूँगा। मैंने डुग्गर प्रदेश का भ्रमण तो किया कई पराविज्ञानियों, तांत्रिकों, साधु-संतों, पीरों फकीरों, ओझाओं से भी मिला किन्तु मुझे उनसे प्रामाणित सामग्री नहीं मिली। वे मुझे टालते ही रहे और सत्य बताने को तैयार न थे।

अन्ततः मैंने संकलित सामग्री को ही समेटा। कोरोना संक्रमण का दौर चल रहा था। मुझे घर से बाहर जाना नहीं था अतः अगस्त-सितम्बर 2020 में मैंने संकलित सामग्री को पांडुलिपि में समेट लिया।

इस पुस्तक में मेरा विशेष शोध कार्य संकलित नहीं है। मैंने विद्वानों की पुस्तकों से सन्दर्भ लेकर आत्म-सन्तुष्टि के लिए यह छोटी सी पुस्तक डुग्गर के पाठकों के लिए लिखी है। मुझे विश्वास है कि मेरे क्षेत्र का कोई न कोई परा विज्ञानी इस विषय पर शोध-कार्य करके नया कीर्तिमान स्थापित करेगा।

सितम्बर 2020

शिव 'निर्मोही'
पैंथल (कटड़ा वैष्णो देवी)
जम्मू-कश्मीर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय	विषय	पृष्ठ
1.	**प्रथम अध्याय**	**मानव शरीर (जीवन-मरण)**	1
		1. शरीर का विकास	1
		2. जीवन यात्रा	2
		3. मृत्यु भय	3
		4. मृत्यु के चरण	5
		5. अन्तिम संस्कार	7
2.	**द्वितीय अध्याय**	**मरणोतर जीवन**	8
		1. नास्तिक दर्शन	8
		2. आस्तिक दर्शन	10
		3. थेनेटालोजी	11
		4. पराविज्ञान	11
		5. विज्ञान	12
3.	**तृतीय अध्याय**	**भूत-प्रेत**	14
		1. भूत-प्रेत	14
		2. वैज्ञानिक अध्ययन	16
		3. अच्छे भूत	20
		4. भूत कौन बनता है	21
		5. छाया शरीर	22
		6. भूत सब को दिखाई क्यों नहीं देता	24
		7. भूतों की उपस्थिति	24
		8. भूत बाधा	27
		9. भूतों की श्रेणियाँ	31
		10. भूत-निर्माण एक कल्पना	33
		11. प्रेत	34

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

		12. प्रेतात्मा का फेरा	34
4.	**चतुर्थ अध्याय**	**पितर**	39
		1. प्राणी, पितर, पितर–सम्पर्क	39
		पितर श्राद्ध	46
5.	**पंचम अध्याय**	**पुर्नजन्म**	48
6.	**षष्टम अध्याय**	**देव आत्माएँ**	56
		1. देव	56
		2. देवताओं का निवास स्थान	57
		3. उप देवता	58
		4. लोक देवता	61
		5. लोक देवी	64
		6. ग्राम देवी	64
		7. सती	65
		8. विद्‌या धर	65
		9. नाग	66
		10. अभिशाप	66
		11. आर्शीवाद और वरदान	67
7.	**सप्तम अध्याय**	**दुरात्माएँ (अप देवता)**	69
		1. राक्स	69
		2. दैत्त	70
		3. पशाच	71
		4. जक्ख	72
		5. जल बेताल	73
		6. चस	73
		7. घोगड़	73
		8. अप्सरा (परी)	73
		9. जोगन	75

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

10. पिशाचिनी 78
11. डाकिनी 81
12. यक्षिणी 82
13. किन्नरी 83
14. चुड़ैल 83

8. अष्ठम अध्याय मसान 85
1. मसान 85
2. मसान से संबंधित आधि-व्याधियाँ 87

9. नवम अध्याय सिद्धि और साधना 90
1. देव साधना (सात्विक साधना) 90
2. औघड़ 98
3. प्रेतसिद्धि 98
4. धन प्राप्त करने के लिए साधना 101

10. दशम अध्याय पराविद्या और लोक-अनुष्ठान 104
1. अनुष्ठान 104
2. अनुष्ठान-कर्ता दोआला आदि 105
3. कुल देवता से संबंधित अनुष्ठान 109
4. चौकी अनुष्ठान 110
5. सौंगल स्नान 111
6. हत्या संबंधी अनुष्ठान 111
7. वासक बांधना 114
8. जातर अनुष्ठान 115
9. जोगनों से सुरक्षा के लिए अनुष्ठान 115

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बल निकालना 116

11. **एकादश अध्याय यंत्र, तंत्र, मंत्र** 117

1. जादू 118
2. तंत्र 120
3. लोक मंत्र 121
4. डोगरी लोक मंत्र 122

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रथम अध्याय : मानव शरीर

मानव शरीर (जन्म और मृत्यु)

मानव शरीर के विकास का क्रम शुक्र-भ्रूण से प्रारम्भ होता है। नौ मास तक गर्भ में रहने के पश्चात् वह एक विकसित शिशु के रूप में जन्म लेता है। जन्म के पश्चात् उस का रूप परिवर्तन होता है। सर्व प्रथम वह शिशु रूप में रहता है, तत्पश्चात् वह बालक, किशोर, तरूण, प्रौढ़ तथा अन्त में एक वृद्ध का रूप धारण करता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य शरीर का निर्माण जिन कोशों से होता है, वे मुख्यत: दो भागों में विभाजित है :

1. **नाभिक (न्यूक्लियस)**

ये चेतन अंश हैं। सुनना, देखना, सूंघना, व्यक्त होना ये उसी के गुण हैं।

2. **पंच भौतिक प्राकृतिक पदार्थ : (साइटोप्लाजम)**

जल, अग्नि, आकाश, पृथ्वी, वायु आदि पंच भौतिक प्राकृतिक पदार्थ हैं। मानव शरीर के विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

वंशानुक्रम

मनुष्य के जन्म के साथ ही गुण, धर्म, स्वभाव का निर्माण गुण सूत्रों से होता है। शिशु के जन्म और विकास में ये गुण देखे जा सकते हैं। हाथ, नाक, कान,दान्त देह आदि में वंशानुगत प्रभाव देखा जा सकता है किन्तु बुद्धि और भावना में ऐसा नहीं होता है।

शरीर का विकास

शरीर शास्त्री मानते हैं कि प्रत्येक शरीर सात वर्षों में पूर्णतया नवीन हो जाता है, अर्थात् पहले के अणु बिगड़ कर उन का स्थान नये अणु ले लेते हैं। यह परिवर्तन अति धीरे-धीरे होता है। यदि किसी के शरीर का भार दो क्विंटल है तो सात वर्षीय परिवर्तन के अनुसार प्रतिदिन ढाई तोले शरीराणु नष्ट होकर उतने ही नये आ जाते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आयु की प्रथमावस्था में परमाणुओं की मृत्यु की उपेक्षा सम्बर्धन अधिक होता है। अतः शरीर बढ़ता है। सोलह वर्ष की आयु तक प्रायः शरीर बढ़ता ही जाता है किन्तु उतर-आयु में परमाणुओं की संख्या अधिक होने से शारीरिक क्षीणता नष्ट हो जाती है। इस अवस्था में शरीर का विकास अलग ढ़ंग से होता है। लम्बाई रूक जाती है किन्तु शरीर पुष्ट होने लगता है।

जीवन यात्रा

जन्म के साथ ही प्राणी की जीवन यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। शिशु-अवस्था में प्राणी पराश्रित रहता है। उसका पालन-पोषण उस की माँ करती है। प्रारम्भ में वह कुछ बोल भी नहीं सकता है किन्तु फिर भी रोदन अथवा हास्य द्वारा अपनी अभिव्यक्ति कर ही सकता है। उसके रोदन पर माँ समझ लेती है कि उसे भूख लगी है अथवा उसे कोई कष्ट है। ऐसे ही शिशु जब हँसता है तो माँ समझ लेती है कि शिशु सन्तुष्ट एवं प्रसन्न है। शिशु का विकास धीरे-धीरे होता है। उसे वाणी मिलती है, वह अनुकरण करता है और बोलना सीख जाता है। वह चलना सीख लेता है। उस की इन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं और इस प्रकार उस का परिज्ञान बढ़ने लगता है।

शिशु से किशोर अवस्था तक वह सीखता ही जाता है। उसे कुछ ज्ञान परिवार से मिलता है और अधिकांश ज्ञान स्कूल या कॉलेज से मिलता है। इसी अर्जित ज्ञान के आधार पर वह अपनी आजीविका चलता है। वह विवाह करता है। जीवन संघर्ष में जूझ पड़ता है। वह नये से नये अनुभव प्राप्त करता है। वह अपने विवेकानुसार कर्म करता है। कुछ सुकर्म भी करता है और कुछ कुकर्म भी करता है। कुछ मनुष्य अपने जीवन में कुकर्मों से दूर रहते हैं और कई ऐसे मनुष्य भी होते हैं जो कुकर्मों में ही डूब जाते हैं। धीरे-धीरे वे प्रौढ़ता की ओर बढ़ते हैं और फिर प्रौढ़ता से वृद्धावस्था की ओर अग्रसर होते हैं। वृद्धावस्था में उन को लगने लगता है कि उनका शरीर अब पूर्णरूपेण जर्जरित है। तब उन्हें मृत्यु का डर सताने लगता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मृत्यु-भय

प्रायः कुकर्मी व्यक्ति मृत्यु से डरता है। उसे यह भय सताने लगता है कि मरणोपरान्त उसे न जाने कितनी यातनाएँ सहन करना पड़े। वैसे भी कुकर्मी अपना जीवन अपयश और अपमान में ही व्यतीत करते हैं। उन्हें पकड़े जाने का भय लगा रहता है। वे अपने कुकृत्यों के कारण अशान्त रहते हैं।

किन्तु जो लोग धर्मवीर, युद्धवीर, दानवीर, समाज सेवक आदि होते हैं वे मृत्यु से नहीं डरते। वे आश्वासित रहते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में कुछ न कुछ तो किया ही है। उन्हें लगता है कि उन्होंने जो सेवा धर्म, देश और समाज के लिए की है उसे मरने के पश्चात् भी समाज स्मरण रखेगा। हमारे देश के कितने ही क्रांतिकारी हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर चढ़ गए। उन्हें मृत्यु का भय बिल्कुल नहीं था। वे समझते थे कि वे जो पुण्य कार्य कर रहे हैं उससे देश में नई जागृति आएगी। जागृति क्रांति को जन्म देगी। क्रांति से देश परतंत्रता से मुक्त होगा। इसी प्रकार वीर पुरूष भी मौत से नहीं डरते। सैनिक लड़ते-लड़ते शहीद हो जाते हैं। वे शरीर त्यागते समय प्रसन्न रहते हैं कि उन्होंने अपने प्राणोत्सर्ग अपने देश की सुरक्षा के लिए किए।

किन्तु जो सैनिक मौत के डर से पीछे हटते हैं, वे वीर नहीं कहलाते। वे कायर कहलाते हैं और वे समाज में अपमानित जीवन व्यतीत करते हैं। किसी ऊँचे आदर्श के लिए प्राणोत्सर्ग करना गर्व की बात मानी जाती है। जो मनुष्य ऐसा करते हैं वे समाज में सम्मानित होते हैं। भावी पीढ़ियाँ भी उन का सम्मान करती हैं। उन की स्मृति में स्मारक बनाये जाते हैं और उन की मूर्तियों को मालाएँ अर्पित की जाती हैं। ऐसा लोगों के लिए मृत्यु आनन्द का पर्व है।

महात्मा बुद्ध ने भी तो कहा था - मुझे मोक्ष नहीं चाहिए, मुझे निर्वाण नहीं चाहिए। मैं दीन-दुःखियों के लिए बार-बार जन्म लूँ, यही मेरी कामना है। स्वतंत्रता सेनानियों ने भी तो कहा था कि वे देश के लिए बार-बार फाँसी पर लटकाए जाएं, वे बार-बार जन्म लें और फाँसी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पर चढ़े जब तक देश स्वतंत्र नहीं हो जाता। वैसे भी मृत्यु के समय मनुष्य की स्मृति-शक्ति बढ़ जाती है। उसे अपने जीवन की प्रत्येक घटना चलचित्र की भाँति दिखाई देने लगती है। उसने जो सुकृत किए होते हैं, उस पर उसे गर्व होता है जो उसने कुकृत्य किए होते हैं उस पर उसे ग्लानि होती है। कुकर्मी व्यक्ति अपने कुकर्मों को याद करके कई बार रोने भी लगता है।

ईसाई धर्म में जब कोई व्यक्ति प्राण त्यागने लगता है तो परिवार के लोग पादरी को बुलाते हैं। पादरी मरणासन्न व्यक्ति को अपने जीवन में किए पापों को प्रकट करने के लिए कहता है। मरणासन्न व्यक्ति एक-एक पाप पादरी को बताता है। पादरी भगवान से उसके पाप क्षमा करने के लिए प्रार्थना करता है।

मनः शास्त्र के अनुसार यह प्रथा नितान्त श्रेयस्कर बताई गई है। इस से मरणासन व्यक्ति के भीतरी दबाव शान्त हो जाते हैं और वह तनाव मुक्त होकर शरीर छोड़ता है। हिन्दू धर्म में भी भूल स्वीकार करने के लिए प्रायश्चित का प्रावधान है। प्रायश्चित पाप दण्ड को हलका करने का मुख्य आधार है। व्यक्ति के भीतर जो दुष्प्रवृतियाँ दुष्कर्म करवाती हैं, उन्हें साहस पूर्ण छोड़ना, अपने भीतर परिमार्जन करना, परिशोधन करना ही प्रायश्चित है। प्रायश्चित करने से व्यक्ति ने जो दुष्कर्म किए होते हैं उन्हें व्रत, पूजा-पाठ, चिन्तन, क्षमा आदि से शान्त किया जा सकता है।

मृत्यु

जो प्राणी जीवन ग्रहण करता है उसकी मृत्यु भी होती है। जन्म जीवन का प्रारम्भ और मृत्यु अन्त है।

मृत्यु के रूप

मृत्यु के निम्न रूप हैं :

1. स्वाभावित मृत्यु
2. रोग ग्रस्त व्यक्ति की मृत्यु
3. अचानक मृत्यु

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

4. महा बलिदान (शूरता के साथ मरना)
5. जौहर (सतित्व रक्षा के लिए मरना)
6. देहान्तर की मृत्यु

इनके अतिरिक्त विद्वानों ने क्षणिक मृत्यु (निन्दा) अवस्थान्तरण की मृत्यु (यथा बाल अवस्था से तरूण अवस्था में आना) अज्ञानता की मृत्यु (उपनयन) को भी मृत्यु तुल्य माना है।

मृत्यु इच्छा : कई व्यक्ति मृत्यु की इच्छा भी करते हैं। वे आत्म हत्या कर लेते हैं। इसके कई कारण हैं, यथा असाध्य रोग, शारीरिक कष्ट, मानसिक क्लेश, अपूर्ण इच्छाएँ आदि।

स्वेच्छामरण : जो व्यक्ति अपनी इच्छा से मरना चाहते हैं उनके लिए डा. विन्सेट मान्ट मेरिनो ने एक दवाई तैयार की है। इस दवाई के सेवन से इच्छुक की पाँच मिनट के भीतर मृत्यु हो जाती है। फ्रायड ने इसी दवाई से अपना शरीर छोड़ा था। कानून की दृष्टि से यह दवाई अवैध है।

राजाज्ञा : कई व्यक्तियों को राजा के आदेश पर जहर देकर मारा गया। सुकरात को राजा के आदेश से विष दिया गया। सुकरात अपने शिष्यों को बताता रहा कि विष के प्रभाव से उसके शरीर के अंग धीरे-धीरे मर रहे हैं किन्तु अभी उसमें चेतनता है। वे बातें करते-करते निर्जीव हो गए। इनमें सबसे उतम मृत्यु स्वाभावित मृत्यु है। प्रायः बूढे लोग शाँति और सन्तोष से मरते हैं। मरने के ठीक पहले उन्हें मूर्छा सी आने लगती है, वे बेहोशी की अवस्था में चले जाते हैं। पीड़ा के सभी लक्षण समाप्त हो जाते हैं उनके मरने पर परिवार को भी विशेष संताप नहीं होता क्योंकि वे जानते हैं कि मरने वाला आयु भोग कर मर रहा है।

मृत्यु के चरण

शरीर जब आयु की अधिकता से जीर्ण-शीर्ण हो जाता है, उसके अंग अपना कर्तव्य निभाने में असमर्थ हो जाते हैं। चिकित्सा करने पर भी जब कोई लाभ नहीं होता है तब इस नए परिवर्तन को मृत्यु कहते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मृत्यु पके फल की भाँति होती है। यह वृद्धावस्था में स्वयंमेव आ टपकती है। मृत्यु के समय तापमान 98.04 से घटकर 1.50 तक आ जाता है। त्वचा में खून जमने लगता है।

स्नायु पहले ढीले पड़ते हैं फिर अकड़ने लगते हैं। बाद में ढीले पड़ जाते हैं। इस परिवर्तन में प्रायः दो दिन लगते हैं। किन्तु जो व्यक्ति दुर्घटनाओं में या आत्महत्या आदि से शरीर छोड़ते हैं, उनके साथ यह सब नहीं होता।

प्रो. नगोस्की ने मृत्यु के चार चरण माने हैं।

पहला चरण : इस में श्वास की गति और हृदय की धड़कन बंद हो जाती है। फिर भी मस्तिक की चेतना किसी न किसी रूप में जीवित रहती है। ई.ई.जी. यंत्र से यह पता लगाया जा सकता है कि जीवन मरा है या नहीं।

दूसरा चरण : इस चरण में मस्तिक शरीर के अवयवों को सन्देश देना बंद कर देता है। इस चरण में शरीर में हरकतें बंद हो जाती हैं। किन्तु चेतना का पूर्ण अन्त नहीं होता। मस्तक अपनी सता में केन्द्रित रहता है और शरीर के जीवाणु मस्तक के साथ संबंध विच्छेद हो जाने पर भी अत्यंत मंद गति से अपनी हरकतें करते रहते हैं। इस चरण में मृत्यु के कई घंटों बाद भी जीवन के चिह्न पाये जाते हैं।

तृतीय चरण (शास्त्रीय मृत्यु) : इस चरण में नाड़ी की गति, हृदय की धड़कन, श्वास प्रक्रिया रूक जाती है और मस्तक गहरी अवचेतना में डूब जाता है। फिर भी शरीर में मंद गति की हरकतें देखी जा सकती हैं।

चौथा चरण (पूर्ण मृत्यु) : इस चरण में जीवन की सभी सम्भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। पूर्ण मृत्यु का साम्राज्य छा जाता है। इस चरण में जीवाणुओं का सड़ना, विगठित होना आरम्भ हो जाता है। चिकित्सा शास्त्र में इसे 'वायोलाजिकल डेथ' कहते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अन्तिम संस्कार

जब व्यक्ति में आन्तरिक जागरूकता और गतिशीलता नहीं रहती तथा उसका मस्तिष्क चेतनाहीन हो जाता है तो उसे मृतक घोषित कर दिया जाता है। मृतक के शव का संस्कार धर्म, पंथ तथा परम्परा के अनुसार किया जाता है। हिन्दू, प्राय: शव को अग्नि में जला देते हैं। ईसाई और मुसलमान शव को भूमि में दफनाते हैं। पारसी शव को किसी वृक्ष में लटकाते हैं और पक्षी उस शव का भक्षण करते हैं। कहीं-कहीं शव को जल में प्रवाहित करने की प्रथा भी है।

अन्तिम संस्कार के बाद यह मान लिया जाता है कि मृतक प्राणी के स्थूल शरीर का अस्तित्व अब इस संसार में नहीं है। वह अब या तो समाप्त हो गया है या वायावी रूप में परिवर्तित है। उसे अब उस रूप में नहीं देखा जा सकता जैसा वह जीवित रूप में था।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

द्वितीय अध्याय : मरणोतर जीवन

मरणोतर जीवन की अवधारणा से संबंधित दार्शनिकों के मत भिन्न-भिन्न हैं।

नास्तिक दर्शन

नास्तिक दर्शन मरणोतर जीवन में विश्वास नहीं करते। वे मृत्यु के बाद के जीवन की कल्पना को मिथ्या मानते हैं। उनके अनुसार मृत्यु के साथ ही चेतना या आत्मा का अस्तित्व मिट जाता है।

नास्तिक दर्शन के अनुसार जिस प्रकार बीज से वृक्ष उगते हैं। नये उगे वृक्षों के बीजों से नये वृक्ष उग आते हैं और यह क्रम चलता रहता है। उसी प्रकार मनुष्यों की एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को जन्म देती है। पहली पीढ़ी के समापन पर नई पीढ़ी अस्तित्व में आती है और यह क्रम चलता रहता है। जिस प्रकार एक पुराना वृक्ष पुनः नहीं उगता उसी प्रकार मरा हुआ व्यक्ति पुनः प्रकट नहीं होता।

पदार्थ विज्ञान

पदार्थ वैज्ञानिकों का मत है कि आत्मा शरीर के साथ उत्पन्न होती है और जब व्यक्ति मर जाता है तो उसी के साथ उसकी चेतना या आत्मा भी मर जाती है। मृत्यु के पश्चात् व्यक्ति का अस्तित्व मिट जाता है।

बुद्धिवाद

बुद्धिवादियों के अनुसार जो दृश्यमान नहीं है, वह काल्पनिक है और परम्परावादी मान्यताओं पर आधारित है। जो काल्पनिक है वह विश्वसनीय नहीं है। बुद्धिवादियों के अनुसार मरणोतर जीवन काल्पनिक है, अतः यह अवधारणा सही नहीं है कि मृत्यु के बाद भी मृतक का अस्तित्व बना रहता है।

परा विज्ञान

परा वैज्ञानिकों की मान्यता है कि मृत्यु ही जीवन का अन्तिम पड़ाव नहीं है। मृत्यु के बाद भी जीवन की अनन्तता, सतत् चलाय मान

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

रहती है। मरण तो इस प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर काया का होता है, जीवात्मा का नहीं। चेतना अजर-अमर है। गीताकार की नैनंछिन्दन्ति शस्त्राणि से इसका प्रतिपादन करते हुए वे वैज्ञानिकों को बताते हैं कि इस जगत से परे एक अदृश्य परोक्ष जगत का भी अस्तित्व है। इस जगत में ऐसे सूक्ष्म जीवी विचरण करते रहते हैं जिन को यदा कदा प्रकट होते अथवा जिन के द्वारा सम्पन्न क्रिया-कलापों को देखा गया है। जिस ने उन्हें प्रत्यक्ष देखा है, सम्पर्क साधा है, उन्होंने दिवास्वप्न नहीं देखा, अपितु एक सच्चाई का सत्यापन किया है।

परा विज्ञान के विषय हैं (1) जीवन (2) आत्मा (3) प्राण। प्राण का अर्थ है - मनुष्य की वायु क्रिया और शरीर का संचालन। प्राण शरीर को गतिशील रखता है। प्राण निकलने के साथ ही शरीर निष्चेष्ट हो जाता है। आत्मा परमात्मा का अंश है, यह अजर, अमर, निर्मल और निष्कलंक है। शरीर के निष्चेष्ट होने पर भी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है।

मरने के बाद कर्मों का फल जीव को भोगना पड़ता है। जीव न तो प्राण है और न आत्मा है। स्वर्ग-नरक जीव के लिए परिकल्पित है।

गुह्य विज्ञान

गुह्य विज्ञानी कहते हैं कि प्रत्यक्ष दिखाई न देने पर भी ऐसी सूक्ष्म आत्माओं के अस्तित्व को नकारा नही जा सकता। कई आत्माएँ स्वत: ही बिना किसी प्रयास के अनपेक्षित तरीके से लोगों को दिखाई देने लगती हैं।

इंग्लैंड के प्रख्यात परामनोवैज्ञानी एण्ड्रयूगीन के अनुसार समय-समय पर ऐसी अनेक प्रामाणिक घटनाएँ सामने आती रहती हैं, जिन से प्रेतात्माओं की पुष्टि होती है।

विश्व के मूर्घन्य परामनोविज्ञानियों द्वारा किए गए प्रयोग परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि आत्माओं का अस्तित्व प्रेत योनि में लम्बे समय तक बना रहता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आस्तिक दर्शन

प्राय: सभी आस्तिक दर्शन मरणोतर जीवन में विश्वास करते है। इसी प्रकार विश्व में जितने भी धर्म हैं वे प्राय: सभी मरणोतर जीवन के प्रति आस्थावृद्ध हैं। यथा

पारसी धर्म : जीवात्मा की मरणोपरान्त सता एवं कर्मफल पर इस धर्म में आस्था व्यक्त की गई है। पारसियों का मानना है कि जीवात्मा कर्मानुसार स्वर्ग-नरक को प्राप्त करता है। पारसियों का देवता अरमुन्द है। वह अहुरों का अधिपति भी है।

बौद्ध धर्म : यह धर्म मरणोतर जीवन में विश्वास तो करता है किन्तु आत्मा का अस्तित्व स्वीकार नहीं करता। बौद्ध धर्म पुर्नजन्म में विश्वास करता है। लामा पंथ में भी पुर्नजन्म को मान्यता प्रदान की गई है।

यहूदी धर्म : इस धर्म के अनुयायियों का विश्वास है कि जीवात्मा मृत्यु के बाद कब्र से उठेगा और ईश्वर की कृपा से उस का उद्धार होगा। कयामत की कल्पना यहूदी-धर्म में भी है।

इस्लाम धर्म : मरणोतर जीवन में इस्लाम धर्म की अवधारणा यह है कि कयामत के दिन तमाम आत्माएँ कब्र से बाहर आ जाऐंगी और परमात्मा उन का न्याय करेगा। जो हजरत मुहम्मद को मानते हैं वे उनकी अनुशंसा से जन्त (स्वर्ग) में प्रवेश करेंगे।

हिन्दू धर्म : हिन्दू धर्म का मूल आधार ही आत्मा का आवागमन है। आत्मा अजर और अमर है। मरणोपरान्त भी इस का अस्तित्व बना रहता है। इसे न तो आग में जलाया जा सकता है और न ही अस्त्र-शस्त्र से इसका विच्छेद किया जा सकता है। आत्मा एक शरीर का परित्याग करके दूसरे शरीर में उसी प्रकार प्रवेश करती है जैसे व्यक्ति पुराने फटे वस्त्रों का परित्याग करके नये वस्त्र धारण करता है। इस का अन्त नहीं होता। यह बार-बार प्रकट होती है।

मरणोतर जीवन पर विदेशों में भी शोध कार्य हुआ है। इस दिशा में 'थेनेटालोजी' का कार्य सराहनीय है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Libra... Jammu. Digitized by eGangotri

थेनेटालोजी : यह वह विज्ञान है जो मृत्यु-सम्बन्धी अनुसंधान करता है। 'थेनेटास' ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है - मृत्यु। इस विज्ञान के अन्तर्गत विदेशों में जो काम हुआ है उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि मृत्यु के बाद भी जीवात्मा का अस्तित्व बना रहता है।

डा. राबर्ट कूकल ने भी इस विषय से संबंधित जो निष्कर्ष निकाले हैं उनमें भी कहा गया है कि मृत्यु के बाद मनुष्य अपने सूक्ष्म अणुओं के शरीर से बना रहता है। उस के मन की चंचलता, इच्छाएँ और वासनाएँ बनी रहती हैं। यदि वे अतृत्त रहें या जहाँ आसक्ति होती है जीव वहीं मडराता है।

मरणोतर जीवन में मनुष्य की स्थिति सूक्ष्म शरीर धारी की होती है। सूक्ष्म परमाणुओं से बने शरीर को सूक्ष्म शरीर कहते हैं। सूक्ष्म शरीर के परमाणु सजीव एवं सचेत होते हैं। सूक्ष्म शरीर के लिए अन्न की आवश्यकता नहीं पड़ती। केवल विचार और भावना से ही इस की पूर्ति होती है। वर्षा, शीत गर्मी, सुख दुःख का अनुभव सूक्ष्म आत्माएँ भी करती हैं।

परा विज्ञान

परा वैज्ञानिकों के अनुसार विचारों और भावनाओं का मूल केन्द्र सूक्ष्म शरीर है। इस का प्रवाह यदि निषेधात्मक है तो व्यक्ति पिशाच, असुर, शैतान बनेगा किन्तु यदि विधेयात्मक है तो व्यक्ति महापुरुष, ऋषि, उपदेवता आदि बनेगा।

परा वैज्ञानिकों का मत है कि शरीर का परित्याग करने के बाद भी जीवात्मा का अस्तित्व किसी न किसी रूप में बना रहता है। कई बार वह जीवात्मा मानवीय रूप में तो कई बार छाया रूप में भी दिखाई देती है।

अध्यात्म विज्ञान के अनुसार प्राणी के परलोक चले जाने के बाद भी उसके स्थूल शरीर से निकली विद्युत शक्ति उन वस्तुओं का घेरा डाल कर चिरकाल तक अपना आधिपत्य जमाये रहती हैं जिन के साथ उनका मोह जुड़ा हो। भूत-प्रेतों का अस्तित्व प्रायः इसी स्तर का

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

होता है।

परा-विज्ञान ने इस तथ्य को भी सही माना है कि मौत के बाद सूक्ष्म शरीर के साथ योग्यताएँ क्षमताएँ, आदतें एवं धारणाएँ भी साथ जाती हैं। अतः जब कभी किसी का साक्षात्कार किसी सूक्ष्म शरीर के साथ किसी भी रूप में होता है तो वह उस की क्षमता एवं योग्यता से न केवल प्रभावित होता है अपितु उस से प्रेरणा भी लेता है।

अध्यात्म विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि आत्मा पिछला उपार्जन भी साथ लेकर प्रयाण करती है। ऐसी आत्माएँ जिस-जिस क्षेत्र की होंगी, वे वैसा ही प्रभाव दिखाएंगी।

विज्ञान

विज्ञान भी मानता है कि कोई भी वस्तु नष्ट नहीं होती केवल उस का रूप बदल जाता है। अतः मरने के बाद शरीर अदृश्य गैस के रूप में परिवर्तित हो जाता है। अदृश्य गैस को देखा नहीं जा सकता, अतः अदृश्य शरीर भी दृष्टिगोचर नहीं होता। वह वायु में विलीन हो जाता है। वायु अदृश्य है जो दिखाई नही देती। वायु ब्रह्माण्ड अन्तरिक्ष और आकाश में स्वच्छन्द रूप से विचरण करती है। अतः सूक्ष्म शरीर भी स्वच्छन्द रूप में विचरण करता है। वह यहाँ चाहे, वहाँ जा सकता है।

डा. गेट्स शरीर की विद्युत शक्ति को ही आत्मा मानते हैं। यह शक्ति मरणोपरान्त भी बनी रहती है। अमेरिका में बिलसा क्लाइड चेम्बर द्वारा आत्मा के अस्तित्व से संबंधित अनेक प्रयोग किए गए हैं। यह चेम्बर एक खोखला पारदर्शी सिलेण्डर है। इस के भीतर से हवा पूरी तरह से निकाल कर भीतर रसायनिक घोल पोत देते हैं। इससे सिलेण्डर में एक मंद प्रकाशपूर्ण कुहरा छा जाता है। उस कुहरे से यदि एक भी इलेक्ट्रोन गुजरे तो फिट किए गए शक्तिशाली कैमरों से उस का फोटो लिया जा सकता है। सिलेण्डर में होने वाली हर हरकत का चित्र आ जाता है।

इस चेम्बर में जीवित चूहे और मेंढक रखकर बिजली के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

करन्ट से उन को प्राणहीन किया गया। देखा गया कि मरने के बाद चूहे या मेंढक की हू-बहू आकृति उस रसायनिक कुहरे में तैर रही है।

उस आकृति की गतिविधियाँ संबंधित प्राणी के जीवन काल की ही गतिविधियों के अनुरूप थीं। क्रमशः यह सता धुंधली होती गई और अन्ततः कैमरे की पकड़ से बाहर चली गई।

इस प्रयोग से इतना तो सुस्पष्ट हो गया कि मृत्यु के बाद भी उस का छाया रूप बना रहता है।

भारतीय संस्कृति में इन्हें सूक्ष्म संस्कार कहते हैं जो मरणोपरान्त भी जीवात्मा के साथ संलग्न रहते हैं।

---

1. मरणोतर जीवन : तथ्य एवं सत्य। सम्पादक : ब्रह्म वर्चस। प्रकाशक : अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तृतीय अध्याय : भूत-प्रेत

भूत-प्रेत

भूत का अर्थ है 'बीता हुआ' तथा प्रेत का अर्थ है 'गया हुआ'। भूत-प्रेत का अर्थ हुआ जो पहले था पर अब नहीं है। भूत-प्रेत का तात्पर्य योनि विशेष से भी है। प्रेत-योनि में जो हैं वे अतृप्त, अशान्त, विक्षुब्ध, वासना ग्रसित हैं। वे अदृश्य हैं, उन का रूप 'वायावी' है। वे इधर-उधर भटकते रहते हैं।

भारतीय योग दर्शन सूक्ष्म व अदृश्य प्रेत योनि को मानता है। यह योनि भी पंच भौतिक है किन्तु जीवधारी में पृथ्वी तत्व की प्रधानता है जबकि प्रेत योनि में वायु तत्व की प्रधानता है। वायु तत्व की प्रधानता के कारण वे अदृश्य रहते हैं। भूत-प्रेतों का उल्लेख केवल भारतीय दर्शन तथा पौराणिक ग्रंथों में ही नहीं अपितु विश्व के अन्य ध र्म ग्रंथों में भी हुआ है।

ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है : श्मशान घाट के पिशाचादि यहाँ से हटो। दूर हो जाओ तथा पुराणों में लिखा है भूतोऽस्मि देव योनम् आदि। पुराणों में भूतों से संबंधित कई कथाएँ भी वर्णित हैं जिनके अध्ययन से लगता है कि भारतीय लोक मानस प्राचीन समय से भूतों के अस्तित्व को स्वीकार कर चुका है। भारत का गरूड़ पुराण मरणोतर जीवन और उस से जुड़ी अनेक जन श्रुतियों की व्याख्या करता है। यहूदी धर्म में भी भूत-प्रेतों को मान्यता प्रदान की गई हैं। इस धर्म में 'मेमन' नामक भूत धर्म लोलुपता का प्रतीक है। इसी प्रकार बाइबिल भी भूतों का अस्तित्व स्वीकार करता है। बाइबिल में 'वालम' नामक भूत का उल्लेख यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि योरूप जैसे देशों में भी लोग 'भूत' के अस्तित्व से परिचित थे।

पारसियों के धर्म ग्रंथ 'जिद-जबेस्ता' में उल्लेख मिलता है कि भूत-प्रेत यमपुरी में निवास करते हैं। किन्तु 'कुरान-ए-मजीद' ग्रंथ में भूतों की उत्पत्ति आग से मानी गई है : बल जिन्न खल कनाहू मिन कवलु मिन मानस्सभूमें। इस का अर्थ है - ' जिन्नों को पैदा किया हमने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, Jammu. Digitized by eGangotri

उनसे पहले गर्म लू से आग ली।' इस्लाम में भूत का पर्याय जिन्न है।

भारतीय साहित्य की ही भाँति योरूपीय साहित्य में भी भूतों-प्रेतों का उल्लेख मिलता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक सेक्सपीयर के नाटक हैमलेट का अध्ययन करने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि यूरोप का तत्कालीन समाज भूत-प्रेतों में विश्वास करता था।

भूत-प्रेतों पर मानव शास्त्रियों ने भी अध्ययन किया। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भूत-प्रेत पिछड़ी जातियों में या पिछड़े क्षेत्र में अधिक महत्व प्राप्त करते हैं। इसका मुख्य कारण है - अशिक्षा और अविवेक। आदिम समाज में जो विकृतियाँ हैं, वे आज भी किसी न किसी रूप में आज भी बनी हुई हैं जिस के कारण यह समाज आज भी परम्परित रूढ़ियों से ग्रस्त है।

उतरी-ध्रुव में एस्किमों लोगों में एक रोग है जिसे विन्ड्रगो कहा जाता है। लोक अवधारणा है कि यह रोग हिम-दानव के कारण फैलता है। इसी प्रकार मलेशिया की महिलाओं में 'लगा रोग' है जो मानसिक विकृति के कारण पैदा होता है किन्तु चीनी महिलाओं में यह रोग नहीं होता। मलेशिया में यह लोक अवधारणा है कि इस रोग का कारण प्रेत-बाधा है।

इसी प्रकार डुग्गर प्रदेश में भी महिलाओं को 'जल रोग' होता है। यहाँ भी यह अवधारणा है कि इस रोग का मूल कारक 'जलवीर' है। जो महिलाएँ निर्वस्त्र हाकर जल में स्नान करती हैं, वे इस रोग की पकड़ में आती हैं। किन्तु यह रोग नगर की महिलाओं को नहीं होता। इस का कारण पिछड़ापन ही माना जा सकता है।

पिछड़े क्षेत्रों में भी भूत-प्रेत, मंत्र, तंत्र संबंधी विकृतियाँ किसी न किसी रूप में बनी रहती है। उनके अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। जम्मू-कश्मीर के पूर्व प्रधानमंत्री और पुराविद् पंडित राम चन्द काक ने अपनी पुस्तक 'एटिक्वीटीज आफ मड़वा' में लिखा है कि वहाँ के स्थानीय तांत्रिकों और सरकार में एक संधि हुई थी कि तांत्रिक किसी सरकारी अधिकारी को अपनी तंत्र-विद्या से हानि नहीं पहुँचाएंगे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इन अध्ययनों से लगता है कि भूत-प्रेत का प्रभाव पिछड़े लोगों पिछड़ी जातियों और पिछड़े क्षेत्रों तक ही सीमित है। किन्तु जब इस विषय पर वैज्ञानिक अध्ययन प्रारम्भ हुए तो निष्कर्ष कुछ और ही निकले।

वैज्ञानिक अध्ययन

19वीं शताब्दी से पूर्व भूत-प्रेत की परिचर्चा केवल लोक-समाज तक ही सीमित थी। इस पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ था। एक समय वह भी आया जब भूत-प्रेतों का अस्तित्व केवल कल्पना की उपज माना जाता था। सुशिक्षित लोग भूत-प्रेत पिशाच को केवल काल्पनिक प्राणी मानते थे। प्रेत विद्या को अवैज्ञानिक माना जाता था क्योंकि विज्ञाान उस पर विश्वास करता है जिसे देखा जा सके, हाथ से स्पर्श किया जा सके अथवा जिसे अनुभव किया जा सके।

19वीं शताब्दी में विश्व के कई वैज्ञानिकों और परावैज्ञानिकों का ध्यान इस विधा की ओर भी गया। इस का एक मुख्य कारण प्रेत-बाधा के कारण पैदा मानसिक और शारीरिक रोग थे। मनो वैज्ञानिकों ने भी जब इन रोगियों का अध्ययन किया तो उन्हें भी लगा वे उद्विग्न, विक्षुब्ध, अशान्त और व्याकुल रहते हैं। उन्होंने भी इन रोगियों का अपने ढंग से अध्ययन किया।

वैज्ञानिकों को भी लगने लगा कि मनुष्य का शरीर केवल पेड़-पौधों की भाँति नहीं है जो फलते-फूलते हैं और नष्ट हो जाते हैं। मानव शरीर मरने के बाद भी पूर्ण रूपेण नष्ट नहीं होता है, उस का छाया रूप बना रहता है।

प्रख्यात परा मनोवैज्ञानिक प्रो. एच.पी. प्रायस ने अपने शोध में यह माना कि मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है। यह लगभग वैसी ही प्रक्रिया है जैसी पानी से भाप बनने की। जिस प्रकार पानी से भाप बन जाने के बाद जल का अस्तित्व सूक्ष्म और अदृश्य हो जाता है किन्तु इतने पर भी जल की सता से इन्कार नहीं किया जा सकता। ठीक उसी प्रकार जीवन और मृत्यु के मध्य एक अविच्छिन्न संबंध बना रहता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मरने के बाद भी हमारी गतिविधियों में कोई अन्तर नहीं आता। वे वैसी की वैसी ही बनी रहती हैं जैसे स्थूल में थीं।

इससे यह अभिप्राय लिया जा सकता है कि जो प्रेतात्माएँ हैं, वे शान्त नहीं रहतीं, वे कुछ न कुछ गतिविधियाँ करती रहती हैं। परा विज्ञानी उन प्रेतात्माओं के दो रूप मानते हैं

1. दुरात्माएँ
2. सद्-आत्माएँ

जो दुरात्माएँ हैं, वे दूसरों को प्रताड़ित करती हैं, उन्हें दूसरों को सताने, कष्ट देने, यातनाएँ देने में आनन्द मिलता है। प्रायः दुरात्माएँ ही हानिकारक हैं। इन्हीं से समाज त्रसित रहता है।

जो सद्-आत्माएँ हैं वे दूसरों का कल्याण करती हैं। व्यक्ति को प्रगतिशील बनाने में सहयोग देती हैं। इनका उद्देश्य व्यक्ति का मंगल करना होता है न कि अमंगल करना।

भूत-जीवित-मृत प्राणी जनों के परमाणु

कई वैज्ञानिकों का मत है कि जिन भवनों में दुराचारी व्यक्ति निवास करते हैं उनके परमाणु उन भवनों में चिपक जाते हैं। उनकी मृत्यु के बाद वे परमाणु कई बार एक अदृश्य व्यक्ति जैसी सता स्थापित कर लेते हैं। वे परमाणु उस भवन पर अधिकार कर लेते हैं। जब कोई दूसरा व्यक्ति उस भवन में प्रवेश करता है तो वे परमाणु उस नये व्यक्ति को आतंकित करके वहाँ से भगा देते हैं।

ऐसा प्रायः देखा गया है कि कई भवनों पर भूत अधिकार कर लेते हैं और वे किसी दूसरे व्यक्ति को उस में प्रवेश नहीं करने देते। यदि कोई व्यक्ति उस में रहने भी लगता है तो उसे रात के समय वहाँ अद्भुत आवाजें सुनाई देने लगती हैं जिन्हें सुनकर वह डर जाता है। ऐसा कई स्थानों में हुआ है। हमारे देश में भी हुआ है और विदेशों में भी हुआ है। ऐसे भवनों के लिए कहा जाता है कि वहाँ भूत का वास है। ऐसे भवनों को भूतों का बंगला कहा जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विलिंग्टन क्रिसेट भवन - नई दिल्ली

इस भवन के विषय में कहा जाता है कि इस में भूतों की छाया है, जो भी इस भवन में रहने आता है, भूत उसे हानि पहुँचाते हैं। इस भवन में रहने के लिए केन्द्रीय मंत्री विद्या चरण शुक्ल आए। वे इस भवन में 19 फरवरी 1981 से 19 मार्च 1981 तक केवल एक माह ही रह पाए। उन्हें त्याग पत्र देना पड़ा। वे इस भवन से चले गए। वित मंत्री सी.डी. देशमुख भी इस भवन में कुछ ही समय के लिए ठहरे। वे भी त्याग-पत्र देकर यह भवन खाली करके चले गए। मोरार जी देसाई भी इस भवन में रहने तो आए किन्तु कामराज योजना के अन्तर्गत उन्हें भी त्याग पत्र देकर यह बंगला छोड़ना पड़ा। सचिन चौधरी, अशोक सेन तथा चौधरी वंशी लाल भी इस भवन में कुछ ही समय के लिए ठहर सके। उन्हें मंत्री मंडल से बाहर निकाल दिया गया और फखरूद्दीन अली अहमद का तो असामायिक निधन ही हो गया।

क्लाइव का भवन

क्लाइव जो कभी भारत का गर्वनर-जनरल था, इंगलैंड वापसी के बाद उसने इशर कस्बे के निकट स्थित एक वन में एक भव्य-भवन बनवाया। क्लाइव दुष्ट प्रवृति का था। उसने जिस ठेकेदार से भवन बनवाया उसे मरने के लिए विवश किया। उसके भूत ने न केवल क्लाइव को अपितु और भी कई लोगों को तंग किया। अन्ततः क्लाइव भी उसी भवन में कुते ही मौत मरा। उसका भव्य-भवन अभिशप्त माना जाने लगा। वहाँ जो भी कोई रहता वह रात्रि के समय रहस्यमयी छाया देखकर डर जाता और भवन छोड़ कर भाग जाता। अब यह भवन एक खंडहर बन चुका है। यहाँ कोई भी नहीं जाता।

इसु-इंगु का भूत बंगला

अफ्रीका के अन्तर्गत नाइजीरिया कभी अंग्रेजों का उपनिवेश था। यहाँ 'इसु इंगु' में एक भव्य बंगला था। बंगला के निकट ही जूजू देवता का स्थान था। देवता मनुष्य की बलि लेता था। अतः इस बंगले में कोई भी नहीं ठहरता था।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

एक बार एक अंग्रेज अधिकारी जिस का नाम फ्रेंक हाइब्स था, इस बंगले में ठहरा। स्थानीय लोगों ने उसे बहुत समझाया किन्तु वह नहीं समझा। उसने रात्रि वहीं व्यतीत करने का निश्चय किया। किन्तु वह वहाँ ठहर नहीं सका। भयंकर छाया देखकर वह वहाँ से भाग आया।

ह्वाइट हाऊस अमेरिका का भूत

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति टू मैन ने लिखा है कि उन्होंने ह्वाइट हाऊस में पूर्व राष्ट्रपति इब्राहीम लिंकन के भूत को ह्वाइट हाऊस में टहलते हुए देखा है। 18 एकड़ भूखंड में परिसीमित इस भव्य प्रासाद में भूत की उपस्थिति यह समझने के लिए पर्याप्त है कि जिन भवनों से मृतकों को लगाव होता है वे मरणोपरान्त भी उन भवनों का अवलोकन करने आते हैं।

डुग्गर में भी ऐसे बहुत से भवन, भवनों के खंडरात और स्थान हैं जिन के विषय में कहा जाता है कि वहाँ भूतों का फेरा या वास है। वहाँ जाने से लोग डरते हैं।

कटड़ा के निकट मियाड़ी गाँव की पहाड़ी के ऊपर एक प्राचीन दुर्ग के अवशेष बिखरे पड़े हैं। वहाँ कभी-कभी युद्धवीरों की हुँकारें सुनाई देती हैं। कहते हैं कि इस दुर्ग को राजा नौलू ने बनवाया था। मरणोपरान्त भी वह घोड़े पर चढ़कर रात्रि के समय आता है। शत्रु को ललकारता है और प्रातः होने से पहले यहाँ से चला जाता है। लोगों ने वहाँ देवी मंदिर का निर्माण करवाया तो यह स्थान शान्त हो गया। ऐसी ही कथाएँ पौनी की पहाड़ी पर स्थित सानाल कोट के बारे में सुनाई जाती है। कहा जाता है कि राजा सालवाहन ने जिस कालकदेव की यहाँ हत्या की थी उस की आत्मा अब भी यहाँ भटकती है। वह एक भूत के रूप में स्थानीय लोगों को भयभीत करता है। ऐसा ही एक स्थान मन चक्क दैत्य से संबंधित भद्रवाह में है। कहते हैं कि उस ही हत्या वासुकि नाग ने जनहित में की थी क्योंकि वह नरभक्षी था।

नगरों, गाँवों और कस्बों में भी ऐसे कई भवन हैं जो भूत-प्रेतों के कारण अभिशप्त हैं। सन 1996 ई. में मैं 'टेली-मैन फिल्मज' के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

लिए एक लेखक के जीवन पर फिल्म बनाने हेतु उनके घर गया। उन का युवा पुत्र उन दिनों मर गया था। मुझे बताया गया कि वह एक युवती से प्रेम करता था। वह असफल रहा तो उसने विष खा लिया और मर गया।

लेखक की पत्नी ने मुझे बताया कि आधी रात को किसी के पद चाप की ध्वनि सुनाई देती है। लगता है कि कोई सीढ़ियाँ चढ़ रहा है। फिर कपाट थपथपाने की आवाज आती। वह उसी कमरे के कपाट थपथपाता यहाँ उस की प्रेमिका शयन करती थी। फिर कुछ देर बाद सोपान उतरने की आवाज आती। मैंने लेखक की पत्नी की बातें ध्यान से सुनीं और लेखक के परिवार पर दृष्टि रखी। दो वर्षों के भीतर लेखक ने अभिशप्त मकान छोड़ दिया और उसने एक नगर में नया मकान बना लिया।

पुराने मकान में जब उत्पात कम न हुए तो लेखक ने वह मकान एक धार्मिक संस्था को दान में दे दिया। संस्था ने वहाँ एक भव्य मंदिर बनवाया तो उत्पात बंद हो गए। उस मंदिर को देखने मैं भी कई बार गया। वहाँ का वातावरण मुझे शाँत लगा।

अच्छे भूत

जो व्यक्ति अपने जीवन में चरित्रवान, दयालु परजन हितैषी तथा शुद्ध आचरण वाले होते हैं वे भूत बन कर भी अपने सदगुणों का परित्याग नहीं करते। वे दूसरे का मार्ग दर्शन करते हैं और जितना सम्भव हो सके उतनी सहायता भी करती हैं।

परा वैज्ञानी डा. राधा कृष्ण श्री माली ने अपनी पुस्तक 'तंत्र और प्रेत विद्या' में एक उदाहरण देते हुए लिखा है कि अमेरिका के प्रख्यात लेखक आर्थर एडर्वड स्टिल वैल पर भूतों की अपार कृपा थी। वे उस का मार्ग दर्शन करते थे। उन्हीं के आदेश पर वह एक महान व्यवसायी, इन्जीनियर, अर्थ शास्त्री और लेखक बना।

26 सितम्बर 1928 को जब उसकी मृत्यु हुई तो उसके पीछे विशाल साम्राज्य था। पाँच रेलमार्ग थे। पोर्ट-आर्थर का विशाल पोर्ट था।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

महाकवि तुलसी दास के विषय में भी कहा जाता है कि उन का मार्ग दर्शन भी एक प्रेत ने किया था। हिन्दी के प्रख्यात लेखक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी अच्छे भूतों के विषय में कई संस्मरण लिखे हैं। उन्होंने जबलपुर के हसन खान के चमत्कारों का भी विवरण दिया है - जो भूतों का आह्वान करता था और उनसे अच्छे काम करवाता था।

डुग्गर में भी कई लोग ऐसे हैं जो अपने संस्मरणों में बताते हैं कि उनका मार्ग दर्शन किसी अदृश्य शक्ति ने किया।

भूत कौन बनता है?

इस संसार में जितने भी मनुष्य हैं वे मृत्यु के पश्चात् भूत नहीं बनते। विशेष रूप से वे प्राणी जो वृद्धावस्था में शरीर का परित्याग करते हैं, जिन्हें सांसारिक वस्तुओं से लगाव नहीं रहता, वे जो शान्त भाव में मृत्यु का सामना करते हैं, वे प्रायः भूत योनि में नहीं आते। यदि वे कुछ दिनों के लिए प्रेत रूप में रहते भी हैं वे अन्तिम संस्कार के बाद श्राद्ध आदि के बाद इस योनि से मुक्त हो जाते हैं।

ईश्वर भक्त जो अपना जीवन पूजा-पाठ, ईश्वर, उपासना, भक्ति भाव में व्यतीत करते हैं और संसारिक आकर्षणों से दूर रहते हैं, वे भी प्रायः भूत नहीं बनते हैं।

समाज सेवक, दार्शनिक, लेखक, चिन्तक, वैज्ञानिक आदि जो अपना जीवन अपने कार्यक्षेत्र में व्यतीत करते हैं, धन, धान्य, लोभ, लालच से दूर रहते हैं, वे प्रायः भूत योनि में नहीं जाते। दयालु, कृपालु, सन्तुष्ट, परहित कारी, समदृष्टि रखने वाले, दयावान, निर्मोही स्वभाव के लोग भी प्रायः भूत योनि में नहीं जाते।

देशहित, राष्ट्रहित, समाज हित, धर्महित जो लोग अपने प्राण उत्सर्ग करते हैं, वे भी प्रायः भूत योनि में प्रवेश नहीं करते। विद्वान, महामानव, राष्ट्र-उन्नायक, पतितों का उद्धार करने वाले भी प्रायः इस योनि में प्रवेश नहीं करते। जो प्राणी आत्म हत्या करते हैं, उन में कई भूत की योनि में प्रवेश करते हैं। जो प्राणी दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं उन में भी कई भूत बनते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जिन की हत्या की जाती है, उनमें भी कई भूत योनि में आते हैं। वे तब तक इसी योनि में बने रहते हैं जब तक वे प्रतिशोध न ले लें।

कुकर्मी भी प्राय: भूत-योनि में आते हैं। जिन व्यक्तियों को किसी से अत्याधिक मोह हो मृत्यु के बाद वे भी भूत योनि में प्रवेश करते हैं। अध्यात्मक विज्ञान के अनुसार प्राणी के परलोक चले जाने के बाद भी उनके स्थूल शरीर से निकली विद्युत शक्ति उन वस्तुओं को घेरा डालकर चिरकाल तक अपना आधिपत्य जमाये रहती हैं जिन के साथ उनका मोह जुड़ा हो। भूत-प्रेतों का अस्तित्व प्राय: इसी स्तर का होता है। जीव के जन्म लेने के बाद भी लम्बे समय तक उसकी छाया का प्रेतरूप बना रहता है।

जिन प्राणियों को सम्पति या किसी वस्तु के प्रति मोह हो, मरने के पश्चात् भी उनका मोह बना रहता है। वे भूत-प्रेत रूप में उस वस्तु के संरक्षक बने रहता चाहते हैं।

जो प्राणी अल्प-आयु में शरीर त्याग देते हैं, उनके भूत बनने की सम्भावना बनी रहती है। जो प्राणी इस जीवन में अतृप्त और अशान्त रहते हैं, मरणोपरान्त उन में भी कई भूत योनि में प्रवेश करते हैं। जो प्राणी मानसिक रूप से असन्तुलित अथवा विकृत होते हैं, वे भी प्राय: मरने के बाद भूत योनि में जाते हैं। जिन्हें अपनों से अत्याधिक स्नेह हो वे भी मरने के पश्चात् उनके आगे-पीछे भूत रूप में मंडराते रहते हैं।

छाया शरीर

मृत्यु के पश्चात् मानव के स्थूल शरीर से उस का छाया शरीर उस के तन से निकल कर बाहर आ जाता है। परा-वैज्ञानिकों का मानना है मनुष्य का प्राण तथा अन्य तत्व इस छाया शरीर के साथ रहते हैं। किन्तु इस में मनुष्य की देह और ज्ञानेन्द्रियाँ शून्य हो जाती हैं।

ऐसा अनुमान है कि मरने के 36 घंटे बाद जीव छायामय शरीर को छोड़कर बाहर निकल आता है। तब छाया शरीर भी स्थूल शरीर के निकट रहकर धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

परा वैज्ञानिकों के अनुसार जो मुर्दे गाड़े जाते हैं उनका छाया शरीर कब्र के ऊपर कुछ समय तक रहते हैं और बाद में वे भी धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं। यह सब ऐसे ही होता है जैसे वैज्ञानिकों ने सिलण्डर में चूहे को विद्‌युत तरंगों के शाट से मारा तो उस के शरीर से जो गैसें ऊपर उठीं उन से चूहे का वैसा ही रूप बना जैसा नीचे था।

अत: कहा जा सकता है कि मरने के बाद मनुष्य का जो वायावी शरीर बनता है उसका रूप रंग और आकार वैसा ही होता है जैसा जीवित व्यक्ति का था। मानो शाम नामक एक लड़के की मृत्यु हो जाती है। मरने के बाद वह भूत बनता है। उसका जो भूत का रूप है वह तो वायावी है किन्तु वह तांत्रिकों को देखने में वैसा ही लगता है जैसा मरने से पूर्व था। जिस प्रकार मनुष्य की छाया दर्पण में पड़ती है तो दर्पण में हमें वैसा ही मनुष्य दिखाई देने लगेगा जैसा वह दर्पण के सन्मुख खड़ा है। ठीक वैसे ही मरे हुए मनुष्य का रूप छाया रूप वैसा ही दिखाई देता है जैसा वह था।

जो शरीर जलाए जाते हैं उनके छाया शरीर चिखा के ऊपर कुद समय तक मंडराते हैं और बाद में वे धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं। प्राय: ऐसा ही होता है कि मृतक का छाया शरीर मृत्यु के पश्चात् घर के ही आसपास घूमता है। कुछ छाया शरीर शव के निकट ही रहते हैं और परिवार के लोगों को चीखते चिलाते हुए भी सुनते हैं। परिवार को रोता देख वे प्रसन्न भी होते हैं।

पैंथल के मास्टर कृष्ण दत्त का छाया शरीर मृत्यु के बाद भी शव के निकट ही घूमता-फिरता रहा। परिवार या मुहल्ले के जो लोग घर में रखे उनके शव को देखने आ रहे थे, वह उन को देख रहा था। उनका छाया शरीर धरती पर कफन से लिपटे उनके स्थूल शरीर को भी देख रहा था। वे कुछ समय के लिए सजीव हुए फिर मूर्छा की गोद में सो गए। कई छाया शरीर शव-यात्रा में भी भाग लेते हैं। वे भी शव के साथ-साथ चलते हैं। मृतक को जब अग्नि दाह दिया जाता है तब भी वे शव दाह का दृश्य देख रहे होते हैं। किन्तु जब मृतक की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कपाल-क्रिया हो जाती है तो वे अदृश्य हो जाते हैं। कपाल क्रिया से अभिप्राय खोपड़ी का फटना और भस्म होना है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि मृत्यु के बाद भी मस्तिष्क कुछ समय तक जीवित रहता है। खोपड़ी फटने और जलने के बाद यह मान लिया जाता है कि अब मृतक के स्थूल शरीर का पूर्णरूपेण नाश हो गया है।

भूत सब को दिखाई क्यों नहीं देते

वैज्ञानिकों का मत है कि त्रि-आयामी वाली वस्तु ही आँखों को दिखाई देती है। जो वस्तु या जीव एक आयामी या दो आयामी होगा वह कभी भी दिखाई नहीं देता। वह विद्यमान रहकर भी अदृश्य है। हमारा शरीर त्रि-आयामी है। किन्तु हमारी आत्मा त्रिआयामी नहीं है। वह होते हुए भी दिखाई नहीं देती। वैज्ञानिकों के अनुसार बिना शरीर वाली आत्मा एकल आयाम की हो जाती है। यही स्थिति भूत-प्रेतों की भी है। वे होते हुए भी सब को दिखाई नहीं देते।

एकल आयाम की वस्तु को देखने के लिए विशेष स्थिति चाहिए। माना लीजिए किसी व्यक्ति को 'यह' स्थिति जागृत अवस्था में आई तो निश्चय ही उसे जो कुछ दिखाई देगा वह सभी को दिखाई नहीं देता। ऐसी स्थिति की तुलना 'समाधि' की स्थिति से भी की गई है। जब यह स्थिति मनुष्य में आती है तो उसे भूत-प्रेत दिखाई देंगे। किन्तु उसके साथ खड़े दूसरे व्यक्तियों को वह भूत दिखाई नहीं देगा क्योंकि उन की दृष्टि त्रिआयामी है, एक आयामी नहीं है। तंत्र की भी अनेक विधाएँ, क्रियाएँ मनुष्य की मनः दशा एकल आयाम में ले जाने वाली है। इसी कारण भूत-प्रेतों को सिद्ध और तांत्रिक जिस प्रकार देख सकते हैं, उसी प्रकार साधारण मनुष्य नहीं। अतः भूत-प्रेत केवल उन्हीं को दिखाई देते हैं जो एकल आयाम स्थिति में होते हैं।

भूतों की उपस्थिति

भूत वायु रूप होते हैं। आँखें और इन्द्रियाँ वायु भूत पदार्थों को नहीं देख सकती किन्तु इन्द्रियाँ उन की उपस्थिति का अनुभव करती हैं।

1. संदर्भ : तंत्र और प्रेत-विद्या - लेखक डा. राधा कृष्ण श्रीमाली

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जैसे हम सुगन्ध को नहीं देख सकते किन्तु इन्द्रियाँ तथा नाक उसे अनुभव करते हैं। इसी प्रकार हम वायु को तो नहीं देख सकते किन्तु वायु वेग को तो अनुभव करते ही हैं। भूतों को संत बलराज भारती के शब्दों से नंगी आँखों से नहीं देखा जा सकता। सूक्ष्म वस्तु को देखने के लिए सूक्ष्म दृष्टि चाहिए। यह दृष्टि साधु-संतों और तांत्रिकों के पास होती है। अत: वे भूतों को देख भी सकते हैं और उनका अनुभव भी कर सकते हैं।

तांत्रिकों के विषय में कहा जाता है कि वे सिद्धियों द्वारा भूतों को अपने वश में कर लेते हैं। वे उन से मन चाहा काम भी करवा सकते हैं। वे उन की सहायता से असम्भव को सम्भव भी कर सकते हैं। किन्तु फिर भी डुग्गर प्रदेश में ऐसे लोगों की संख्या हजारों में है जो यह दावा करते हैं कि उन्होंने भूतों को देखा है। डुग्गर के लोक साहित्य में भी ऐसी कई कथाएँ प्रचलन में हैं जिनमें भूतों और मनुष्यों में मित्रता दिखाई गई है। डोगरी लेखक शंकर दास सन्मोत्रा ने अपनी एक कहानी में लिखा भी था कि उसने भूतों की बारात को अपनी आँखों से देखा था। किन्तु ऐसा स्वप्नास्थिति अथवा एकल अवस्था में ही होता है।

डायना मिस्टो ग्राफ

परा-विद्या के क्षेत्र में हेग के माल्थ और जेल्ट ने सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है जिस के माध्यम से प्रेतात्माओं के साथ वार्तालाप किया जा सकता है। इस यंत्र द्वारा बिना किसी माध्यम के परलोकगत लोगों के सन्देशों को प्राप्त किया जा सकता है।

इस यंत्र के छोर पर एक अक्षर लम्बक लगा रहता है जिसके स्पर्श होने के साथ ही एक बड़े तले कागज पर टाइप राइटर के जैसे अक्षर उठते जाते हैं। यही अक्षर प्रेतात्माओं के संदेश होते हैं जिन्हें परा विज्ञानी पढ़ लेते हैं।

---

1. सन्दर्भ : मरणोतर जीवन : तथ्य एवं सत्य

CC-0. Nanaji Deshmukh Li

Jammu. Digitized by eGangotri

आवाजें सुनाई देना (हेवी फ्रेनिक शिजो फोनिया)

कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति को ऐसा लगता है कि कोई उसे बुला रहा है। उसे कुछ अजीब सा सुनाई दे रहा है। कई बार ऐसा भी होता है कि उसे लगता है कि उसके पास कोई खड़ा है किन्तु दिखाई नहीं देता।

वैज्ञानिकों के मतानुसार यह एक ऐसा रोग है जिस का चिकित्सा विज्ञान में नाम है - हेवी फ्रेनिक शिजो फोनिया।

इस विषय के सम्बन्ध में लेखक का भी एक व्यक्तिगत अनुभव है। सन 1950 ई. में लेखक के पिता काम की खोज में पंजाब चले गए। वहाँ मक्खू-कालोनी में एक ठेकेदार ने उन्हें अपना 'मुन्शी' नियुक्त किया। मक्खू-कॉलोनी का निर्माण हरिकेपतन स्थान पर निर्मित किए जा रहे 'डैम' के कर्मचारियों के लिए किया गया था। भारत सरकार सतलुज और व्यास नदियों के संगम-स्थल पर एक बड़ी योजना को क्रियान्वित कर रही थी।

मक्खू-कॉलोनी में कर्मचारियों ने मिलकर एक मंदिर का निर्माण किया। मेरे पिता पूजा-पाठी ब्राह्मण थे अत: मंदिर निर्माण संस्था ने मेरे पिता को उस मंदिर का पूजारी नियुक्त किया। मंदिर के पार्श्व में एक कक्ष भी था। मेरे पिता उसी में रहते थे। वहाँ मेरे पिता के पाँव जब जम गए तो उन्होंने पूरे परिवार को वहीं बुला लिया। मेरी माता और मेरी तीनों बहनें वहाँ चली गई किन्तु मैं स्कूल पढ़ रहा था। मेरी परीक्षा निकट थी अत: मैं उनके साथ नहीं जा सका। अन्तत: मेरी परीक्षा पूर्ण हुई। मैं सातवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण करके मक्खू-कॉलोनी चला गया।

वहाँ मिडल स्कूल था। मैंने आठवी में प्रवेश लिया और अपने माता पिता के साथ वहीं रहने लगा। मैंने वहाँ अपनी पढ़ाई के लिए मंदिर के ही एक कोने में व्यवस्था कर ली। रात्रि-भोजन के बाद जब मैं पढ़ने बैठता तो मुझे एक लड़की की आवाज सुनाई देती। लड़की कहती - 'पंडित जी।' आवाज सुनाते ही मैं उठ खड़ा होता। हाथ में टार्च

CC-0. Nanaji Deshmukh LibJammu. Digitized by eGangotri

लेकर उस लड़की को ढूंढने निकल पड़ता। मंदिर के पार्श्व में ऊँची-ऊँची घास उगी हुई थी। मैं घास में उसे ढूंढता किन्तु वह मुझे एक बार भी दिखाई नहीं दी। ऐसा कई बार हुआ।

अन्ततः मैंने अपने पिता से लड़की की आवजें सुनने की बात बताई। वे एक तान्त्रिक को बुला जाए। तांत्रिक ने पूरे परिवेश का सूक्ष्म निरीक्षण किया और उसके बाद वह आसन जमा कर बैठ गया। उसने आँखें बंद कीं। कुछ मंत्र पढ़ने के बाद उसने मेरे पिता को अपने निकट बुलाया और कहने लगा - मैंने सब कुछ देख लिया है। जिस कक्ष में आप का बेटा सोता है उसके पार्श्व में एक घना जंगल है। उसी जंगल में 15 वर्षीय एक लड़की की कब्र है। सन 1947 में कुछ शरारती लड़के उस लड़की को कहीं से उठा लाए थे। उन्होंने कुछ दिन उस लड़की को इसी जंगल में रखा और बाद में उसकी हत्या कर के उसे यहीं दफन करके चले गए।

लड़की की आयु और आप के लड़के की आयु एक समान है। लड़की आप के लड़के के साथ खेलना चाहती है, तभी तो वह उसे बार-बार बुलाती है। आपके लड़के की जान को खतरा है। आप कोई उपाय करें।

मेरे पिता ने मुझे 'श्रीमद् भागवत पुराण' का पाठ करने के लिए एक आसन देकर बैठा दिया। मैंने एक सप्ताह में पाठ समाप्त कर लिया। मेरे पाठ से मेरे पिता जी सन्तुष्ट हो गए। मुझे भी इस के बाद आवाजें सुनाई नहीं दीं।

भूत बाधा

अन्ध विश्वासी, शंकालु लोग वास्तविक शारीरिक-मानसिक रोगों को ही भूत-बाधा मान बैठते हैं। वे किसी चिकित्सिक से अपने रोग का निदान न करवा कर ओझाओं की शरण में चल जाते हैं जिससे रोगी बार-बार बीमार होता है और उस की शारीरिक दशा बिगड़ जाती है। शारीरिक-मानसिक रोग जो प्रायः रोगी को झेलना पड़ते हैं, उनमें मुख्य हैं :

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

1. **स्कीजोफ्रेनिया रोग**

यह मानसिक रोग जिस व्यक्ति में पैदा होता है, वह अल्पायु में ही आत्महत्या कर लेता है। डुग्गर प्रदेश के लोग जो अशिक्षित, अनपढ़ और पिछड़े हुए हैं, वे उस की मृत्यु का कारण भूत बाधा मानते हैं। कहा जाने लगता है कि उनके बच्चे पर किसी द्वेषी ने भूत सवार किया था। अतः वह आत्महत्या करने को विवश हुआ। बच्चे के माँ-बाप आत्म-हत्या का मूल कारण जानने का न तो प्रयास करते हैं और न ही अपने बच्चे की गतिविधियों पर दृष्टि रखते हैं।

2. **मानसिक अस्त-व्यस्तता**

इस रोग की दो श्रेणियाँ हैं :

1. **न्यूरोसिस**
2. **साइकोसिस**

1. **न्यूरोसिस :** इस में रोगी चिन्ता में डूबा रहता है। वह आशंकित रहता है।

2. **साइकोसिस :** यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति वास्तविकता से हटकर काल्पनिक लोक में चला जाता है। वह खोया-खोया सा रहता है। प्रायः परिवार के लोग समझते हैं कि ऐसा प्रेतबाधा के कारण है।

3. **साइकिक फैक्टर (मीडियम-प्रेत प्रभावित) :** व्यक्ति के मरने के बाद शरीर तो नष्ट हो जाता है किन्तु साइकिक फैक्टर नहीं मरता क्योंकि वह भौतिक द्रव्य नहीं है। यह इधर-उधर घूमता फिरता है। यह फैक्टर किसी भी व्यक्ति के मस्तिष्क में प्रविष्ट हो जाता है और उस व्यक्ति के मानसिक सन्तुलन को बिगाड़ देता है। इससे भी लगने लगता है कि व्यक्ति प्रेत-बाधा से ग्रसित है।

मस्तिष्कीय रोग : प्रेतात्मा के नाम पर घटित अधिकांश घटनाएँ आवेश ग्रस्त मस्तिष्कीय रोगों के कारण होती हैं। इन रोगों के कारण मनुष्य की शारीरिक और मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है जिस कारण वह कांपता है, आवेश में आ जाता है और अटपटी बातें करता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दमित आकाँक्षाएँ : दमित आकाँक्षाएँ भी कई बार प्रेत का रूप धारण कर लेती हैं। इन से भी मस्तिष्क और शरीर सम्बन्धी रोगों में अभिवृद्धि होती है।

हिस्टेरिया : मनो वैज्ञानिकों के अनुसार प्रेत सम्बन्धी अधिकांश मामले हिस्टेरिया से सम्बन्धित हैं। अतः इस रोग की चिकित्सा एक अच्छा मनो वैज्ञानिक ही कर सकता है।

आयुर्वेद के ग्रंथों में भूतोन्माद की कई शाखाएँ हैं। भूतोन्माद प्रायः असंस्कृत और निम्न स्तर के लोगों को होता है। अतः इन की चिकित्सा रोगी की अवस्था को देखकर की जा सकती है।

भूत ग्रस्त के लक्षण

जो व्यक्ति भूत ग्रस्त होता है, उस में प्रायः निम्न लक्षण दिखाई देते हैं :

1. रोगी अपने शरीर को नोचता है।
2. वह बिना किसी कारण चिल्लाने लगता है।
3. वह प्रायः बड़बड़ाता रहता है।
4. वह बिना किसी कारण आकाश की ओर देखता है।
5. कई बार वह मौन रहता है। बुलाने पर भी नहीं बोलता।
6. बिना किसी कारण उछलने लगता है।
7. वह दौड़ने लगता है।
8. कई बार वह गिरता भी है।
9. वह अपना शरीर काटता है।
10. वह बार-बार कूदता है।

अन्य लक्षण

1. रोगी का रंग पीला पड़ जाता है।
2. वह दुर्बल दिखाई देने लगता है।
3. उसे नींद नहीं आती है।
4. उस का शरीर तपता है।
5. उस की आँखें लाल रहती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh L... , Jammu. Digitized by eGangotri

6. वह अपने मुँह से झाग फैंकता है।
7. उस के मुँह से दुर्गन्ध आती है।
8. वह पाँव पटकता है।

स्त्रियों के लक्षण

1. अतृप्त काम वासना
2. बार-बार मुर्छा आना
3. बिना कारण हड़बड़ाना
4. खींजना
5. घर का सामान इधर उधर पटकना

भूतों के चमत्कार

भौतिक नियम जब सूक्ष्म हो जाते हैं तो इन्हीं को अध्यात्मिक, धार्मिक या फिर अलौकिक नियम कह दिया जाता है। प्रेतात्माएँ भी कुछ ऐसा करती हैं जिन्हें चमत्कार माना जा सकता है।

डुग्गर के लोक साहित्य में ऐसे कई वृत प्रचलन में हैं जिन में भूतों के चमत्कारों का वर्णन मिलता है। भूतों के विषय में कहा जाता है कि वे जब किसी पर कुपित हो जाएं तो उस घर में पत्थरों की वर्षा करते हैं। घर के लोग पत्थर फैंकने की आवाज तो सुनते हैं किन्तु उन्हें पत्थर फैंकने वाला दृष्टिगोचर नहीं होता। डुग्गर के मंदिरों, दुर्गों तथा कहीं-कहीं खेतों में भारी पाषाण शिलाएँ द्रष्टव्य हैं जिनके विषय में कहा जाता है कि उन्हें भूत उठा कर लाए थे। इसी प्रकार भूतों की निर्मित गुफाएँ भी हैं जिनमें वे कभी वास करते थे।

भूतों की कूह्ल

ऊधमपुर जनपद के अन्तर्गत एक गाँव है जिसका नाम है - घोरड़ी। घोरड़ी गाँव में एक लम्बी कूहल है जिसे 'भूतों की कूहल' कहते हैं। इसके अतिरिक्त इस गाँव में और भी कई कूहलें हैं जिन के नाम हैं - मझाना कूहल तथा कूहल फ्रो।

स्थानीय जन श्रुतियों के अनुसार इन में जो भूतों की कूहल है उसका निर्माण एक स्थानीय तांत्रिक ब्राह्मण ने भूतों से करवाया है। जन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्रुतियों में कहा जाता है कि भूत ने ब्राह्मण को मार्ग पर चलते अति तंग किया तो उसने क्रोध में आकर भूत को पकड़ लिया। भूत ने ब्राह्मण से छूटने का बहुत प्रयास किया किन्तु वह ऐसा कर नहीं पाया। अन्ततः ब्राह्मण ने उसे इस शर्त पर छोड़ना मान लिया कि वह गाँव के लिए नाला से कूहल निकालेगा। भूत ने कूहल निकाली तो ब्राह्मण ने उसे मुक्त कर दिया।

भूतों की श्रेणियाँ

परा वैज्ञानिकों ने भूतों को भी कई श्रेणियों में विभाजित किया है, यथा :

1. **निम्न श्रेणी के भूत**

इस श्रेणी में उन भूतों की परिगणना की जाती है जो मानसिक रूप से अपरिपक्व, संस्कार हीन, नीच सोच के होते हैं। ये भूत अकारण भी दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं। इन का काम दूसरों को कष्ट देना, वेदना पहुँचाना और पीड़ित करना होता है।

2. **मध्यम श्रेणी के भूत**

ये भूत कोई भी रूप धारण कर सकते हैं। यह मनुष्य के शरीर पर अधिकार कर लेते हैं और उसे अपनी इच्छा से चलाते हैं। इन के विषय में कहा जाता है कि ये वस्तुएँ इधर उधर ले जा सकते हैं। किन्तु ऐसा सभी नहीं मानते। कई परा वैज्ञानिकों का मत है कि भूत सूक्ष्म रूप में होते हैं, अतः वे वस्तुएँ उठाने और ले जाने में असमर्थ हैं।

3. **ऊँची श्रेणी के भूत**

इस श्रेणी में ब्रह्म राक्षस, बेताल तथा पितर आदि परिगणित किए जा सकते हैं। ये किसी को हानि नहीं पहुँचाते। अपितु ये आर्शीवाद और वरदान देते हैं। जो इन की पूजा करता है या इन्हें अपना इष्ट मानता

डोगरी लेखक नूतन के एक प्रकाशित लेख के अनुसार इस कूहल का निर्माण घोरड़ी के शासक राजा सूरिया के वंशज राजा भूरिया ने करवाया था।

1. डोगरी शीराजा अंक 3 वर्ष 2005

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

है, उसे ये लाभ पहुँचाते हैं। इन भूतों को देवता के समाान भी माना जाता है। ये व्यक्ति को अनिष्ट से बचाते हैं और सब को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

कई परा मनोवैज्ञानिकों ने भूतों की सात श्रेणियाँ मानी हैं और वे हैं :

1. **काल्पनिक भूत**

परा वैज्ञानिकों का मत है कि संशय को यदि हम स्वीकार कर लें तो हमारा मस्तिष्क उन आशंकाओं को स्वीकार कर लेता है। ऐसी स्थिति में अवास्तविकता को भी हम वास्तविकता स्वीकार कर लेते हैं। कहा भी गया है - शंका डायन मनसा भूता।

डोगरी लेखक राम लाल शर्मा ने अपने डोगरी लेख 'भूत' में इसी श्रेणी के भूतों का उल्लेख किया है। कई परा वैज्ञानिकों का मत है कि भूत मन में उत्पन्न होते हैं। इस श्रेणी के भूतों को हम स्व-निर्मित भूत भी कह सकते हैं। अन्धेरे में किसी छाया को भूत समझना काल्पनिक भूत श्रेणी में परिगणित हैं।

2. **मस्तिष्क से सम्बन्धित भूत**

कई बार मस्तिष्क की विकृति के कारण भी हमें भूत दिखाई देते हैं। ऐसे भूत प्राय: पागलपन की स्थिति में दिखाई देते हैं।

3. **मृत व्यक्तियों के विद्युत परमाणुओं से निर्मित भूत**

कई बार ऐसा भी होता है कि मृत व्यक्तियों के शरीर के विद्युत परमाणु जो पुन: जागृत होकर अपनी एक स्वतंत्र सता बना लेते हैं, वे हमें भूत के रूप में दिखाई देते हैं। ऐतिहासिक पुरुष, महापुरुष, साधु-संतों का मरणोपरान्त दिखाई देना इसी श्रेणी में माना जाता है।

4. **इन्द्रिय भोगों से अतृप्त**

मरणोपरान्त कई अशरीरी आत्माएँ जो इन्द्रिय भोगों से अतृप्त होती हैं, वे तृप्ति के लिए दूसरों के शरीर में प्रवेश करती हैं। प्राय: कई भूत अपनी अतृप्त वासनाओं का शिकार महिलाओं को बनाते हैं। जिससे

CC-0. Nanaji Deshmukh Li... , Jammu. Digitized by eGangotri

महिलाएँ प्रेत-बाधा से ग्रसित होती हैं।

भूत निर्माण - एक कल्पना, एक ढोंग

नास्तिक ही नहीं अपितु सुशिक्षित और वैज्ञानिक सोच के कई लोग भूत निर्माण को एक कल्पना मानते हैं। प्राय: यह देखा गया है कि भयग्रस्त व्यक्ति को प्रेत अधिक दृष्टिगोचर होते हैं। उसे रात के अन्धेरे में प्रस्तर खंड भी मनुष्य दिखाई देते हैं। भूत मूलत: बुद्धिभ्रम, भययुक्त बुद्धि का परिणाम हैं। बुद्धि जब भ्रमित हो जाती है तो आँखें भूत देखती हैं और कान भूत की आवाज सुनते हैं। वास्तविकता यह है कि भूत कमजोर मन-मस्तिष्क का परिणाम हैं।

डोगरी के प्रसिद्ध लेखक राम लाल शर्मा का शीराजा डोगरी अंक 154 में एक लेख छपा है जिसका शीर्षक है - भूत। इस लेख में उन्होंने लिखा है कि वे किश्तवाड़ में थे तो वहाँ एक आर्य-समाज के प्रचारक आए और उन्होंने श्राद्ध और भूतों के विरूद्ध एक लम्बा भाषण दिया। उनकी सभा में एक तांत्रिक बैठा था। वह उठा और कहने लगा - भूत सत्य है और मैं उसे दिखा सकता हूँ। प्रचारक ने कहा - 'अभी दिखाओ' उसने उतर में कहा - कल रात्रि के समय सरकूट में आ जाना। मैं वहाँ आप सब को भूत दिखाऊँगा। यह घटना सन 1928 की है।

दूसरे दिन कई लोग सरकूट में इक्ट्ठे हो गए। राम लाल शर्मा भी यह दृश्य देखेन वहाँ पहुँच गए। तांत्रिक ने वहाँ कई अनुष्ठान करने के बाद प्रचारक और लोगों से कहा - अब भूत प्रकट होने वाला है, सावधान हो जाओ। तभी सभी ने देखा कि सर के मध्य भाग में एक काली छाया सी दिखाई देने लगी। तांत्रिक बोला - भूत को बलि पहुँचाओ नहीं तो वह सबका अनिष्ट करेगा। प्रचारक ने सिर पर हलवा प्रसाद उठाया और भूत की ओर बढ़ाया। भूत ने प्रचारक को आगे बढ़ते देखा तो भूत पीछे की ओर भागने लगा। प्रचार तेजी से दौड़ा और उसने भूत को पकड़ा और उसे उठा कर सरकूट के किनारे ले आया। प्रचारक ने उस का काला कपड़ा खोला तो देखा एक 18 वर्ष का लड़का वहाँ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

खड़ा था। गाँव के लोगों ने उस लड़के को पहचान लिया। वह तांत्रिक का बेटा था। लेखक को भी कई तांत्रिकों ने भूत दिखाने के लिए आमंत्रित किया किन्तु लेखक को परिवार से अनुमति नहीं मिली।

प्रेत

ये न तो जीवित स्थिति में होते हैं और इन्हें न तो पूर्ण मृतक ही कहा जा सकता है। इनका स्थूल शरीर नहीं होता अतः इन के लिए कहा जाता है कि ऐसा कोई भी काम नहीं कर सकते जो इन्द्रियों की सहायता से किया जा सकता है। मृतक इन्हें इसलिए नहीं कहा जा सकता कि स्थूल शरीर का परित्याग करने के बाद भी इनका अस्तित्व बना रहता है।

परा वैज्ञानिकों के अनुसार उद्विग्न, विक्षुब्ध, आतुर अशान्त लोग ही मरने के बाद प्रेत बनते हैं। ये वे जीव हैं जो तृष्णा से व्याकुल रहते हैं ये न शान्त रह पाते हैं और न ही आराम कर पाते हैं। न ही सो पाते हैं। इनकी तृष्णा की पूर्ति जब तक नहीं होती ये उद्विग्न बने रहते हैं।

संत बलराज भारती (रामनगर आश्रम) के अनुसार विश्व में केवल हिन्दू धर्म ही एक ऐसा संगठन है जो प्रेत को प्रेतयोनि से अपने पावन ग्रंथों के माध्यम से मुक्त कर सकता है। मनुष्य का मरणोपरान्त जो श्राद्ध-तर्पण आदि किया जाता है उससे प्रेत योनि को शाँति मिलती है और वह उत्पात् मचाना बंद कर देता है।

संत बलराज भारती के अनुसार हिन्दुओं में प्रेत बहुत ही कम होते हैं। प्रेत-योनि से मुक्ति के लिए रचा गया गरूढ़ पुराण प्रासंगिक और उपयुक्त है।

प्रेतात्मा का फेरा

मेरी माता आसो देवी प्रायः प्रातः चार बजे उठती थीं और घर की सफाई में व्यस्त हो जाती थीं। कई बार वे गली की सफाई भी करती थीं। गली की सफाई करते उन्हें कई बार एक सजी-सजाई महिला दिखाई देती थी। वह महिला से प्रश्न करतीं - 'तू कौन है।' महिला उतर देने की बजाय भागने लगती थी। मेरी माता गली के अन्त तक

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उसका पीछा तो करतीं किन्तु वह गली में ही अर्न्तधान हो जाती। गली की कई महिलाओं ने उस महिला का पीछा करते मेरी माँ को देखा। किन्तु वह महिला कहाँ गायब हुई इस का पता किसी को भी न चला।

मेरी माँ बताती थी कि जब भी वह महिला दिखी वह लाल वस्त्रों में थी और पूर्ण यौवना दिखाई देती थी।

मेरा बड़ा बेटा नलिनाक्ष कुमार गुजरात से अपने घर पैंथल आया हुआ था। वह रात के अढ़ाई बजे पेशाब करने बाहर आया। वह अभी वहाँ खड़ा ही था कि उसे मकान के प्रवेश द्वार पर खड़ी एक महिला दिखाई दी जो वृद्धावस्था में थी। यह घटना 2005 की है।

वह प्रेत छाया देख कर डर सा गया। दूसरे दिन उस का तापमान बड़ा और वह ज्वर पीड़ित हो गया। पूजा-पाठ से वह शीघ्र ही ठीक हो गया। मेरी पत्नी अनुसूया विवाह के बाद सन 1962 में पैंथल में आई। वह रात्रि के समय जब किसी कारण बाहर निकलती तो उसे किसी पुरुष की छाया दिखाई देती, कई बार उसे पदचाप भी सुनाई दी। उसे जो दिखाई देता वह मुझे बता देती।

मेरी-छोटी बहन चंचला और बड़ी बेटी निधि निष्कामिनी भी प्रेत-छाया के प्रभाव में आई। दोनों झाड़-फूंक से ठीक भी हो गई। दोनों को प्रेत छाया ने जब पकड़ा तो वे युवा थीं और अविवाहित थीं। मैंने अपने घर का इतिहास ढूंढा। मुझे पता चला कि मेरे चड़दादा कन्हैया का छोटा भाई राधा था। राधा की पत्नी अग्हार जितो गाँव की थी। उसने एक पुत्री को जन्म दिया और प्रसूता काल में ही मर गई। बाद में उसकी लड़की का ठीक-ढंग से पालन-पोषण नहीं हुआ और वह आठ मास की आयु में ही मर गई। राधा की पत्नी की प्रेतात्मा पुत्री की मृत्यु के बाद उतेजित हो उठी। उसने जब उत्पात मचाना प्रारम्भ किये तो मेरे पूर्वजों ने एक अनुष्ठान करके प्रेतात्मा का मोहरा (मूर्ति) स्थापित किया। मोहरा में उसके साथ बच्ची को भी दिखाया गया। मेरे परिवार में प्रायः यह चर्चा होती थी कि प्रेतात्मा की गति नहीं हुई है और वे बीच-बीच में घर का फेरा लगाती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मैंने अपने घर का इतिहास खंगाला तो पता चला कि मेरे दादा तीन भाई थे। उनके नाम थे - लक्ष्मण, सुखराम और सोबा राम। सोबा राम ने ऊधमपुर में विवाह किया था। उनकी पत्नी को सभी 'बेबे' कहते थे। वे कुछ पढ़ी-लिखी भी थीं। शालीनता और सद्व्यवहार में उन जैसी महिला पूरे गाँव में नहीं थी। उनकी एक सौतन भी थी जिसके विषय में मुझे बताया गया कि उसने आत्महत्या की थी। मरणोपरान्त उसकी प्रेतात्मा ने उत्पात मचाया तो उस की आत्मा की शाँति के लिए भी अनुष्ठान किया गया। उसका भी मौहरा बनाया गया।

सोबा राम की युवा-अवस्था में मृत्यु होने के बाद उस की पत्नी 'बेबे' को घर के बाहर रहने के लिए एक छोटा सा कमरा दिया गया। वहाँ कुछ देर उसने घुटन का जीवन तो गुजारा किन्तु अन्त में उसने आत्मदाह कर लिया। उसकी प्रेतात्मा ने भी मेरे परिवार के लोगों को बहुत तंग किया।

मुझे भी लगा कि जो व्यक्ति आत्महत्या करते हैं या मृत्यु से पहले अशान्त रहते हैं उन्हीं की चर्चा समाज में प्रेतात्मा के रूप में की जाती है। हमारे परिवार में जिन लोगों ने शाँति से शरीर त्यागा उनमें किसी को भी प्रेतात्मा के रूप में नहीं देखा गया।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मामी का प्रेत

मेरे ननिहाल जम्मू के निकट सुजुवां गाँव में हैं। मेरे नाना का नाम जगन्नाथ सदोत्रा था। उनके तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं। उनके बेटों के नाम हरिराम, पदमनाथ और पुन्नु थे। नाना जी ने छोटी ही आयु में तीनों बेटों के विवाह कर दिये। मेरी दो मामियाँ साँबा की थीं और एक जम्मू की थी। मेरी मामी जो जम्मू से थी वह देखने में अति सुन्दर थी। वह आठवीं तक पढ़ी थी। उसके पति को क्षय रोग हुआ और वे छोटी आयु में ही मर गया।

मेरी मामी का रफेरा नहीं हुआ था। वह विवाह के बाद सुसराल आई ही नहीं थी। वह मायके में ही एक विधवा का जीवन जीने लगी। मेरे मामा को मरे अभी कुछ ही महीने हुए थे कि मेरी मामी के मायके वालों का संदेश आया कि आप अपनी अमानत आ कर ले जाओ। मेरे नाना ने अपनी विधवा बहु को लाने के लिए पालकी भेजी। उस पालकी पर सफेद कपड़ा डाला। कुम्हार पालकी लेकर मेरी मामी के मायके में पहुँचे। मेरी मामी के माता-पिता ने अपनी विधवा बेटी को डोली पर बैठाया। एक धीवर ने एक जलता हुआ दीप उठाया। वह दीप मेरे मृत मामा का प्रतीक था।

डोली के आगे-आगे दीप उठा कर धीवर चला। उसके पीछे-पीछे मेरी मामी की डोली चली। सायंकाल को मेरी मामी की डोली सुजुवां पहुँच गई। भरी आँखों से परिवार के लोगों ने उस का स्वागत किया। मेरे नाना ने अपनी विधवा बहू को थोड़े दिनों बाद अपनी अल्मारी की चाबियाँ सौंपते हुए कहा - घर के आभूषण और पैसे इसी अल्मारी में हैं। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। शाहुकारी मेरा पेशा है। आज से मेरी असामियों को तुम ही देखोगी।

मेरे मामी ने नाना का काम तो सम्भाल लिया किन्तु परिवार की अन्य महिलाएँ मामी से द्वेष करने लगीं। उस पर कई आरोप लगाये जाने लगे। एक आरोप यह था कि वह उपन्यास पढ़ती रहती है और दूसरा आरोप यह था कि वह मेरी नानी के बहन के लड़के से छुप-छुप कर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मिलती है। मेरी नानी की बहन का लड़का 18 वर्ष का था और मामी सोलह वर्ष की थी। एक दिन मेरी मामी तालाब में पानी भरने गई तो गाँव की महिलाओं ने उस पर लगे लांछनों पर चर्चा की तो वह रोने लगी और उसी रात मामी अचेत हुई और मर गई।

मेरी मामी के मरने के बाद मेरे ननिहाल में कई उत्पात शुरू हो गए। मेरी बड़ी मामी चार बेटियाँ और एक बेटे को छोड़ कर इस संसार से चल बसी। मेरी मंझली मामी भी छोटी-आयु में ही विधवा हो गई। मेरे नाना ने घर चलाने के लिए बड़े मामा का दूसरा विवाह तो करवाया किन्तु फिर भी उत्पात कम न हुए। मेरी नई मामी के चार बेटे और तीन बेटियाँ थीं।

मेरी छोटी मामी के बड़े बेटे देवराज को मृत मामी की प्रेतात्मा ने जब पकड़ा तो वह मानसिक सन्तुलन खोने लगा। घर वालों ने उस की चिकित्सा मैंटल अस्पताल में भी करवाई किन्तु वह ठीक नहीं हुआ। अन्ततः वे तांत्रिकों की शरण में गए तो उसने मृत मामी की प्रेत छाया को देवराज की बीमारी का कारण बताया। अन्ततः तांत्रिकों के आदेश पर मेरे ननिहाल में परा शक्ति की शाँति के लिए कई अनुष्ठान किए गए। घर में मृत मामी के नाम की एक देहरी बनवाई गई जिस में मामी की मूर्ति (मौहरा) स्थापित की गई। इस अनुष्ठान के बाद मेरे ननिहाल में समृद्धि का दौर आया। मेरे ममेर भाईयों का व्यवसाय खूब फल फूला।

मेरे ननिहाल के लोग अब मेरी मृत मामी के देहरे में स्थापित मूर्ति की पूजा करते हैं। मामी की प्रेतात्मा को प्रसन्न रखने के लिए यज्ञों का आयोजन भी करते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

चतुर्थ अध्याय

पितर

परावैज्ञानिकों के अनुसार प्राणी के दो भेद हैं :

1. शरीर धारी प्राणी
2. अशरीर धारी प्राणी

शरीर धारी प्राणी के चार भेद हैं :

1. उद्भिज : यथा पेड़-पौधे आदि।
2. स्वेदज : कीट, पतंग, मक्खी, जूं आदि
3. अंडज : पक्षी तथा जल जीव-मच्छलियाँ आदि।
4. जराभुज : मनुष्य पशु आदि।

इन सबका जन्म होता है और इन का अन्त मृत्यु है। इन की आयु लम्बी भी हो सकती है, यथा वृक्ष आदि। इनकी आयु अल्प भी हो सकती है तथा कीट, जूं आदि।

अशरीरी प्राणी

इनके भी कई रूप हैं, यथा :

1. पितर
2. मुक्त
3. देव
4. प्रजापति

पितर

पितर वे हैं जो पिछला शरीर त्याग चुके हैं किन्तु वे अगला शरीर प्राप्त नहीं कर सके हैं। वे अपना स्तर मनुष्यों जैसा ही अनुभव करते हैं। शब्द रूप, रस, गंध, स्पर्श की तन्मात्राएँ उन के दिव्य शरीरों में विद्मान रहती हैं।

मुक्त

जो लोभ, मोह, राग-द्वेष, वासना, तृष्णा के बन्धन से मुक्त हैं, इन्हें मुक्त-आत्माएँ कहा जाता है। ये आत्माएँ किसी के भी विषय में

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

न तो बुरा सोचती हैं और न ही किसी को किसी प्रकार का कष्ट ही देती हैं। ये अपने शत्रुओं को भी क्षमा कर देती हैं। इन मुक्त आत्माओं का स्तर बहुत ही ऊँचा होता है।

देव

ये वे उच्च स्तर की देव-आत्माएँ हैं जो सृष्टि सन्तुलन बनाये रखने का विशिष्ट उतरदायित्व निभाती हैं। देवताओं की भी कई कोटियाँ होती हैं। इन में एक कोटि लोक देवी-देवताओं की भी हैं। लोक देवी-देवता कभी इसी धरती के शरीर धारी प्राणी रहे हैं जिन्होंने बाद में उच्च आदर्शों के कारण देव-पद प्राप्त किया है।

प्रजापति

समस्त ब्रह्माण्ड की जो अशरीरी-आत्माएँ सन्तुलन बनाये रखती हैं, उन्हें शास्त्रीय भाषा में प्रजापति कहते हैं। उपरोक्त सभी अशरीरी-आत्माएँ सूक्ष्म रूप में रहती हैं। इन को शरीरी आँखों से तो नहीं देखा जा सकता किन्तु इनका अनुभव किया जा सकता है। इन आत्माओं का सृष्टि संचालन में महत्वपूर्ण योगदान हैं। जितनी भी प्राकृतिक अथवा अप्राकृतिक गतिविधियाँ हैं उन का संचालन करने का दायित्व इन्हीं पर है।

पितर

'मरणोतर जीवन' ग्रंथ में पितर की व्याख्या इन शब्दों में की गई है : उच्च श्रेणी देवता की होती है और निचली श्रेणी प्रेत की होती है। इन दोनों के मध्य पितर योनि होती है। अर्थात् पितर योनि की स्थिति भूत योनि से ऊपर होती है। भूत संसारिक प्राणियों को दुःख, कष्ट और क्लेश प्रदान करते हैं जबकि पितर ऐसे निकृष्ट कार्यों से दूर रहते हैं। उच्च कोटि की पितर आत्माएँ जीवित महा पुरुषों, महा योगियों की भाँति ही उदास होती हैं। उनके लिए अपने पराये जैसा कोई भेदभाव नहीं होता। पराविज्ञान के अनुसार जिन की उर्ध्व मुखी गति होती है वे पितर आत्माएँ मानी जाती हैं। ये आत्माएँ स्वयं तो प्रकाशपूर्ण वातावरण

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

में रहती हैं किन्तु जो इन में श्रद्धा-भाव रखते हैं उनका भी प्रकाशपूर्ण मार्ग प्रशस्त करती हैं। ये आत्माएँ अपने स्वजनों का मार्ग दर्शन भी करती हैं और अनुग्रह-अनुदान भी करती हैं।

इनकी परिधि विस्तृत होती है। ये पात्रता देखती हैं। साधारण मृतात्माएँ केवल सम्बन्धियों और परिचितों तक की सीमित रहती हैं किन्तु पितर आत्माएँ इन से भिन्न हैं। इनका उद्देश्य आत्म-कल्याण के लिए पथ प्रदर्शित करना तथा सत्परामर्श देना होता है। इन की कोई निजी वासना नहीं होती।

पितर देवताओं से छोटे होते हैं। वे छोटे पैमाने पर भूमिका निभाते हैं। उनसे बहुत बड़ी विस्तृत और विशाल भूमिका देवता निभाते हैं। फिर भी जो लोग पितरों की पूजा करते हैं, पितरों के प्रति श्रद्धा-भाव रखते हैं पितर उन पर अपार कृपा करते हैं।

विश्व की कई महान विभूतियों पर पितरों की अपार कृपा रही। कहते हैं कि थियोसाफिकल सोसाइटी की संचालक मैडम ब्लैवेटस्की पर पितरों की अपार कृपा थी। सुकरात का भी सहचर देवता डेमन था। श्री मती ब्राउन-लिज्ड को भी एक पितर ने संगीत सिखाया था। महर्षि अरविन्द के विषय में भी कहा जाता है कि उन्हें विवेकानन्द की आत्मा के दर्शन होते थे। वे उन का मार्ग दर्शन करते थे। इसी प्रकार राम कृष्ण परम हँस ने भी अपने प्रियजनों को मरणोपरान्त दर्शन दिए थे।

यह माना गया है कि जिन में आन्तरिक सात्विकता, सौम्यता, मृदुता तथा पितरों के प्रति श्रद्धा-भावना है, पितर भी उन पर अपार कृपा करते हैं। वैसे भी कहा जाता है कि जो प्राणी पितरों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता का भाव रखते हैं, पितर उन पर प्रसन्न होते हैं और उन्हें कई प्रकार के वरदान भी देते हैं किन्तु जो उनके प्रति उपेक्षा का भाव रखता है तो वे तटस्थ रहते हैं। पितरों का सम्मान करना, पितरों का आदर करना, पितरों को स्मरण करना पितरों के प्रति श्रद्धांजलि है।

---

1. संदर्भ : मरणोतर जीवन : तथ्य एवं सत्य, सम्पादक : ब्रह्म वर्चस, प्रकाशक : अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

परा‌विज्ञानी ब्रह्म वर्चस के ग्रंथ 'मरणोतर जीवन' में उल्लिखित है - पितर ऐसी उच्च-आत्माएँ होती हैं जो मरण और जन्म के बीच की अवधि के प्रेत बन कर गुजारती हैं और अपने उच्च स्वभाव संस्कार के कारण दूसरों की यथा सम्भव सहायता करती रहती हैं। इन में मनुष्यों की अपेक्षा शक्ति अधिक होती है। सूक्ष्म जगत से सम्बन्ध होने के कारण उनकी जानकारियाँ भी अधिक होती हैं। उन का जिन से सम्बन्ध हो जाता है उन्हें कई प्रकार की सहायताएँ पहुँचाती हैं। भविष्य ज्ञान होने से वे सम्बद्ध लोगों को सतर्क भी करती हैं तथा कई प्रकार की कठिनाईयों को दूर करने एवं सफलताओं के लिए सहायता करने का भी प्रयत्न करती हैं।

ऐसी दिव्य प्रेतात्माएँ अर्थात् पितर सदाशायी सद्भाव सम्पन्न और सहानुभूति पूर्ण होती हैं वे कुमार्ग गामिता से असन्तुष्ट होती तथा सन्मार्ग पर चलने वालों पर प्रसन्न रहती हैं।

पितर वस्तुत: देवताओं से भिन्न किन्तु सामान्य मनुष्यों से उच्च श्रेणी की श्रेष्ठ आत्माएँ हैं। वे अशरीरी होती हैं, देह धारी से सम्पर्क करने की उनकी अपनी सीमाएँ होती हैं। हर किसी से वे सम्पर्क नहीं कर सकती। कोमलता और निर्भीकता, श्रद्धा और विवेक दोनों का जहाँ उचित सन्तुलन-सामंजस्य हो ऐसी अनुकूल भाव-भूमि ही पितरों के अनुकूल होती है। सर्व साधारण उन की छाया से डरते हैं जबकि डराना उन का उद्देश्य नहीं होता। इस लिए वे सर्व साधारण को अपनी उपस्थिति का आभास नहीं देते। वे उपयुक्त मनोभूमि एवं व्यक्तित्व देखकर ही अपनी उपस्थिति प्रकट करतीं और सत्परामर्श, सहयोग, सहायता तथा सन्मार्ग का दर्शन करती हैं।

प्रेतों पर विदेशों में जिन परा वैज्ञानिकों ने शोध किया है उनमें प्रमुख नाम सी.डब्ल्यू. लेडवीटर का है। उन्होंने इस विषय पर एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है 'बिजिकुल हेल्पर्स।'

इस पुस्तक में लेखक ने विश्व के विभिन्न समुदायों में

---

1. मरणोतर जीवन : तथ्य एवं सत्य पृष्ठ 3.1

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रचलित पितरों सम्बन्धी धारणाओं के विवरण प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया है कि पुरानी यूनानी एवं रोमन सभ्यताओं में आस्थाएँ जहाँ धूमिल, अस्पष्ट धारणाओं के रूप में विद्यमान हैं वहीं ईजिप्ट, मिश्र तथा चीन की सांस्कृतिक आस्थाओं में पितरों से सम्बन्धित विस्तृत कथाओं तथा कर्मकाण्डों की विद्यमानता है। ईजिप्ट-सभ्यता के धर्मग्रंथों का सार-संदर्भ 'द बुक आफ डेड' नामक पुस्तक में संग्रहीत है। उस में पितरों की गतिविधियों, उनके द्वारा दी जाने वाली सहायताओं के सैंकड़ों मामले विस्तार से दिए गए हैं। किन्तु पितरों की गतिविधियों का निरूपण करने वाले नियम तथा प्रक्रियाएँ स्पष्ट रूप से नहीं दी गई हैं।

लेडबीटर ने लिखा है कि हिन्दुओं में श्राद्ध की जो प्रक्रिया प्रतिष्ठित है, तथा उनसे सम्बन्धित जो विवरण हैं, वे सर्वाधिक प्रामाणित एवं वैज्ञानिक हैं किन्तु ये भी मात्र कर्म काण्डों के रूप में अवशिष्ट हैं और परम्परागत रीति-रिवाज बन कर रह गए हैं। उनके पीछे सन्निहित तत्वज्ञान को अधिकांश हिन्दू भूल चुके हैं। इस लिए न तो वे स्वयं ही उस प्रक्रिया द्वारा पितरों से समुचित और पर्याप्त लाभ प्राप्त कर पाते हैं, नहीं पितरों एवं स्वर्गीय आत्माओं को ही अपना श्रद्धा-भावना का उचित लाभ पहुँचा पाते हैं।

लेडबीटर ने स्पष्ट किया है कि इन अशरीरी आत्माओं से सम्पर्क का मूल आधार संकल्प एवं विचार ही हैं। जड़ वस्तुओं और निष्प्राण कर्म-काण्डों के माध्यम से पितरों से आदान-प्रदान क्रम नहीं चल सकता। कर्म कांड की प्रक्रियाएँ आवश्यक तो हैं किन्तु वे उपकरण हैं। बिना ज्ञान के उपकरणों का उचित प्रयोग और सही परिणामों की प्राप्ति असम्भव है।

अत: आवश्यकता पितरों की सता के सही स्वरूप को समझने और उनसे सम्पर्क की पात्रता स्वयं में विकसित करने की है। वैसा हो सके, तो उनसे देवस्तर का सहयोग प्राप्त कर जीवन को अधिक समृद्ध-सार्थक एवं सफल बनाया जा सकता है।

परा वैज्ञानिकों के अनुसार पितरों के अनेक वर्ग हैं। देवताओं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

की तरह उन के क्रिया-कलापों का क्षेत्र भी भिन्न-भिन्न है। पितरों का काम है - मार्ग दर्शन करना, गूढ़ संकेत देना, दिव्य प्रेरणाएँ प्रदान करना, आकास्मिक सहायता प्रदान करना। जिन पर पितरों की कृपा होती है वे विपति में त्राण पाते हैं, सन्मार्ग पर अग्रसर होते हैं, सामाजिक प्रगति में बढ़ चढ़ कर भाग लेते हैं, दूसरों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे मानवीयता के क्षेत्र में अग्रसर रहते हैं।

पितर सूक्ष्म शक्ति के रूप में विद्यमान रहते हैं। वे अनीति, अत्याचार और अन्याय का प्रतिकार करते हैं। आपदा ग्रस्त समाज कई बार उनके चमत्कारी क्रिया-कलापों से सुरक्षित रहता है। कई बार वे संकट ग्रस्त लोगों के लिए दैवी वरदान सिद्ध होते हैं। अत: पितरों के प्रति श्रद्धा-भाव रखने से व्यक्ति का उत्कर्ष ही होता है। श्रेष्ठ पितर सचमुच श्रद्धा-भाजन हैं।

योग द्वारा सूक्ष्म शरीर के अदृश्य ज्ञान को स्थूल रूप में लाने की विद्या किसी समय भारत वर्ष में बहुत अधिक प्रचलित थीं। लोग पितरों से जीवित मनुष्यों की तरह सम्बन्ध स्थापित कर लेते थे। अब भी उस विद्या के जानकर छिटपुट योगी हैं अवश्य, पर उनका दृष्टिकोण भी नितान्त स्वार्थपूर्ण और व्यवसायिक है। संसार के कल्याण अथवा एक नये विज्ञान की खोज का भाव इसमें नहीं पाया जाता। यह विद्या धीरे-धीरे पश्चिम की ओर जा रही है। पिछले 100 वर्षों में वहाँ इस सम्बन्ध में विस्तृत खोजे हुई हैं। बड़े-बड़े पदार्थ वेताओं ने यह माना है कि मृत्यु के बाद चेतना दूसरों कोषों में बना रहता है।

प्रोफेसर क्रुक्स, ब्रन्टन और सर ओलिवर लाज ने इन विषयों पर बहुत अधिक लिखा है। ये लोग इस स्तर के नहीं थे जिन पर गप्प बाजी का आरोप लगाया जा सके। भारत में वैसे ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है जो यह दावा करते हैं कि वे प्रेतात्माओं के सम्पर्क में हैं। वे सूक्ष्म आत्माओं को बुला सकते हैं और उन से बातें भी करवा सकते हैं। देश में ऐसे कई केन्द्र भी हैं जो सूक्ष्म आत्माओं से सम्पर्क करवाते

संदर्भ : मरणोतर जीवन : तथ्य एवं सत्य 2:2

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

हैं। डुग्गर में लेखक ने एक ऐसे व्यक्ति से सम्पर्क किया था जिसके विषय में प्रसिद्ध था कि वह प्रेतात्माओं को बुला सकता है। उस का नाम कृष्ण ज्योतिषी था। वह जम्मू में बख्शी नगर में रहता था। बाद में उस की ख्याति इतनी बड़ी कि उसने देश-भर में अपनी विद्या का प्रचार करके अपार धन कमाया। भारत की प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर भी उनके सम्पर्क में रहीं।

भारत में प्रसिद्धि प्राप्त करने के पश्चात् वे विदेश यात्रा पर चले गए। वहाँ भी उन्होंने अपनी विद्या का प्रदर्शन किया। लेखक ने भी उनकी विद्या का प्रदर्शन देखा। किन्तु वे अब इस संसार में नहीं हैं। उनके शिष्य उन का व्यवसाय चला रहे हैं।

पितर सम्पर्क

विदेशों में पितर-सम्पर्क से सम्बन्धित सराहनीय कार्य हुआ है। अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक शेरवुड ने अपनी पुस्तक 'यू विल सर वाइव आफ्टर डेथ' में ऐसे कई प्रसंगों तथा व्यक्तियों का विवरण दिया है जो पितर-आत्माओं के सम्पर्क में थे। उनमें एक रेवरेन्ड आर्थर फोर्ड भी थे जो पितरों का आह्वान कर लेते थे। उनके विषय में एक पत्रकार श्रीमती रूथ मान्ट गुमरी ने सुना तो वे भी उनसे मिलीं। उन्होंने फोर्ड से अनुरोध किया कि वे उन्हें उनके स्वर्गीय पिता से मिलायें। फोर्ड ने मान्ट गुमरी की प्रेतात्मा से सम्पर्क किया और स्वयं माध्यम बन उन की बात प्रेतात्मा से करवाई। इससे वे फोर्ड की परा-विद्या से बहुत प्रभावित हुई। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा - यदि मृतात्माओं द्वारा बताई हुई भूत व वर्तमान की बातें सच होती हैं तो वे मृत्यु के अनन्तर अपने अस्तित्व के बारे में भी जो कुछ कहते हैं, उसे सत्य मानने से इनकार करना दुराग्रह ही होगा। जिन विदेशी विद्वानों ने मृतात्माओं पर शोध किया है उन में ब्रिटेन के माने हुए वैज्ञानिक सर ओलीवर लाज, स्वीडन के शरीर शास्त्री आर्थ शास्त्र, खगोल शास्त्र के माने हुए विद्वान एमेनुअल स्वेडन वर्ग, मनोविज्ञान शास्त्र के जन्म दाता फेडरिक मायर्स आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

---

1. संदर्भ - मरणोतर जीवन तथ्य एवं सत्य

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

भारत में इस क्षेत्र में अहमद नगर के श्री वी.डी. ऋषि तथा उनकी धर्मपत्नी का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

भारत के जिन प्रसिद्ध विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि वे पितर आत्माओं के सम्पर्क में थे उनमें प्रसिद्ध नाम हैं : राजनेता एवं भारती-भवन मुम्बई के संचालक स्वर्गीय कन्हैया लाल माणिक लाल मुन्शी, रिव्यू आफ रिव्यूज के सम्पादक डब्ल्यू.टी. स्टैड, इलाहबाद से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक के सम्पादक श्री सी.वी. चिन्तामणि, प्रसिद्ध पत्रकार एवं शिक्षा शास्त्री पंडित नारायण चतुर्वेदी के पिता पंडित द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी आदि। इन लोगों ने स्वयं स्वीकार किया है कि वे पितरों के सम्पर्क में थे और उनसे मार्ग दर्शन प्राप्त करते थे।

पितर-श्राद्ध

श्रद्धा से श्राद्ध शब्द बना है। जो कार्य श्रद्धा-पूर्वक किया जाता है, उसे श्राद्ध कहते हैं। विद्वानों तथा ऋषियों का कथन है कि श्राद्ध से श्रद्धा जीवित रहती है। श्रद्धा को प्रकट करने का जो प्रदर्शन किया जाता है वह श्राद्ध कहलाता है। विश्व में सम्भवतः भारतीय संस्कृति में ही पितरों के प्रति श्राद्ध करने की परम्परा है। इस परम्परा की प्रशंसा विश्व के सभी परा विज्ञानियों ने की है। श्रद्धा हिन्दू धर्म का मेरूदण्ड माना जाता है। हिन्दू धर्म के कर्म-काण्डों में आधे से अधिक श्रद्धा भाव भरा हुआ है। हिन्दू धर्म में प्रकृति के अनेक पदार्थों की पूजा का विधान है।

मरे हुए व्यक्तियों का श्राद्ध करना हिन्दू धर्म की एक अमिट परम्परा है। यदि हम अपने पितरों को विशेष पर्व पर स्मरण करते हैं तो यह एक उत्कृष्ट कृत्य है। हम अपने महापुरुषों, ऐतिहासिक विभूतियों, ऋषि-मुनियों तथा साहित्यकारों की जयन्तियाँ और निर्वाण-दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं, हम उन्हें याद करते हैं। उन्हें श्रद्धा, श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते हैं तो इससे हमारा गौरव बढ़ता है। इसी प्रकार यदि हम अपने माता-पिता, दादा-दादी की मृत्यु तिथि पर उन के आदर में भोज का आयोजन करते हैं, उन्हें स्मरण करते हैं, उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं तो यह भी हमारे लिए गौरव की बात है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

हम भला उन्हें कैसे भूल कसते हैं जिन्होंने हमें जन्म दिया, हमें पाला-पोसा, हमें पढ़ाया लिखाया। हमारे सुख के लिए जिन्होंने अनेक प्रकार की यातनाएँ प्रसन्नतापूर्व सहन कीं। यदि हम उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं, उनका आदर और सम्मान करते हैं तो इस में बुराई भी क्या है? किन्तु अपने पितरों का श्राद्ध करने का फल केवल उन्हीं लोगों को मिलता है जिन्होंने अपने माता-पिता, दादा-दादी की जीवित काल में सेवा की हो। उन को श्राद्ध करने का फल नहीं मिलता जो माता-पिता को उनके जीवन-काल में तो क्लेश पहुँचाते हैं और उनके देहावसान के बाद लोगों को दिखाने के लिए और यश लुटने के लिए उन का श्राद्ध करते हैं। ऐसे लोगों को पितरों का आर्शीवाद नहीं मिलता।

सन 2003 में मैं अपनी पत्नी को लेकर गुजरात यात्रा पर गया। वहाँ मेरा बेटा नलिनाक्ष अपने परिवार के साथ अहमदाबाद में रहता है। वह हमें घुमाने ले गया। हम घूमते फिरते गुजरात के प्राचीन नगर पाटण के दुर्ग में स्थित देवी मंदिर के दर्शन करने गए। दर्शन करने के पश्चात् सोपान उतर कर जब मैं नीचे उतरा तो मैंने देखा कि मंदिर के प्रांगण में एक सिद्ध पुरुष बैठा था और लोग उससे प्रश्न पूछ रहे थे। मैं भी सिद्ध पुरुष के निकट जा कर खड़ा हो गया। मैंने भी सिद्ध पुरुष से प्रश्न किया - 'मेरे भीतर सबसे बड़ी त्रुटि क्या है? उसने मेरी ओर देखते हुए कहा - तुम अपने दादा-दादी का श्राद्ध नहीं करते हो? सिद्ध पुरुष के वचन सत्य थे। मैं अपने पिता और माता का वार्षिक श्राद्ध तो करता था किन्तु दादा-दादी का श्राद्ध नहीं करता था। मैं भी इसे व्यर्थ की क्रिया और अन्ध विश्वास मानता था। मेरा घर पाटण से अनुमानतः पन्द्रह सौ किलोमीटर दूर है। यह बात सिद्ध पुरुष को कैसे ज्ञात हुई? यह मैं नहीं जानता। गुजरात से लौटने के बाद मैंने दादा-दादी का श्राद्ध श्रद्धापूर्वक करना प्रारम्भ किया तो तुझे आशातीत वरदान मिले। उन वरदानों का सुख मैं आज भी भोग रहा हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि श्राद्ध के नाम पर ही सही मैं अपने दादा-दादी को स्मरण तो कर लेता हूँ।

---

1. कल्याण, देवता : अंक वर्ष 64 प्रकाश गीता प्रैस गोरखपुर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पंचम अध्याय

पुर्न जन्म

मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा कहाँ जाती है? इस विषय पर भिन्न-भिन्न धर्मों, मतों और विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार जीवात्मा को यमदूत यम लोक ले जाते हैं। वहाँ यमराज उनके कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक में भेजता है। वहाँ वे अपनी अवधि पूर्ण हो जाने के बाद पुर्न जन्म लेते हैं और यह क्रम चलता रहता है। इसी क्रम को आवागमन का चक्र भी कहते हैं। मनुष्य मरता है, कर्मानुसार स्वर्ग-नरक में रहता है और पुनः सृष्टि में जन्म लेता है। किन्तु कई धर्म इस आवागमन के सिद्धान्त को नहीं मानते। उनके अनुसार जिस स्थूल शरीर को कब्र में दफना दिया जाता है उस का सूक्ष्म शरीर भी उसी कब्र में कयामत तक बना रहता है।

कई परा वैज्ञानिकों का मत है पूर्व जन्म की अवधि में दस या बारह वर्ष का अन्तर होता है किन्तु कई बार ऐसा भी देखा गया है कि पुर्न-जन्म एक या दो वर्ष की भीतर भी हो जाता है। कई बार ऐसा भी होता है कि पुर्न-जन्म में कई युग बीत जाते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि जो जीवात्माएँ जिस घर को मृत्यु के बाद छोड़ती हैं, वे पुनः उसी घर में जन्म लेती हैं। ऐसा इस लिए होता है कि उन जीवात्माओं को उस घर के प्राणियों तथा घर से मोह होता है।

परा वैज्ञानिक भी यह स्वीकार करते हैं कि मरणोतर जीवन के दो ही प्रमाण हैं :

1. पुर्न-जन्म
2. प्रेतात्माएँ

परा-विज्ञान इन दोनों को सिद्धान्त रूप से मानता है। जीवात्माओं का पुर्न-जन्म भी होता है और कई जीवात्माएँ प्रेत-योनि में भी रहती हैं। पुर्न-जन्म सम्बन्धी कई प्रसंग मैंने डुग्गर में भी सुने किन्तु मैं उन पर शोध इसलिए नहीं कर सका कि तब इस विषय में मेरा ज्ञान अपरिपक्व

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

था। जिन दिनों (सन 1988 से 1990) मैं सरकारी कॉलेज आफ एजुकेशन में कार्यरत था तब मैंने पुस्तकालय मे रखी 'परा-मनोविज्ञान' विषय पर लिखित कई पुस्तकें पढ़ी तो मेरी भी अभिरूचि इस विषय की ओर बढ़ी।

उन दिनों मैंने तालाब तिलो जम्मू के एक बालक द्वारा बतायी पुर्न-जन्म से सम्बन्धित कई प्रसंग सुने तो मैं उनसे मिलने गया। वह बालक डोगरी के प्रख्यात साहित्यकार प्रो. रामनाथ शास्त्री जी का रिश्तेदार था। जब मैं उससे मिला तो वह युवा था। उसने मुझे बताया कि पाँच-वर्ष की आयु तक उसे पुर्न-जन्म की घटनाएँ याद आने लगी तो उसने अपने माता-पिता को उनके विषय में सूचित किया। शोध करने पर वे सभी घटनाएँ सही पाई गईं। किन्तु जब मैं छह वर्ष का हुआ तो मैं एक-एक करके घटनाएँ भूल गया। अब तो मुझे ऐसा लगता है कि मुझे जो आभास हुए थे वे स्वप्न समान थे। वे धीरे-धीरे मिटते गए।

परा-मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जब शिशु सोता है या खेलता है तो वह अपने मुख पर कई प्रकार की मुद्राएँ बनाता है जिन में हास, क्रोध और उतेजना के भाव झलकते हैं। ये भाव शिशु में पूर्व-जन्म की घटनाओं की स्मृति के कारण उभरते और क्षीण होते हैं।

परा-मनोविज्ञान पर केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रशंसनीय शोध कार्य हुआ है। इस विषय पर सर विलियम बेरेट की पुस्तक 'द बुक आफ लिविंग डेड, डा. राबर्ट कूकल की पुस्तक 'टकनीक्स ऑफ एल्ट्रल प्रोजेक्शन, एन्थोनी बेगिया की पुस्तक 'मोर एवाउट लाइफ इन दी वर्ल्ड' अनसीन, डा. जेम्स पाइक की पुस्तक 'दी अदर साइड' तथा डब्ल्यू.टी. स्टेड की पुस्तक 'आफ्टर डेथ' पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। विश्व प्रसिद्ध परा वैज्ञानिकों में बैल्क मोरे, सर कैनेडरिंग, सर, रेमंड-मूरी और सुसांन के नाम लिए जा सकते हैं। ब्रिटेन के केनक्टीकट विश्व विद्यालय ने भी इस विषय पर शोध कार्य करवाया है।

'पुर्न जन्म' विषय पर विदेशी परा वैज्ञानिकों ने भी सराहनीय

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शोध कार्य किए हैं। डा. स्टीवेसन ने विश्व भर के छह सौ लोगों के साक्षात्कार लिए जिन्होंने माना कि उन्हें पूर्व जन्म की घटनाएँ याद हैं। इन में तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चे ही थे।

परा मनोवैज्ञानिकों ने अपने शोध में यह निष्कर्ष निकाला कि शिशु के स्मृति पटल में पहुँच कर जब कभी कोई 'प्रोटा प्लाज्म' जागृत हो उठता है तो उससे सम्बन्धित पूर्वजन्म की घटनाएँ याद आ जाती हैं।

प्रोटोप्लाज्म जीन्स में समाहित रहते हैं और नए शिशु के साथ पुनः जन्म लेते हैं। परा वैज्ञानिकों का मत है कि पुनः जन्म प्रोटोप्लाज्म का होता है, आत्मा का नहीं।

प्रायः यह देखा गया है कि कई बच्चे जन्म से ही मेधावी दिखाई देते हैं। इन की सफलता और उपलब्धियों का एक कारण जन्मजात प्रतिभा को भी माना जाता है।

यह मान लिया गया है कि मरणोपरान्त भी मृतक ने जो ज्ञान अर्जित किया होता है वह मृत्यु के बाद बना रहता है। जब मृतक का पुनः जन्म होता है तो यह ज्ञान उसे जन्म से ही उपलब्ध हो जाता है। इसी कारण वह अधिक प्रतिभावान लगता है।

जन्म जात मेधावी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के संस्कार या उपार्जन का इसी कारण लाभ उठाते हैं। पूर्व जन्म और (मरणोतर जीवन) पर कई विदेशी और भारतीय विद्वानों ने प्रशंसनीय शोध कार्य किया है। इन में इंडियन पैरा साइकिक रिसर्च इन्स्टीच्यूट का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार परा-विद्या शोध संस्था-बरेली ने भी इस क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। डा. एच. एन. बनर्जी तथा जमुना प्रसाद (अहमदाबाद) के निर्देशन में भारत, अमेरिका, ब्रिटेन तथा जर्मनी में पूर्व जन्म की कई घटनाओं का अध्ययन किया है।

लेखक जिन दिनों स्कूल में अध्यापक था उसने कई नास्तिक दर्शनों के अध्ययन से स्वयं ही यह निष्कर्ष निकाला कि पुनः जन्म का सिद्धान्त काल्पनिक है और इसकी परिकल्पना मनुष्य को दुष्कर्मों से

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बचाये रखने के उद्देश्य से की गई है। स्वर्ग-नरक की परिकल्पना का मूल-भाव भी मनुष्य को पैशाचिक प्रवृतियों से बचाना और सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना है।

लेखक एक बार अपने कुछ मित्रों के साथ एक पंथ विशेष के संत के प्रवचन सुनने एक सभा में गया। संत ने पुर्न-जन्म और पुर्नागमन पर संभाषण किया तो लेखक ने पीठासीन संत से प्रश्न किया कि आपके पंथ के अनुसार व्यक्ति जन्म लेता है फिर मरता है फिर कर्म फल भोगता है और पुन: जन्म लेता है और यह क्रम चलता ही रहता है। लेखक ने पढ़ा है कि मुगल-सम्राट अकबर के शासन काल में भारत की जनसंख्या केवल सोलह करोड़ थी जिस का अर्थ हुआ कि उस समय भारत की धरती पर सोलह करोड़ आत्माएँ अवतरित थीं।

अंग्रेजों के शासन काल में सन 1921 में देश की जनसंख्या 23 करोड़ के लगभग थी और सन 1947 में जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ा तो देश की जनसंख्या चालीस करोड़ थीं। किन्तु अब केवल भारत में ही इन जीवात्माओं की संख्या एक अरब से अधिक है। कृपया आप यह बतलाएँ कि इतनी अधिक आत्माएँ इस धरती में कहा से आई। जीवात्माओं की संख्या में अतिवृद्धि का मूल कारण क्या है? अधिक सन्तोन्पति या अधिक आत्माओं का अवतरण?

पठीसीन संत उस समय कोई संतोष जनक उतर तो नहीं दे सके किन्तु लेखक ने यह निष्कर्ष निकाला कि जो जीवधारी शरीर छोड़ते हैं, उन सब का पुन: जन्म नहीं होता है। पुन: जन्म होता अवश्य है किन्तु किसी-किसी का ही होता है। पुन: जन्म पर मेरे पिता जी का भी पूर्ण विश्वास था। कई परा वैज्ञानिकों के साथ उनका उठना बैठना भी था। मेरे विषय में भी वे मेरी माता से कहते – 'यह देव लोक से आया है।' इस का कारण मैं यह मानता था कि मेरा भोजन सात्विक था और मैं भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए महत्वाकांक्षी नहीं था।

मेरे छोटे बेटे के विषय में मेरे पिता जी ने एक दिन मुझे बताया कि तालाब-तिलो में स्थित बाबा सहजनाथ के महन्त के अनुसार पूर्व

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जन्म में वह एक छोटा सा सामन्त था। उस का महल हमारे घर के पास ही था। उसके पास पर्याप्त सम्पति थी। किन्तु वह एक युद्ध में मारा गया। उस का पुर्न जन्म हमारे ही घर में हुआ।

मैंने अपने छोटे बेटे पर दृष्टि रखी। जैसे ही वह युवा हुआ उस की रूचि तामसिक भोजन के प्रति बढ़ी जबकि हमारे घर में माँस-भक्षण कोई भी नहीं करता था। मेरी अभिरूचि विद्यार्थी जीवन से ही बौद्ध ध र्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध और बौद्ध साहित्य में भी थी। जातक कथाओं के अध्ययन से मुझे लगा कि महात्मा बुद्ध आत्मा के अस्तित्व में चाहे विश्वास नहीं करते थे किन्तु पुर्न जन्म में उन का अटूट विश्वास था। मुझे लगता था कि महात्मा बुद्ध ने जो कहा है वह तथ्यों पर आधारित है। उसे झूठलाया नहीं जा सकता।

मैंने विदेशी विद्वानों के भी एक दर्जन से अधिक पराविज्ञान से सम्बन्धित जो ग्रंथ पढ़े वे भी पुर्न जन्म की पुष्टि करते थे। गीता प्रैस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण का पुर्नजन्म अंक भी मेरे लिए विचारनीय विषय था। मेरी भी इस विषय में अभिरूचि बढ़ी। मैं जिस भी परा विज्ञानी के पास जाता उससे यही प्रश्न पूछता - बताइए मैं पूर्व जन्म में क्या था?

मेरी इस जिज्ञासा को जम्मू के प्रसिद्ध परा विज्ञानी विश्व बिहारी शास्त्री ने पहली बार यह बता कर शाँत किया कि पूर्व जन्म में मैं एक पवर्तीय उपनगर में रहता था। वहाँ मेरी एक प्रेमिका भी थी जो युवावस्था में मर गई। जब उसने पुनः जन्म लिया तो मेरी उससे भेंट तब हुई जब वह पूर्ण यौवनावस्था में थी। विश्व बिहारी के इस कथन ने मुझे चौंका दिया।

लेखक को जम्मू-कश्मीर के अन्तर्गत ऊधमपुर जनपद के अन्तर्गत चढ़ेयाई गाँव के परावैज्ञानिक अरविन्द पराशर ने सन 1995 में बताया कि पूर्व जन्म में मैं जिस विश्व विद्यालय में शोधार्थी था वहीं मेरे साथ एक लड़की भी शोधकार्य में रत थी। हम दोनों के शोध के विषय लगभग मिलते-जुलते थे। मैं अपने शोध-कार्य में लड़की की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सहायता लेता था और वह लड़की मुझ से सहायता लेती थी। हम दोनों शोध यात्राएँ इक्ट्ठे करते थे, अतः हम दोनों एक दूसरे के अति निकट थे। मेरा शोध कार्य समयावधि में ही पूर्ण हो गया किन्तु उस लड़की का शोध अभी बीच में ही लटका था।

शोध कार्य पूरा करके मैं घर आने से पहले उस लड़की से मिलने गया। उस लड़की ने मुझ से वचन लिया कि मैं उसे मिलने फिर भी संस्थान में आता जाता रहूँगा। किन्तु मैं घर जाते ही व्यस्त हो गया। मुझे एक कॉलेज में नौकरी मिल गई। मैं अध्यापन कार्य में व्यस्त हो गया। मैंने विवाह भी कर लिया। मुझे लड़की के सन्देश मिलते रहे फिर भी मैं उससे मिलने नहीं गया। तीस वर्ष की आयु में वह लड़की बीमार हुई और मर गई। मरने से पूर्व उसकी इच्छा मुझ से मिलने की थी किन्तु उस की इच्छा पूर्ण नहीं हुई। परा वैज्ञानिक अरविन्द पराशर ने मुझे बताया कि मरने के पश्चात् मेरा जन्म एक पवर्तीय गाँव में हुआ। इस गाँव के निकट एक उप नदी प्रवाहमान है।

लड़की का जन्म भी एक उपनगर के निकट एक पहाड़ी कें दामन में हुआ। उस उपनगर के साथ भी एक नदी प्रवाहमान है। परा वैज्ञानिक के अनुसार जब वह लड़की तीस वर्ष की हुई तो एक संस्थान में मेरी उससे भेंट हुई। पूर्व जन्म ने एक बार पुनः आप दोनों को मिलाया। आप दोनों एक दूसरे के अति निकट आ गए। आप कई दिनों तक इक्ट्ठे घूमे-फिरे। लड़की ने आप को शोध की ओर प्रवृत किया और आप शोध कार्य में जुट गए। आपने जो भी साहित्यिक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं वे उसी लड़की की सद्प्रेरणा का परिणाम हैं।

मैंने परा वैज्ञानिक की बात बड़े ध्यान से सुनीं। वे ब्रह्म-चारी थे, सुशिक्षित थे तथा अपनी विद्या में निष्णात् थे किन्तु वे व्यवसायिक नहीं थे। किसी से कुछ भी ग्रहण नहीं करते थे। वे तो अपने पैसों से दूसरों की सेवा करते थे।

मैंने उनकी बातों पर मनन किया। हुआ ऐसा कि सन 1979 ई. में कालेज से दूसरे राज्य के एक शिक्षा संस्थान में विशेष प्रशिक्षण लेने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

गया। मैं उन दिनों डिग्री कॉलेज कठुआ में कार्यरत था। मैं प्राय:काल बस पर बैठा और सांय चार बजे दूसरे राज्य के शिक्षा संस्थान में पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही मैं निदेशक के कक्ष में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए गया। उस कक्ष में निदेशक महोदय तो नहीं थे। कुछ अधिकारी थे और उन्हीं अधिकारियों के मध्य में एक तीस वर्षीय महिला भी बैठी थीं।

उस महिला को देखते ही मुझे ऐसे लगा कि मैंने तो इन्हें पहले भी देखा है। मैं तो इस से पूर्व परिचित हूँ। फिर भी मैंने उन का परिचय पूछ ही लिया। उन्होंने बताया कि वे एक पर्वतीय राज्य में रहती हैं। उस राज्य की राजधानी में वे एक सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्थान में सेवारत है। वे भी यहाँ अपने संस्थान की ओर से विशेष प्रशिक्षण लेने आई हैं। दो पल का परिचय घनिष्ठ मित्रता में बदल गया।

एक दिन उन्होंने मुझ से पूछा - आप किस विधा में लिखते हैं? प्रत्युतर में मैंने कहा - कविता, कहानी, नाटक, निबंध आदि। किन्तु इनमें किसी भी विधा में मेरी कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं थी। तीन-चार पुस्तकें जो स्कूल के बच्चों के लिए प्रकाशित थीं उन में एक भी मौलिक नहीं थी।

उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि मुझे अपने प्रदेश के लोक साहित्य, लोक संस्कृति, इतिहास और धरोहरों पर शोध कार्य करना चाहिए। वैसे मेरी रूचि इतिहास में बाल्यकाल से ही थी। वे भी इतिहास और हिन्दी साहित्य में स्नातकोतर थीं। हम उस संस्थान में दस दिन तक रहे। हमारे आवास स्थल से संस्थान डेढ़ किलोमीटर दूर था। वे मुझे मेरे कक्ष से बुला लेतीं और फिर हम दोनों पैदल संस्थान की ओर चल पड़ते। मार्ग में वे मुझे अपने प्रदेश के इतिहास और संस्कृति पर हुए शोध-कार्यों की जानकारी देतीं। कुछ अपने विषय में बतातीं कुछ अपने परिवार के विषय में चर्चा भी करतीं। वे मुझे बार-बार कहतीं कि मैं कविताएँ और कहानियाँ लिखना छोड़ दूँ और केवल शोधपरक लेखन में सक्रिय रहूँ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मेरे पूर्व जन्म का शोध-बोध उस लड़की से भेंट करने के पश्चात जागा या मेरी रूचि शोध लेखन में उस लड़की से भेंट करने के बाद जागृत हुई यह मैं पूरी दृढ़ता और निश्चय के साथ नहीं कह सकता। किन्तु जब मैं अपने प्रदेश में वापस लौटा तो मैंने शोध यात्राएँ प्रारम्भ कर दीं।

जिस संस्थान में वह महिला कार्यरत थीं, वह संस्थान भी शोध परक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करता था। प्रादेशिक संस्कृति पर भी उस संस्थान ने कई ग्रंथ प्रकाशित किए थे। वह लड़की अपने संस्थान के ग्रंथ और पत्रिकाएँ मुझे नियमित रूप से प्रेषित करती रही, इससे इस विषय में मेरी रूचि और भी बढ़ी और मैं पूरी तन्मयता के साथ अपने काम में जुट गया।

उस लड़की ने सब से पहले मुझे अपने प्रदेश के लोक-साहित्य पर पुस्तकें भेजीं। मैंने उन पुस्तकों को पढ़ा और उसके बाद अपने प्रदेश के लोक साहित्य पर सात शोध ग्रंथ लिखे जिन में दो मेरे प्रदेश के एक संस्थान द्वार पुरस्कृत भी हुए। उसने मुझे अपने प्रदेश की संस्कृति पर पुस्तकें प्रेषित कीं तो मैंने भी अपने प्रदेश की संस्कृति पर आठ ग्रंथ लिखे जिन में एक ग्रंथ को राज्य स्तर का तथा दो ग्रंथों को राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार मिले। वे मुझे पुस्तकें प्रेषित करती रहीं और मैं अपने प्रदेश के इतिहास धर्म, संस्कृति, दर्शन और धरोहरों पर पुस्तकें लिखता रहा। कई संस्थाओं ने मेरा अभिनन्दन किया तथा कई संस्थानों ने मेरे सम्मान में समारोह आयोजित किए।

सन 2020 में भारत सरकार ने पद्म पुरस्कारों की उद्घोषणा की तो उस सूची में मेरा नाम भी था। मुझें हजारों शुभ चिंतकों की ओर से बधाई संदेश मिले। उन्होंने भी भेजा। डोगरी की प्रख्यात लेखिका चम्पा शर्मा ने मुझे अपने संदेश में कहा कि मेरी उपलब्धियों का श्रेय उस महिला को मिलना चाहिए जिसने मेरी सुप्त शोध प्रतिभा को जागृत करके मुझे शोध क्षेत्र की ओर धकेला। डा. चम्पा शर्मा भी उस संस्थान में भागीदार थीं। जिसमें मेरी भेंट उस महिला से हुई थी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

षष्टम अध्याय
(देव-आत्माएँ) लोक देवता

देव

'देव' शब्द का अर्थ है - देवता, पूजने योग्य मानव, ब्राह्मणों की उपाधि। प्रतिष्ठित व्यक्ति आदि।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार देवता सौशील्य, सौहार्द, कारूण्य, मार्दव, दया, दान, प्रेम, परोपकार, क्षमा, सत्य, शुद्धि, नैर्मल्य आदि अनगणित कल्याण मय गुण गणों के आकार होते हैं। देवता अनन्त दिव्य गुणों के भण्डार होते हैं, उनके विग्रह से मात्र विशुद्ध सत्व ही समाविष्ठ होता है, उनमें देय-त्याज्य, निन्द्य अवाछंनीय एक भी दुर्गण का लेख मात्र स्पर्श नहीं होता। वे अलौकिक व्यक्तित्व से सम्पन्न होते हैं। प्राय: अधिकांश दार्शनिक देवता तत्व को शरीरधारी मानते हैं, केवल एक पूर्व मीमांसक दार्शनिक दृष्टि से देवताओं का शरीर नहीं मानते, किन्तु देवताओं का आकार वे भी मानते हैं। कई आचार्य देवताओं को मन्त्रमयी (शब्दमयी) मानते हैं तो कई उन का रूप सूक्ष्म मानते हैं।

सभी शास्त्रों के अनुसार देवताओं में सभी योग जनित सिद्धियाँ स्वाभाविक रूप में सहजात ही सिद्ध रहती है। इसलिए वे एक होने पर भी यज्ञों एवं उपासना भूमियों पर आहूत किए जाने पर सूक्ष्म रूप में उपस्थित होते हैं। देवताओं को अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त हैं। उनके शरीर में भूख-प्यास आदि वेग नहीं होते। उनमें दूर श्रवण और दर्शन की शक्ति होती है। उनमें मनो जविता (मन के साथ ही शरीर का वहाँ पहुँचना। काम रूपता (इच्छानुसार रूप बना लेना। परकाया प्रवेश (दूसरे के शरीर में प्रवेश करना। स्वच्छन्द वायु (इच्छानुसार जीवित करना) क्रीड़ानुदर्शन (अप्सरों के साथ होने वाली देव क्रीड़ाओं का दर्शन) संकल्प सिद्धि, अप्रतिहत गति, त्रिकाल ज्ञान, अद्वन्द्व (शीत, उष्णण, सुख दु:ख, राग द्वेष आदि द्वन्द्वों के वश में न होना) परचित ज्ञान, प्रतिष्टम्भ (आग, सूर्य, जल, विष आदि की शक्ति को स्तम्भित कर देना) अपराजय, आकाश गमन, कला वैदग्घ्य, अभिज्ञान, अतीन्द्रियार्थ द्रष्टव्य (अतीन्द्रिय- सूक्ष्म

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

वस्तुओं का साक्षात्कार, पिपीलिकादि वार्ताज्ञान (चींटी आदि सभी प्राणियों के शब्दों का श्रवण, लोकान्तर गमन आदि सिद्धियाँ भी सहजात रहती हैं।

देवताओं की पलकें न हिलती हैं और न गिरती हैं। इन के पाँवों से पृथ्वी तल का स्पर्श नहीं होता और उनके शरीर की परछाई भी पृथ्वी पर नहीं पड़ती। देवताओं की सुषुप्ति अवस्थाएँ नहीं होतीं अधिक से अधिक वे योग निन्द्रा में स्थित हो जाते हैं।

देवताओं का निवास स्थान

पृथ्वी : स्थानीय देवताओं का निवास स्थान पृथ्वी है। 99 देवताओं जिन में अग्नि, सोम, नदी, समुन्द्र आदि परिगणित हैं। पृथ्वी में बने रहते हैं।

मध्य स्थानीय देवता : इनको अन्तरिक्ष स्थानीय देवता भी कहते हैं। इन्द्र, वायु, रूद्र आदि 99 मध्य स्थानीय देवता हैं ये आकाश और पृथ्वी के मध्य रहते हैं।

दयु स्थानीय देवता : इन्हें स्वर्ग का देवता भी कहते हैं। सूर्य, विष्णु, चन्द्र, वरूण आदि 99 दयु स्थानीय देवता हैं। इनका निवास आकाश में माना जाता है।

देवताओं की श्रेणियाँ

ये भी तीन प्रकार के देवता है :

1. आजान देवता

   इन के भी दो भेद हैं। (1) ईश्वर कोटि के देवता

   (2) साधारण देवता

2. मर्त्य देवता

   जो मनुष्य श्रेष्ठ काम करके स्वर्ग लोक प्राप्त करते हैं।

3. अधिष्ठातृ देवता

पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु का एक स्वामी होता है जिसे अधिष्ठात् देवता कहते हैं, यथा सूर्य, चन्द्र, मन बुद्धि आदि।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

वैजयन्ती कोष में देवताओं के दो भेद हैं : (1) आजानज (2) कर्म देव/पंडित सच्चिदानन्द दास ने देवताओं के दो भेद किए हैं। (1) नित्य देवता (2) नैमितिक देवता

नित्य देवता : जिन का पद स्थान नित्य रहता है, यथा वसु, रूद्र, इन्द्र, वरूण, आदित्य आदि।

(2) **नैमितिक देवता :** जिन्हें निमित विशेष के कारण देवपद प्राप्त होता है, यथा ग्राम देवता, वास्तुदेवता, वन देवता और गृह देवता। आदि।

उप देवता

जो बल, बुद्धि, तेज, स्फुर्ति और विद्या आदि में देवताओं के समान हों, उन्हें उप देवता माना जाता है। उपदेवताओं के भी दस उपभेद हैं, यथा

(1) विद्याधर (2) अप्सरा (3) यक्ष (4) राक्षस (5) गन्धर्व (6) किन्नर (7) पिशाच (8) गुह्यक (9) सिद्ध (10) भूत

श्री मद्भागवत पुराण में भी सिद्ध, लोकपाल, योगेश्वर, गर्न्धव, विद्या धर, पितर, नाग, मनु, प्रजापति, चारण, यक्ष, किम्पुरुष, वैतालिक तथा किन्नर को देव योनि के रूप में चित्रित किया गया है।

धार्मिक ग्रंथों में गरूड़, हनुमान को भी देवता कोटि में गृहीत किया है।

उप देवता

समाज में लोक मान्यता प्राप्त आँचलिक विशिष्टिताओं से युक्त, शिष्ट देवताओं से निम्न जो मान्य देवता हैं वे उपदेवता हैं। इन के भी कई भेद हैं, यथा

(1) ग्राम देवता, (2) नाग देवता, (3) शहीद देवता, (4) आगत देवता, (5) अधम देवता।

पराविज्ञान की दृष्टि से भूत से पितर उच्चकोटि के होते हैं और पितरों से ऊँचे देव हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

हमारे अध्ययन में केवल वही देवता समाहित हैं जो कभी धरती में जीवित प्राणी थे और मृत्यु के बाद ऊँचे आदर्शों अथवा अद्वितीय उपलब्धियों के कारण उन्हें देवपद प्राप्त हुआ।

वे देव जो लोक देवता अथवा उप देवता वर्ग में परिगणित हैं उन की आत्माएँ अपनी सूक्ष्म देह द्वारा अशरीरी अस्तित्व बनाये रखती हैं। इस के मुख्य दो कारण हैं :

1. किसी वस्तु विशेष से मृतात्मा की आसक्ति

2. किसी अन्यायी के प्रति तीव्र प्रतिशोध की भावना।

परा वैज्ञानिकों ने उन अशरीरी सूक्ष्म आत्माओं को अपने अध्ययन में प्रमुखता दी है जो किसी अन्यायी के प्रति मरणोपरान्त भी तीव्र प्रतिशोध की भावना रखते थे। निर्दोष होते हुए भी सामंतों अथवा सताधारियों ने उन्हें मरवाया या उनकी हत्या की या उन्हें आत्महत्या करने के लिए विवश किया। ऐसी आत्माएँ देहावसान के पश्चात् भी शान्त न रहीं और वे प्रतिशोध की आग में जलती रहीं। वे तब तक शाँत न हुई जब तक उन्होंने अन्यायी को दंडित न किया या उन्हें प्रायश्चित करने के लिए विवश न किया।

अन्यायी पक्ष को अन्ततः उन से क्षमा याचना करनी ही पड़ी और भय, दंड अथवा अभिशाप से बचने के लिए उन्होंने उन आत्माओं को देव रूप में प्रतिष्ठित करके उन्हें समुचित मान-सम्मान दिया।

ऐसा केवल डुग्गर या भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में हुआ। सामंत-काल में कई निर्दोष व्यक्तियों को फांसी पर चढ़ाया गया। उन्हें मृत्यु दंड दिया गया। उन्हें यातनाएँ दी गईं। उन्हें सताया और तड़पाया गया। उन के परिवार को भी बड़ी क्रूरता के साथ दंडित किया गया। ऐसे निर्दोष व्यक्तियों में जापान का भी एक किसान था जिसका नाम था - सोगोरो। सोगोरो जापान के शिमोसा प्रान्त के साकूरा गढ़ में रहता था। उसके सामंत का नाम था कोत्सुके। वह 136 गाँवों का जागीर दार था।

कोत्सुके एक क्रूर सामंत था। वह किसानों पर अति अत्याचार

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

करता था। वह बड़ा ही निर्दयी और क्रूर था। सभी किसान उससे अति दु:खी थे। सोगोरो भी सामंत के आतंक से अति दु:खी था।

48 वर्षीय सोगोरो ने किसानों को संगठित किया और वह उन का नेता बन गया। वह किसानों का प्रतिनिधिमंडल लेकर सामंत से मिलने गया। सामंत बग्गी पर सवार था। सोगोरो ने हिम्मत बटोरी और सामंत को प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया । सामंत ने बड़ी क्रूर दृष्टि से सोगोरो को देखा और प्रार्थना पत्र फाड़ दिया।

इस घटना के बाद शेष लोग घर लौट आए किन्तु सोगोरो नहीं लौटा। भाग्यवश जापान का राजा उस क्षेत्र में अपने किसी पूर्वज की समाधि की पूजा करने वहाँ आया। सोगोरो ने अपना प्रार्थना पत्र जैसे तैसे राजा के हाथ में थमा दिया। तब शिमोसा प्रान्त का सामंत भी वहाँ उपस्थित था। वह राजा का स्वागत करने वहाँ आया था। सामंत ने सोगोरो को प्रार्थना पत्र देते देख लिया था, अत: वह उस पर अति क्रोधित था। उसने क्रोध में आकर अपने सैनिकों को सोगोरो के परिवार का बध करने का आदेश सुना दिया।

सामंत के सैनिक सोगोरो के गाँव में पहुँचे। उन्होंने जन-समूह को इक्ट्ठा किया और उन की उपस्थिति में 48 वर्षीय सोगोरो 38 वर्षीय उसकी पत्नी मिन, 13 वर्षीय पुत्र सौहेयी तथा सात वर्षीय पुत्र किहानी का सिर धड़ से उड़ा दिया। सैनिक उन के शव भूमि में दफना कर सामंत की राजधानी यदो में लौट आए।

इस कांड के बाद सोगोरो के भूत ने सामंत तथा उसके परिवार को यातना देना प्रारम्भ कीं। सामंत भयभीत होकर ओझाओं की शरण में गया। उन्होंने भी कई तांत्रिक क्रियाएँ कीं किन्तु सोगोरो का भूत शांत न हुआ। सामंत ने सोगोरो के वध के पश्चात् किसानों को शांत करने के लिए एक समिति गठित की जिसने किसानों की शिकायतों को सुना। समिति की सिफारिश पर सामंत ने भूमि-सुधार की घोषणा की और भ्रष्ट अधिकारियों को दंडित भी किया किन्तु सोगोरो की अशान्त आत्मा फिर भी शान्त न हुई।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सामंत की पत्नी बीमार पड़ी और मर गई। उसके घर और परिवार में कई उत्पात होने लगे। इससे सामंत घबरा गया। सामंत अपने सम्राट को वार्षिक भेंट देने राजधानी याहोशी में गया। वह सम्राट के दरबार में उपस्थित हुआ और उसने सम्राट को भेंट प्रस्तुत भी की। किन्तु सम्राट के दरबार में बैठने के बाद उसका विवाद सम्राट के एक दरबारी 'साकेयी' से हुआ। साकेयी क्रोध में खड़ा होकर सामंत की ओर बढ़ा। उसने सम्राट की उपस्थित में साकेयी का सिर काट दिया। सिर काटने के बाद वह दरबार छोड़ कर अपने गाँव की ओर भागा।

सम्राट ने सामंत को पकड़ने के लिए पाँच हजार सैनिक भेजे। सेना ने सामंत को उसी की गढ़ी में घेरा और उसका वध उसी प्रकार किया जैसा उसके सैनिकों ने निर्दोष किसान नेता सोगोरो का किया था। इस घटना के बाद किसानों में जागृति आई। वे संगठित हुए। उन्होंने सोगोरो के महा प्रेत को अपना देवता मान लिया।

आज भी जापान में सोगोरो को एक देवता के रूप में इस लिए पूजा जाता है कि उसने अनीति का प्रतिशोध लिया था।

बाबा जितो

जिस प्रकार जापान में सोगोरो कृषकों का प्रतिनिधि बना तो उसे और उसके परिवार को वहाँ के सामंत ने अपने सैनिकों को आदेश देकर उन सब का वध करवाया ठीक वैसे ही जम्मू के राजा अजीब देव (सन 1413-1444) के शासन काल में उसी के एक सामंत वीर सिंह रक्वाल ने बाबा जितो को आत्मघात के लिए विवश किया था। सोगोरो और जितो दोनों लगभग समकालीन थे। दोनों शोषण एवं अन्याय का विरोध करते हुए शहीद हुए थे। दोनों सामंतवाद की शोषणवादी-प्रवृति का शिकार बने थे। एक को मरवाया गया। एक को आत्मघात करने के लिए विवश किया गया। एक जापान का था तो दूसरा भारत का था। इन दोनों के देश चाहे अलग-अलग थे किन्तु इनके सामंतों की सोच एक जैसी थी। जापान के किसान भी सामंतों से पीड़ित थे और भारत के किसान भी सामंतों से पीड़ित थे। जिस प्रकार सोगोरो मरणोपरान्त जापान

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

का महाप्रेत अथवा किसानों का देवता बना वैसे ही बाबा जितो बलिदान के पश्चात उतर-भारत का एक लोक देवता बना।

बाबा जितो का जन्म कटड़ा वैष्णो देवी के निकट धारा कोट के अन्तर्गत अग्हार गाँव में वि. सन 1484 (सन 1428 ई.) में हुआ। उसके मुसेरे भाईयों और चाची जोजां ने उसे इतना तंग किया कि वह अपनी छह वर्षीय बच्ची को साथ लेकर अपने एक मित्र रूल्लो के घर आया।

बाबा जितो जाति का ब्राह्मण था। उसके पिता का नाम रूपो माता का नाम जोजला और पत्नी का नाम माया था। उसकी बेटी का नाम कौड़ी था। बाबा जितो ने अपने मित्र की उपस्थिति में सामंत वीर सिंह रक्वाल से इस शर्त पर फसल उगाने के लिए जमीन ली कि उपज का चौथा भाग वह सामंत को देगा। बाबा जितो ने कड़ा परिश्रम किया। उसने अपने साथ एक सहायक रख लिया। फसल पहली थी। भूमि ने भी सोना उगला। गेहूँ के ढेर लग गए।

बाबा जितो वीर सिंह को बुलाने जम्मू गया। उससे कहा - आओ अपने हिस्से का अनाज ले जाओ। वीर सिंह ने गेहूँ के ढेर देखे तो उस का मन ललचा गया। उसने जितो को स्नान करने भेजा और उसकी अनुपस्थिति में गेहूँ के बोरे भरने लगा। बाबा जितो वापस लौटा तो अपने कड़े परिश्रम की कमाई को लुटते हुए नहीं देख सका। वह खलियान में गेहूँ के ढेर पर खड़े होकर वीर सिंह से बोला - सामंत तुम यह क्या कर रहे हो। तुम अपने हिस्से का गेहूँ उठाओ और मेरे भाग का गेहूँ खलियान में छोड़ दो। किन्तु वीर सिंह नहीं माना तो बाबा जितो ने उसे धर्म की दुहाई देते हुए कहा कि दूसरे का धन हड़पना पाप है। किन्तु वीर सिंह फिर भी न माना।

बाबा जितो के पास एक कटार थी। उसने कटार अपने पेट के साथ छुपा कर रखी थी। उसने अपनी कटार बाहर निकाली और वीर सिंह को सम्बोधित करते हुए कहा - मेरी गेहूँ ही क्यों खाते हो लो मेरा माँस भी खा लो। इस से तो तुम्हें तृप्ति हो जाएगी। ऐसा कहते उसने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कटार अपने पेट में घोंप दी। खून का फव्वारा फूटा। सारा गेहूँ रक्त रंजित हो गया। वीर सिंह इस दृश्य को देख कर भाग गया। बाबा जितो का संस्कार हुआ तो उसकी नन्हीं बेटी भी अपने पिता की चिखा में बैठ कर भस्म हो गई।

मरणोपरान्त बाबा जितो के प्रेत ने वीर सिंह और जम्मू के महलों में उत्पात मचाया तो जम्मू का राजा उसके मंत्री और दरबारी, सामंत वीर सिंह आतंकित हो उठे। उन्होंने बाबा का देहरा स्थापित कियाऔर उसे एक लोक देवता की मान्यता दी। बाबा की अशान्त आत्मा देवत्व मिलने पर शाँत हो गई। बाबा का देहरा जम्मू के निकट झिड़ी में निर्मित है। लाखों की संख्या में लोग यहाँ श्रद्धाभाव से माथा टेकने आते हैं।

दाता रणपत

सामंतवाद की लिप्सा का शिकार दाता रणपत भी बने। वे जाति के ब्राह्मण थे और जम्मू की चाड़क जाति के कुल पुरोहित भी थे। वे न्याय प्रिय एक महान विभूति थे। उन्होंने चाड़कों के मध्य जमीन के बटवारे को लेकर स्थानीय सामंत बांगी की इच्छा के विरूद्ध निर्णय सुनाया तो उस सामंत ने रणपत के मौसेरे भाईयों को अपने पक्ष में करके उन्हीं से रणपत की हत्या करवा दी।

मरणोपरान्त रणपत की प्रेतात्मा ने सामंत बांगी को अपनी चपेट में लिया तो वह उन्मादी सा बन गया। अन्ततः जिन्होंने दाता रणपत की हत्या का षडयंत्र रचा था उन्हें रणपत की आक्रोश भरी आत्मा को शांत करने के लिए उसे अपना देवता स्वीकार करना पड़ा। दाता रणपत की पूरे डुग्गर में एक लोक देवता के रूप में पूजा होती है और हजारों की संख्या में लोग उनकी मेल में सम्मिलित होते हैं।

डुग्गर में ऐसे शहीदों की संख्या सैंकड़ों में है जो सामंतों की प्रताड़ना, शोषण, अन्याय के कारण शहीद हुए और बाद में उन की उपद्रवी प्रेतात्माओं को शांत करने के लिए उन्हें देवत्व प्रदान किया गया। ऐसे देवताओं में 'गढ़ धम्मा' (रामनगर) के बाबा इन्दो, मझालता

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

के बाबा फितु, सुन्दरी कोट के बाबा कौड़ा, रामगढ़ के बाबा कान्ह, मेहताबगढ़ के बाबा थोलू, अखनूर के बाबा मेई मल्ल, साम्बा के बाबा शिवो, फलोर हरमुकुन्द के बाबा भैरों, रियासी के बाबा पुरो, मुट्ठी के दाता लीखो, गढ़ मंडल के दाता हल्लो आदि उल्लेखनीय है।

सामंतवाद का शिकार केवल पुरुष ही नहीं अपितु महिलाएँ भी बड़ी संख्या में बनीं जिस में बिलावर क्षेत्र की बुआ भागां, बुआ कौड़ी, सती थकियाल रानी, धब्बुज वाली दाती, सती नागरू, सती तृप्ता के नाम उल्लेखनीय हैं। डुग्गर समाज में इन को भी 'लोक देवी' का पद प्राप्त है। इन की भी पूजा लोक विधि विधान के अनुरूप होती है।

लोक देवी

डुग्गर में लोक देवी के दो रूप मिलते हैं :

1. ग्राम देवी
2. सती

ग्राम देवी

शास्त्रों में परमात्मा की चिति शक्ति के तीन नाम हैं : (1) महाकाली (2) महालक्ष्मी (3) महासरस्वती। चिति शक्ति के तमः प्रधान रौद्ररूप को महाकाली, सत्व प्रधान वैष्णव रूप को महालक्ष्मी तथा रजः प्रधान ब्राह्मी शक्ति को सरस्वती कहते हैं - डुग्गर में महाकाली को 'कालका' के नाम से अभिहित किया जाता है। जिस प्रकार महादेव डुग्गर के लोक-समाज में ग्राम देवता के रूप में पूजे जाते हैं, उसी प्रकार कालका की पूजा ग्राम देवी के रूप में की जाती है। लोक मानस कालका को गौरी का पर्याय स्वीकारता है। गौरी का सम्बन्ध डुग्गर से है अतः यह इस क्षेत्र की इष्ट देवी भी है। डुग्गर में दस महाविद्याओं का सम्बन्ध परम्परागत सती गौरी और पार्वती से है। डुग्गर में इन महाविद्याओं में केवल त्रिपुर-भैरवी और बगलामुखी को ही लोकदेवी अथवा ग्राम देवी रूप में मान्यता प्राप्त है। डुग्गर में कई स्थानीय ग्राम देवियाँ भी हैं जिन का सम्बन्ध किसी न किसी ऐतिहासिक,

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं से है। इन ग्राम देवियों में मराड़ा देवी, बलैनी देवी, कोटड़ी देवी, जोड़ेआं देवी, राहुशिर देवी, चौंतरा देवी, दन्दासन देवी, सरथल देवी, ठुठयार देवी, मनसा देवी, मल्ल रानी के नाम उल्लेखनीय हैं।

सती

डोगरी में सती के लिए शिला बैन्ती (शीलवती) शब्द का प्रयोग किया जाता है। डोगरी शब्द कोष में शिला बैंती का अर्थ है अपने सत पर स्थिर रह कर सती होने वाली महिला। डुग्गर में जो महिलाएँ अपने सत को स्थिर रखने के लिए सती हुई उनमें उल्लेखनीय नाम हैं:

सती राधका-दाती भरागु, दाती तृप्ता, बुआ तृप्त, बुआ सत्यवती, बुआ अमरो, बुआ भुक्खी, बुआ शीली, बुआ सोबां, बुआ बचनू, सती ग्योनी, बुआ पागड़ी, बुआ लोहारी, बुआ बरालां। डुग्गर का लोक समाज इन्हें देवात्मा के रूप में पूजता है। इन का आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए कई लौकिक अनुष्ठान करता है।

विद्याधर

वासुकि पुराण के अनुसार भद्र देश की पवर्तीय श्रंखलाओं में विद्याधर प्रजाति के लोग भी रहते थे। वे पहले पार्वती के जनक पर्वतेश्वर के प्रदेश हिमालय में रहते थे, बाद में उन का स्वामी जीमूत केतु अपने पुत्र श्रीमूत वाहन के अनुरोध पर अपनी जन्म भूमि का परित्याग करके भद्रावकाश (भद्रवाह) की ओर आ गया। उन्होंने वासकुंड क्षेत्र के निकट अपना आवास रखा।

नाग राजा वासुकि नाग अपने भाई गरूड़ से त्रसित होकर कश्मीर से भाग कर भद्रावकाश की ओर आया और अपने प्राणों की रक्षार्थ वासकुंड की ओर भागा तो वहाँ विद्याधरों के स्वामी जीमूत वाहन ने उसे शरण दी। उसने एक कुशल नीतिज्ञ के रूप में गरूड़ और वासुकि नाग में संधि भी करवाई जिससे दोनों में शत्रुता का भाव मिट गया। नागों ने विद्याधर जीमूत वाहन को बहुत मान-सम्मान दिया। भद्रवाह क्षेत्र में जहाँ नाग मंदिर हैं वहाँ वासुकि नाग के साथ जीमूतवाहन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

की मूर्ति भी संस्थापित है। स्थानीय लोग नाग देवताओं के साथ-साथ विद्याधरों की भी पूजा करते हैं।

नाग

डुग्गर का लोक मानस नागों को भी अपना इस्ट देवता मानता है। डुग्गर में जितने भी लोक देवताओं के मंदिर हैं उन सब से अधिक मंदिर नागा नाग देवताओं के हैं। नागों का आदि पुराण 'वासुकि' डुग्गर प्रदेश में ही लिखा गया। डुग्गर के आदि शासकों और देवताओं में नाग प्रथम पंक्ति में परिगणित हैं। डुग्गर प्रदेश सम्भवत: उतर भारत में पहला प्रदेश है जिसके पवर्तीय क्षेत्र में नाग बस्तियाँ आज भी संस्थापित है। डुग्गर की संस्कृति नाग परम्पराओं पर आश्रित है। डुग्गर में कई नाग देवता हैं जिन्हें लोक देवता का सम्मान प्राप्त है। इन देवताओं में उल्लेखनीय हैं : वासुकि नाग, भैड़ नाग, काई नाग, कोशी नाग, नीली नाग, सुवार नाग, घुमाई नाग, बिमल नाग, मंढोर नाग, विन्तरू नाग, खज्जी नाग इत्यादि।

अभिशाप

जब भी किसी निर्दोष व्यक्ति को किसी सामंत या राजाधिकारी ने दंडित किया या उसे मृत्यु दंड दिया या उस पर गलत आरोप लगाया तो वह निर्दोष व्यक्ति मरने से पूर्व दंड देने वाले व्यक्ति को श्राप देता था। प्राय: देखा जाता कि उस का श्राप सत्य ही सिद्ध होता।

डुग्गर में जिन सामंतों या राज पुरुषों ने निर्दोष लोगों को मारा या मरने पर विवश किया वे सुखी नहीं रह पाए। उन का अन्त अति दु:ख दायी रहा। वे तड़प-तड़प कर मरे। बाबा जितो को आत्महत्या करने के लिए मेहता वीर सिंह ने विवश किया। बाबा जितो ने अपने प्राण तो विर्सजित कर दिए किन्तु मेहता वीर सिंह भी तड़प-तड़प कर मरा। इसी प्रकार दाता रणपत की हत्या करवाने वाला बांगी भी तड़प-तड़प कर मरा।

---

1. संदर्भ : तंत्र और प्रेता विद्या लेखक डा. राधा कृष्ण श्री माली।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ऐसा केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में घटित हुआ है। जर्मनी का कारजो (1620-1666) एक न्यायाधीश था। वह प्राय: 5 लोगों को प्रतिदिन फाँसी पर चढ़ाता था। फाँसी का दृश्य देखने वह अपने कुते को साथ लेकर आता था।

एक दिन उसने एक निर्दोष व्यक्ति को फाँसी पर चढ़ाया तो उस निर्दोष व्यक्ति ने उसे श्राप दिया - तेरी मौत कुतों से होगी। फिर वैसा ही हुआ। उसी के कुते ने उसे काटा और उस की मृत्यु हो गई।

पाड़ा

डुग्गर में पाड़ा एक पहाड़ी ब्राह्मणों में प्रथा थी। जो भी राजा अथवा सामंत जनता को सताता, उससे अन्याय करता तो ये लोग एक चादर बिछा कर राज महल के सामने बैठ जाते थे। जैसे ही राजा को सूचना मिलती तो वह अपने गले में चादर लटका कर इन ब्राह्मणों के पास आकर क्षमा याचना करता और आश्वासन देता कि भविष्य में वह अपनी जनता को कष्ट नहीं देगा। ब्राह्मण उसे आर्शीवाद देते और पाड़ा से उठ जाते।

किन्तु जो राजा या सामंत उन की बात न मानते वे आत्महत्या कर लेते या आत्मदाह से अपना शरीर छोड़ देते। ऐसे मरे हुए व्यक्ति मरणोपरान्त राजा या सामंत को बहुत तंग करते। वह व्यक्ति तड़प-तड़प कर मरता। अत: डुग्गर के लोक समाज में यह अवधारणा है कि किसी निर्दोष को सताना नहीं चाहिए।

आर्शीवाद और वरदान

निर्दोष व्यक्तियों की प्रेतात्माएँ प्रतिशोध की भावना से उत्प्रेरित होकर उन लोगों को कष्ट पहुँचाने के लिए ललायित रहती हैं जिन्होंने उन्हें मरने के लिए विवश किया। किन्तु जिन लोगों ने उनकी सहायता की होती है उन के प्रति वे आत्माएँ उदार रहती हैं और उन्हें आर्शीवाद प्रदान करती हैं।

प्राय: इन निर्दोष आत्माओं के आक्रोश को शान्त करने के लिए

CC-0. Nanaji Deshmukh Li... Jammu. Digitized by eGangotri

डुग्गर के लोक-समाज में एक प्रावधान है जिसके अन्तर्गत इन्हें मौहरों (मूर्तियों) में संस्थापित किया जाता है। लोक विद्या या परा विद्या की शक्ति से इन भटकती आत्माओं को जिन का स्वरूप वायावी होता है, उन्हें 'मौहरों' में स्थापित किया जाता है। यह मान लिया जाता है कि अब प्रेतात्मा वायु मंडल से निकल कर मौहरे के भीतर समाहित हो गई है। मौहरे को एक देवमूर्ति के समान पूजा जाता है और लोक-विधि के अनुसार उसकी पूजा-अर्चना की जाती है। माना जाता है कि ऐसा करने से प्रेतात्मा प्रसन्न होकर अपने कुल तथा पूजने वाले श्रद्धालु को आर्शीवाद या वरदान प्रदान करती हैं।

डुग्गर में कुल देवता का आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए कुल के लोग देवता के सम्मान में कई अनुष्ठान आयोजित करते हैं जिनमें मेल, खारका तथा जातर आदि उल्लेखनीय हैं। वे प्रत्येक शुभ कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व लोक देवता का आर्शीवाद प्राप्त करने उस के स्थान पर अवश्य जाते हैं। लोक विश्वास है कि जिस परिवार को कुल देवता या कुल देवी का आर्शीवाद प्राप्त होता है उस के सभी संस्कार निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं।

जिस व्यक्ति को कुल देवता का वरदान प्राप्त हो वह उन्नति के सोपान पर चढ़ता जाता है।

---

1. संदर्भ : तंत्र और प्रेत विद्या लेखक डा. राधा कृष्ण श्री माली

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सप्तम अध्याय

अप देवता (दुरात्माएँ)

अप देवता का शब्द कोश में अर्थ है - बुरा देवता, दानव तथा राक्षस आदि। श्री सच्चिदानन्द दास ने अप देवताओं के दस प्रभेद माने हैं और वे हैं : विद्या धर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गृह्यक, सिद्ध तथा भूत।

धर्मशास्त्रों में उप देवताओं को देव योनियाँ कहा गया है। देवता और देव योनियों में अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि मुख्य देवता आदिति माता की सन्तान हैं और देव योनियाँ यथा विद्याधर, गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, अप्सरा, गृह्यक, दानव, दैत्य, राक्षस, सिद्ध, चारण-पिशाच, रूद्र, गण, पितृगण, भूत-प्रेत आदि दिति, दनु, सुरसा, विनता, कद्रू, मुनिइला आदि कश्यप पत्नियों की सन्तानें हैं।

डुग्गर में उपरोक्त सभी उप देवताओं के उदाहरण तो नहीं मिलते। किन्तु जिन के उदाहरण मिलते हैं, वे सभी दुरात्माओं के अन्तर्गत परिगणित हैं। ये सभी दुरात्माएँ माँसाहारी हैं। इन्हें कहीं-कहीं सुरा से भी प्रसन्न किया जाता है। ये वे दुरात्माएँ हैं जिन्होंने मानव जाति को अति कष्ट पहुँचाया है। ये अपने क्रूर स्वभाव के कारण मानव जाति पर प्रहार पर प्रहार करती रही हैं। इन की पृथक बस्तियाँ रहीं हैं। जब भी कोई मनुष्य भूल से भी इन की बस्ती में चला जाता तो ये उसे पटक-पटक कर मार देतीं। उस की हत्या करके उस का माँस आग में भून कर खा लेती। मनुष्य-समाज इन से त्रस्त ही रहा। अन्ततः लड़ाईयों-युद्धों आदि में इन्हें पराजित करके इनकी हत्याएं की गईं तो इन की अशांत आत्माओं ने मरने के बाद भी उपद्रव पर उपद्रव मचाये। अन्ततः मनुष्य जाति ने इन्हें देव पद प्रदान करके इन से छुटकारा पाया। डुग्गर में उप देवताओं के जो रूप मिलते हैं, वे निम्न हैं :

राक्स

डोगरी में राक्षस को राक्स या राख्स कहते हैं। कई इतिहास कारों का मत है कि आर्य लोगों ने अपने दस्यु प्रतिद्वन्द्वियों को राक्षस

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कहा है। कई समाज शास्त्रियों ने इन्हें एक अलग प्रजाति माना है। इस जाति के पास विद्या थी जिसे राक्षसी विद्या कहा गया है। अपनी इस विद्या से ये वायु में उड़ते थे और अपना रूप भी बदल सकते थे। ये नर भक्षी थे अतः इन्हें देखकर आर्य जाति के लोग घबराते थे। कई विद्वानों का मत है कि हिमालय की अन्दरूनी घाटियों में इन का शासन था। ये मन मानी करते थे। इन के विषय में कहा जाता है कि ये लोग वचन के पक्के होते थे। सेवा-भाव को यह अपना धर्म मानते थे। ये प्रायः रात्रि के समय विचरण करते थे अतः इन्हें निशाचर भी कहा गया है। ये उत्सव भी रात्रि के समय आयोजित करते थे।

डुग्गर के पवर्तीय क्षेत्रों में जो रात्रि-जातर उत्सव आयोजित होते हैं, माना जाता है कि इन उत्सवों पर राक्षस संस्कृति का प्रभाव है। इन उत्सवों में माँस-भक्षण सुरा-पान इत्यादि का प्रचलन है।

डुग्गर के पवर्तीय भूखंडों में राक्षसों से जुड़े कई साक्ष्य उपलब्ध हैं। रियासी के अन्तर्गत भागा-कोटली के निकट एक जलाशय है जिसे स्थानीय लोग 'राक्स का डब्ब' कहते हैं। यहाँ राक्षस की दुरात्मा को पशु को चीर कर उसका धड़कता हुआ दिल भेंट किया जाता है। पाडर में आज भी राक्स खेल प्रचलन में है। सुद्ध महादेव में राक्षसों की दूरात्माओं को प्रसन्न करने के लिए रात्रि के समय जलती हुई मशालों से 'राक्स यात्रा' आयोजित होती है।

डुग्गर में राक्षसों की पूजा-अर्चना श्रद्धा-भाव से नहीं अपितु डर और भय से की जाती है। मानसिक रूप से रूग्ण लोक मानस आज भी राक्सों के नाम से आतंकित रहता है और उनके भय से बचने के लिए कई लोकोनुष्ठान करता है।

दैत्त (दैत्य)

दैत्य की परिगणना भी राक्स कोटि के देवता के अन्तर्गत की गई है। दैत्य राक्षसों से अधिक शक्तिशाली माने गए हैं। ये वीरयोद्धा और शासक थे। इनकी अपनी अलग संस्कृति अर्थात् पहचान थी। दैत्यों का संहार देव योनी के लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए छल और कपट से

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

किया। उन की प्रेतात्माओं की शाँति के लिए उन की पूजा-अर्चना भी की। डुग्गर में शुद्धेश्वर दैत्य का वध भगवान शिव ने किया। इसी प्रकार डडूरा-कड़केयाल गाँवों में जो सिद्धान्त दैत्य रहता था वह भी महादेव द्वारा मारा गया। महादेव के ही आदेश पर इन दैत्यों की पूजा महादेव के साथ की जाती है।

अग्नि पर नृत्य

डडूरा गाँव (पैंथल-कटड़ा के निकट) में सिद्धान्त दैत्य के सम्मान में आषाढ़ पूर्णिमा को एक महोत्सव आयोजित होता है जिसमें आग के अंगारों पर नंगे पाँव दैत्य के पुजारी नाचते हैं। लेखक भी एक बार इस नृत्य में सम्मिलित हुआ। उसे लगा कि जो अंगारे दूर से तप्त लगते हैं, वे नाचने वाले के पाँव को कोई क्षति नहीं पहुँचाते हैं। वे कुछ-कुछ शीतल लगते हैं और उन पर नृत्य करने से एक अद्‌भुत आन्तरिक सुख का आभास होता है।

लेखक अभिमंत्रित आग के अंगारों से थोड़ी दूर चला गया। वहाँ एक धधकता हुआ अंगारा पड़ा हुआ था। लेखक का पाँव उस अंगारे पर पड़ा तो उस के मुँह से चीख निकल गई। उसे लगा कि उस का पाँव ही जल गया है। उसने देव स्थान पर जाकर देवता को प्रणाम किया और घर आ गया। रात्रि को सोते समय तक उसके पाँव में आग की जलन का दर्द अनुभव होता रहा। किन्तु प्रातः वह उठा तो उसका पाँव ठीक था। लेखक ने पुजारी से इस का कारण पूछा तो पुजारी ने बताया कि लेखक का पाँव जिस अंगारे पर पड़ा था वह अभिमंत्रित अंगारे से अलग था। केवल वही अंगारे ठंडे पड़ते हैं जो अभिमंत्रित हों।

आग पर नाचने के और भी कई दृश्य लेखक ने डुग्गर प्रदेश में देखे किन्तु वह इस विद्‌या का रहस्योद्‌घाटन नहीं कर सका।

पशाच (पिशाच)

डुग्गर में पिशाचों को दैत्यों का सहायक कहा गया है। इन का उल्लेख कई पौराणिक ग्रंथों में भी हुआ है। ये लोग अति शीत के कारण स्नान नहीं करते थे। मलीन रहते थे और माँस भक्षी थे।

CC-0. Nanaji Deshmukh ... BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कश्मीर के इतिहास में इन का वर्णन मिलता है। पिशाचों का अधिपति पिशाचों को मारता था। इनमें भी बलि प्रथा का प्रचलन था। ये भी नर-भक्षी थे। सभ्यता की दृष्टि में ये बहुत ही पिछड़े हुए थे।

डुग्गर में पिशाचों को अप देवता के रूप में पूजने का प्रचलन आज भी है। इन्हें पुष्प, इत्र, अलंकार, आहार, माँस, मदिरा तथा सूखे फलों से आज भी पूजा जाता है। माना जाता है कि रामबन से लेकर बनिहाल तक कभी पिशाचों का प्रभुत्व था। इन की मृतिका मूर्ति का पूजन पहाड़ी क्षेत्र में आज भी किया जाता है। माना जाता है कि पिशाच भी रात्रि के समय रूप बदल कर घूमते-फिरते थे।

जक्ख (यक्ष)

डुग्गर के इतिहास और लोक वार्ता में जक्ख (यक्ष) प्रजाति का विस्तृत वर्णन है। इन्हें नागों का सहयोगी माना गया है। नाग राजाओं ने यक्षों को अपने दरबार में ऊँचे पदों पर आसीन किया था। नाग राजा भैड़ का मंत्री यक्ष ही था। डुग्गर के इतिहास में यक्षों के तीन राजाओं के नाम मिलते हैं और वे हैं : यक्ष भानु, क्रिमीश यक्ष और समुन्द्र यक्ष। भानु यक्ष पौनी का क्रिमीश क्रिमची का और समुन्द्र यक्ष जम्मू के निकट स्थित महामाया पहाड़ी का राजा था। यक्ष भी नर-भक्षी थे। महाभारत में यक्ष राजा वितरासुर का उल्लेख मिलता है। यह राजा भी शव भक्षण करता था। उसे भीम सेन ने मारा था। ज्वाला प्रसाद चेतन ने यक्ष जाति पर काम किया है। उनके अनुसार यक्ष परस्पर घोर विरोध रखते थे। ये वाम क्रिया तथा विपरीत कार्य करने में सदा लीन रहते थे। ये घोर आलसी थे। वे एक दूसरे की बहू-बेटियों पर बुरी दृष्टि रखते थे। एक बार जाम्बे नामक यक्ष की शिरल्हे नामक युवा कन्या को अर्धे और शध ने पकड़ा। उससे बलात्कार किया। उसे मारा और उस का माँस भुन कर खा गए। यक्षों को सपथ पर लाने के लिए 'देओ थनाली' नामक ऋषि ने इन्हें शिव पूजा के लिए प्रेरित किया और लिंगायता सम्प्रदाय का सूत्रपात किया। डुग्गर में भी यक्ष-पूजा का प्रचलन है। डुग्गर की कई जातियों के यक्ष कुलदेवता भी हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जल बेताल

बेताल की परिगणना कई विद्वानों ने श्रेष्ठ देवताओं के अन्तर्गत की है। उन्हें भूतों और प्रेतों से ऊँचा माना है। किन्तु डुग्गर के विद्वान प्रकाश प्रेमी ने इन्हें 'अधम देवता' वर्ग में रखा है। प्रेमी जी के अनुसार जल बेताल का स्वरूप बड़ा भयंकर और डरावना है।

कई लोग जल-बेताल को कृषि कर्म से सम्बन्धित देवता मानते हैं किन्तु प्रकाश प्रेमी इसे कुएं का देवता मानते हैं। इस देवता के डुग्गर में कई स्थान हैं जिन में मुख्य स्थान क्रिमची के निकट मानसर गाँव में है।

चस देवता

इस देवता की परिगणना भी अधम देवता के रूप में की जाती है। इस का निवास जल के भीतर माना जाता है। लोक-विश्वास है कि जो नारियाँ किसी जलकुंड, नदी, नाले अथवा तालाब में नग्न होकर स्नान करती हैं उन पर यह देवता मोहित होकर उनके भीतर प्रवेश कर जाता है। ऐसी स्थिति में तांत्रिक की सहायता से महिला को प्रेत-बाधा से मुक्त किया जाता है।

गोघड़

गोघड़ भी एक राक्षस कोटि को उपदेवता है। डुग्गर में बच्चों को डराने के लिए प्रायः गोघड़ का नाम लिया जाता है। हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत मण्डी जनपद में एक पहाड़ी है जिसे गोघड़धार कहा जाता है। डुग्गर प्रदेश में भी इन की मौजूदगी के प्रमाण मिलते हैं। लोक कथाओं में इस प्रजाति के लोगों को अतिक्रूर, नरभक्षी, असभ्य और असंस्कृत माना गया है। डुग्गर प्रदेश में इनके अस्तित्व के अब कहीं भी चिह्न नहीं मिलते।

अप्सरा (परी)

डुग्गर के लोक मानस में अप्सरा की अवधारणा 'परी' कोटि की है। धर्म शास्त्रियों ने 'अप्सरा' की परिगणना उप देवताओं के रूप

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

में की है और विद्याधरों के बाद इन्हें स्थान दिया है।

उप देवता बल, बुद्धि, स्फुर्ति तथा विद्या में तो देवताओं के ही समान होते हैं किन्तु देवता किसी का अहित नहीं करते किन्तु उपदेवता, क्रोधित हो जााने पर दंडित करते हैं। वे यदि चाहे तो उन की बात न मानने वालों के प्राण भी ले लेते हैं। परियाँ भी ऐसा ही करती हैं।

लोक अवधारणा के अनुसार परियाँ पहाड़ी चोटियों और घने जंगलों में वास करती हैं। उनके पर होते हैं। वे यहाँ चाहें वहाँ उड़ कर जा सकती हैं। वे कभी एक वृक्ष पर बैठती हैं तो कभी उड़ कर दूसरे वृक्ष पर जा बैठती हैं। इनके बाल सुनहरे होते हैं। इनका रंग अति गोरा होता है और ये देखने में यौवन युक्ता लगती है। ये घूमती-फिरती रहती हैं और जिस व्यक्ति पर आसक्त हो जाएं उसे अपने साथ ले जाती हैं। उसके साथ रंग-रलियाँ मनाती हैं।

यदि ये क्रुद्ध हो जाएं तो उत्पात मचाती हैं। यदि कोई व्यक्ति इनकी बात न माने तो ये उसके प्राण भी ले सकती हैं। डुग्गर में रामबन जनपद के अन्तर्गत इन का मुख्य केन्द्र है जिसे 'परिस्तान' नाम से अभिहित किया जाता है। माना जाता है कि कभी यह पूरा क्षेत्र इनके अधिकार में था।

इस क्षेत्र के इतिहास और भूगोल का अनुशीलन करने पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि कभी यहाँ मातृ-सतात्मक समाज था। घर का स्वामी पुरुष नहीं महिला होती थी। वे ही समाज का संचालन करती थीं। ये महिलाएँ पवर्तीय क्षेत्र में रहती थीं, अतः गौर वर्ण थीं। इन का मुक्त समाज था। ये जिस पुरुष से भी चाहे सम्बन्ध बना सकती थीं और जब चाहें उस पुरुष को घर से बाहर निकाल कर दूसरे पुरुष को अपने घर ला सकती थीं। ये कामातुर रहती थीं, अतः पुरुषों की संगत पसंद करती थीं। किन्तु नाग काल में नागों ने इन से शासन-सता छीन ली। उन्होंने कई परियों को पटक-पटक कर मारा। इससे इन की प्रेतात्माएँ युवा-वर्ग को सताने लगीं।

इन्हें जिन लोगों ने भी देखा है उन का यही मानना है कि ये

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देखने में शरीर-धारी लगती हैं किन्तु वास्तव में ये अशरीरी हैं।

इन से सम्बन्धित डुग्गर प्रदेश में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। कभी ये किसी तपस्या रत साधु को अपने साथ आकाश में ले उड़ी तो कभी किसी युवा पर मोहित होकर अपनी काम-वासना तृप्प करने उसे एकान्त में ले गई।

नाना जी देशमुख पुस्तकालय (जम्मू) क्रमांक 1458

परियों से संबंधित कई कहानियाँ डुग्गर में प्रचलित हैं। एक कहानी सनासर की है। यह कहानी समाचार पत्रों में भी बहुत चर्चित हुई।

एक पशु चिकित्सिक की नियुक्ति सनासर में हुई। वह वहाँ अपने काम में व्यस्त रहा। एक दिन वह सो रहा था तो एक बूढ़ा व्यक्ति उसके पास आया और बोला-मेरी भैंस बहुत बीमार है, मेरे साथ चलो। डाक्टर चल पड़ा। वह बूढ़ा डाक्टर को निकट के जंगल में ले गया। वहाँ परियों का नृत्य हो रहा था। परियों ने डाक्टर को घेरा। उसके साथ रास लीला रचाई। प्रातः होने से पहले बूढ़ा डाक्टर को उस के घर छोड़ आया। ऐसा कई दिन चला। डाक्टर भी घबरा गया। उसने गाँव-वासियों को सच्ची घटना बता दी। गाँव वासियों ने पहरा बैठाया। किन्तु जब वह बूढ़ा आता तो पहरेदारों को नींद आ जाती और बूढ़ा उसे परियों के पास ले जाता। एक दिन डाक्टर ने अपने विभाग को सूचित किया और स्थानान्तरण के लिए प्रार्थना की।

इस पर परियें उस पर कुपित हो गई। एक दिन सबने देखा कि डाक्टर अपनी चारपाई पर मृत पड़ा था। लेखक घटना की सच्चाई जानने सनासर गया। उसने स्थानीय लोगों से सम्पर्क किया तो उन्होंने बताया कि घटना सत्य है। लेखक ने उसके विभाग के अधिकारी से सम्पर्क किया तो उसने बताया कि डाक्टर वहाँ से अपनी ट्रांसफर चाहता था अतः परियों की कहानी उसी की कल्पना थी।

जोगन

जोगन डुग्गर में भय, संत्रास तथा आतंक का प्रतीक मानी जाती है। डुग्गर का लोक मानस जोगन को अलौकिक शक्ति, प्राकृतिक शक्ति

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

में की है और विद्याधरों के बाद इन्हें स्थान दिया है।

उप देवता बल, बुद्धि, स्फुर्ति तथा विद्या में तो देवताओं के ही समान होते हैं किन्तु देवता किसी का अहित नहीं करते किन्तु उपदेवता, क्रोधित हो जाने पर दंडित करते हैं। वे यदि चाहे तो उन की बात न मानने वालों के प्राण भी ले लेते हैं। परियाँ भी ऐसा ही करती हैं।

लोक अवधारणा के अनुसार परियाँ पहाड़ी चोटियों और घने जंगलों में वास करती हैं। उनके पर होते हैं। वे यहाँ चाहें वहाँ उड़ कर जा सकती हैं। वे कभी एक वृक्ष पर बैठती हैं तो कभी उड़ कर दूसरे वृक्ष पर जा बैठती हैं। इनके बाल सुनहरे होते हैं। इनका रंग अति गोरा होता है और ये देखने में यौवन युक्ता लगती है। ये घूमती-फिरती रहती हैं और जिस व्यक्ति पर आसक्त हो जाएं उसे अपने साथ ले जाती हैं। उसके साथ रंग-रलियाँ मनाती हैं।

यदि ये क्रुद्ध हो जाएं तो उत्पात मचाती हैं। यदि कोई व्यक्ति इनकी बात न माने तो ये उसके प्राण भी ले सकती हैं। डुग्गर में रामबन जनपद के अन्तर्गत इन का मुख्य केन्द्र है जिसे 'परिस्तान' नाम से अभिहित किया जाता है। माना जाता है कि कभी यह पूरा क्षेत्र इनके अधिकार में था।

इस क्षेत्र के इतिहास और भूगोल का अनुशीलन करने पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि कभी यहाँ मातृ-सतात्मक समाज था। घर का स्वामी पुरुष नहीं महिला होती थी। वे ही समाज का संचालन करती थीं। ये महिलाएँ पवर्तीय क्षेत्र में रहती थीं, अतः गौर वर्ण थीं। इन का मुक्त समाज था। ये जिस पुरुष से भी चाहे सम्बन्ध बना सकती थीं और जब चाहें उस पुरुष को घर से बाहर निकाल कर दूसरे पुरुष को अपने घर ला सकती थीं। ये कामातुर रहती थीं, अतः पुरुषों की संगत पसंद करती थीं। किन्तु नाग काल में नागों ने इन से शासन-सता छीन ली। उन्होंने कई परियों को पटक-पटक कर मारा। इससे इन की प्रेतात्माएँ युवा-वर्ग को सताने लगीं।

इन्हें जिन लोगों ने भी देखा है उन का यही मानना है कि ये

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, Jammu. Digitized by eGangotri

देखने में शरीर-धारी लगती हैं किन्तु वास्तव में ये अशरीरी हैं।

इन से सम्बन्धित डुग्गर प्रदेश में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। कभी ये किसी तपस्या रत साधु को अपने साथ आकाश में ले उड़ी तो कभी किसी युवा पर मोहित होकर अपनी काम-वासना तृप्प करने उसे एकान्त में ले गई।

नानाजी देशमुख पुस्तकालय (जम्मू)
क्रमांक 1458

परियों से संबंधित कई कहानियाँ डुग्गर में प्रचलित हैं। एक कहानी सनासर की है। यह कहानी समाचार पत्रों में भी बहुत चर्चित हुई।

एक पशु चिकित्सिक की नियुक्ति सनासर में हुई। वह वहाँ अपने काम में व्यस्त रहा। एक दिन वह सो रहा था तो एक बूढ़ा व्यक्ति उसके पास आया और बोला-मेरी भैंस बहुत बीमार है, मेरे साथ चलो। डाक्टर चल पड़ा। वह बूढ़ा डाक्टर को निकट के जंगल में ले गया। वहाँ परियों का नृत्य हो रहा था। परियों ने डाक्टर को घेरा। उसके साथ रास लीला रचाई। प्रातः होने से पहले बूढ़ा डाक्टर को उस के घर छोड़ आया। ऐसा कई दिन चला। डाक्टर भी घबरा गया। उसने गाँव-वासियों को सच्ची घटना बता दी। गाँव वासियों ने पहरा बैठाया। किन्तु जब वह बूढ़ा आता तो पहरेदारों को नींद आ जाती और बूढ़ा उसे परियों के पास ले जाता। एक दिन डाक्टर ने अपने विभाग को सूचित किया और स्थानान्तरण के लिए प्रार्थना की।

इस पर परियें उस पर कुपित हो गई। एक दिन सबने देखा कि डाक्टर अपनी चारपाई पर मृत पड़ा था। लेखक घटना की सच्चाई जानने सनासर गया। उसने स्थानीय लोगों से सम्पर्क किया तो उन्होंने बताया कि घटना सत्य है। लेखक ने उसके विभाग के अधिकारी से सम्पर्क किया तो उसने बताया कि डाक्टर वहाँ से अपनी ट्रांसफर चाहता था अतः परियों की कहानी उसी की कल्पना थी।

जोगन

जोगन डुग्गर में भय, संत्रास तथा आतंक का प्रतीक मानी जाती है। डुग्गर का लोक मानस जोगन को अलौकिक शक्ति, प्राकृतिक शक्ति

CC-0. Nanaji Deshmukh Libra... mmu. Digitized by eGangotri

के रूप में पूजता है। कई परा विज्ञानी इन्हें वायावी शक्ति तो कई इतिहासकार इन्हें नाग कन्याएँ मानते हैं। जोगन लोक अवधारणा के अनुसार आँधी तूफान और हिमपात ला सकती हैं। डुग्गर का लोक समाज एक पिण्डी के रूप में इनकी पूजा करता है।

डोगरी लोक वार्ता में इन के सम्बन्ध में जो सामग्री उपलब्ध हुई है उसके अनुसार जोगन का रंग काला होता है। इन के दान्त बाहिर की ओर निकले होते हैं। इनके स्तन नीचे लटकते हैं। ये अर्द्ध नग्नावस्था में रहती हैं। लगता है कि जोगनों का सम्बन्ध डुग्गर के आदि समाज से था। वे शरीर पतों अथवा खालों से ढाँपती थीं। वे स्वच्छन्द घूमती फिरती थी। जोगन समाज में मातृसता का प्रचलन था। जोगन जिस पुरुष पर आसक्त होती उन्हें अपने निकट रखती। वे अपनी इच्छा से दूसरे पुरुष से सम्पर्क कर सकती थीं। जोगने स्वभाव से बहुत ही क्रूर थीं। वे माँसाहारी थीं। वे पुरुषों को भी बहुत यातनाएँ देती थीं।

नाग-काल में नागों और जोगनों में टकराव हुआ तो नागों ने क्रूर जोगनों को पटक-पटक कर मारा। उनकी प्रेतात्माएँ मरणोपरान्त पहाड़ों में भटकती रहीं। अन्ततः स्थानीय लोगों ने इन्हें उप देवी के रूप में मान्यता दी और इन के स्थानों पर पिण्डियों के रूप में इन की स्थापना की।

डुग्गर की जोगने भारतीय वाङमय में वर्णित 64 जोगनों से भिन्न हैं। डुग्गर में इन्हें काली जोगन, खाड़े वाली जोगन, करसिंगि जोगन, परोली जोगन, बोली जोगन, सरौली जोगन, गस्याल जोगन, मंडीधार जोगन, गौरी जोगन, छोहरी जोगन, अनजाड़ जोगन, जक्खनी जोगन, भक्खनी जोगन, रक्खनी जोगन, मद्धरी जोगन, जल-जोगन, थल जोगन, हुच्छी जोगन, अगरकाली जोगन, मद्धरी जोगन, बौली जोगन के नाम से अभिहित करते हैं। इन के स्थान पहाड़ी गाँवों में है।

डुग्गर की जोगनों से सम्बन्धित पवर्तीय भूखंड में कई दन्त कथाएँ प्रचलित हैं जिनके अनुसार ये प्रायः पवर्तीय गुफाओं में अकेली या सामूहिक रूप से रहती थीं। ये वनों में स्वच्छ रूप से विचरण करती थी। कई बार ऐसा भी होता था कि वे घने वनों में किसी पुरुष के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सम्पर्क मे भी आ जाती थी। जिस जोगन की मित्रता जिस पुरुष से बढ़ती वे उसके साथ उसके घर आ जातीं और उप पत्नी के रूप में वहाँ कुछ समय के लिए रूकतीं। जो सन्तान पैदा होती वे उसे वहीं छोड़कर किसी दूसरे पुरुष के साथ चली जातीं। यह भी होता कि वे जिस पुरुष के घर में ठहरतीं उस से कुछ शर्तें या वचन मनवा लेतीं। शर्त या वचन भंग होने पर वह अपने मित्र पुरुष को छोड़ कर पुनः वन में चली जातीं।

इन जोगनों से जो सन्तान होती उसे जोगनी पुत्र कहा जाता। डुग्गर के पहाड़ी क्षेत्र में ऐसी कई प्रजातियाँ हैं जो अपने को जोगनी पुत्र मानती हैं यथा पंचारी क्षेत्र की जिज्जु उप जाति, घोरड़ी क्षेत्र की मल्ली जाति तथा लाटी-धूना की सरोही उप जाति के लोग। इन जातियों की परम्पराओं और जीवन शैली का अध्ययन करने से लगता है कि इस पर्वतीय क्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल के बाद भी मातृ-सतात्मक समाज का अस्तित्व रहा है।

जोगन समाज की देन इस पर्वतीय भूखंड में 'दुआल प्रथा' का प्रचलन माना जाता है। यह प्रथा किसी न किसी रूप में इस क्षेत्र में आज भी प्रचलित है। इस प्रथा के अन्तर्गत एक विवाहित महिला अपने पति का परित्याग करके अपनी इच्छानुसार दूसरे पुरुष के घर बिना विवाह किए रह सकती है। यदि उस का मन दूसरे पुरुष से भी उकता जाए तो वह तीसरा, चौथा, पाँचवें पुरुष की भी उप पत्नी बन कर उसके घर में रह सकती है।

किन्तु शिक्षा के प्रचार और प्रसार से यह प्रथा समापन स्थिति में है। कई समाज शास्त्री इस प्रथा को जोगन समाज से जोड़ते हैं और उन्हें कामातुर महिलाओं के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार जोगनें पुरुषों का यौन शोषण करती थीं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पैशाचिक परा शक्तियाँ

पिशाचिनी

इस सृष्टि में प्रेतात्माओं और देवात्माओं के अतिरिक्त कुछ अशरीरी सूक्ष्म आत्माएँ और भी हैं जिन्हें तांत्रिक अपने वश में करके उनसे मन माना काम लेते हैं। इन सूक्ष्म शरीर धारियों में पिशाचिनी भी है। इन पिशाचिनियों में प्रमुख है :

कर्ण पिशाचिनी

कर्ण पिशाचिनी को योग माया का एक अंश माना जाता है। तांत्रिक कर्ण पिशाचिनी को सिद्ध करके किसी भी व्यक्ति के भूत, वर्तमान और भविष्य को सटीक बता सकता है। वैसे भी भारतीय तंत्र में भूत, भविष्य और वर्तमान को सटीक करने वाली शक्ति का नाम कर्ण पिशाचिनी देवी बतलाया गया है। कहा जाता है कि पिशाचिनी साधक के कान या मस्तिष्क में वह सब डाल देती है जिस की वह उससे उपेक्षा करता है।

कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि तीन रूपों में की जा सकती है और वे हैं :

1. माता
2. बहन
3. पत्नी

यदि साधक कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि माता के रूप में करे तो साधन को जन्म देने वाली माता को कष्ट पहुँचता है और वह बीमार हो जाती ह। यदि साधक कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि बहन के रूप में करे तो उस का दाम्पत्य जीवन भंग हो जाता है। यदि व्यक्ति कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि पत्नी के रूप में करे तो उस की अपनी पत्नी को कष्ट पहुँचता है और वह पति से अलग हो जाती है। प्रायः साधक कर्ण पिशाचिनी को पत्नी रूप में ही स्वीकार करते हैं। पत्नी के रूप में कर्ण पिशाचिनी अधिक आज्ञाकारिणी और शक्तिशाली होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कर्ण पिशाचिनी सिद्धि के समय एक साधारण श्याम वर्ण की युवती के रूप में प्रकट होती है। वह देखने में न तो अति सुन्दर लगती है न ही भयावनी अथवा कुरूप। इस की मुखाकृति तेजस्वी लगती है। यह अलंकार रहित होती है। शरीर पर कोई आभूषण नहीं होता। मस्तक में एक देदीप्यमान प्रकाश किरणें छोड़ता हुआ आड़ा नेत्र होता है। इस की ओर देख पाना सम्भव नहीं होता है। यह आड़ा देदीप्यमान ललाट में स्थित नेत्र ही कर्ण पिशाचिनी की पहचान है। इस के पीछे मृत-आत्माओं की भीड़ लगी हुई होती है। वे सब साधक को भयभीत करने का प्रयास नहीं करते। प्रकट होते ही कर्ण पिशाचिनी साधक के मस्तक पर हाथ रख देती है। यह समय ही उस की कठिन परीक्षा का होता है। इस समय उसे भयभीत करने वाला कोई दृश्य दिखाई नहीं देता है। लेकिन कर्ण पिशाचिनी का प्रथम स्पर्श सहन करने के लिए उसे पूर्ण दुस्साहसी होना पड़ता है। क्योंकि वह स्पर्श ही भय से संज्ञा शून्य करने वाला तथा साधक को विचलित करने वाला होता है। उस समय साधक साहसपूर्वक इसके प्रश्न का उतर देकर इसे वशीभूत कर साथ रहने के लिए वचनबद्ध कर लेता है। वह स्थिति उस की सिद्धि की द्योतक मानी जाती है।

जिन लोगों को कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि प्राप्त हो जाती है उनके पास धन और प्रसिद्धि की कमी नहीं रहती है लेकिन फिर भी उनका जीवन सुखी नहीं रहता। पिशाच प्रकृति की सिद्धि के प्रभाव के कारण वे स्वयं भी पिशाच बुद्धि, स्वभाव और चरित्र के हो जाते हैं। वे कई दिनों तक नहाते नहीं। झूठ बोलना उनकी आदत बन जाती है। पिशाच वर्गीय सिद्धि से मन की निर्मलता समाप्त हो जाती है। उन लोगों को देह छोड़ने पर अति कष्ट झेलना पड़ता है जो इस प्रकार की सिद्धि करते हैं। यह निम्न कोटि की सिद्धि है।

साधना : इस की सिद्धि के लिए साधक एकांत स्थान ढूंढता है। तत्पश्चात वह आसन जमा कर बैठ जाता है। वह कर्ण पिशाचिनी की मूर्ति स्थापित करने के बाद मंत्र पढ़ता है। साधक आँखें बंद करके कर्ण

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

-पिशाचिनी के मंत्र का जाप एक लाख बार करता है। अंत में देवी कर्ण पिशाचिनी साधक को दर्शन देकर वाक सिद्धि का वरदान देती है। इस से साधक भूत वर्तमान और भविष्य के विषय में बता सकता है।

कहा जाता है कि कर्ण पिशाचिनी साधक के कान में जिज्ञासु की जानकारी देती है और साधक तदानुसार जिज्ञासु को सब कुछ बता देता है। कहा जाता है कि डुग्गर के प्रख्यात योगी और संत स्वामी नित्यानंद जी महाराज को यह सिद्धि प्राप्त थी। वे महाराजा प्रताप सिंह के राजगुरु थे। उनके भक्तों की संख्या हजारों में थी। डुग्गर के प्रसिद्ध तांत्रिक कृष्ण ज्योतिषी ने भी कर्ण पिशाचिनी की साधना करके उस की सिद्धि प्राप्त कर ली थी। वे केवल जम्मू प्रान्त में ही नहीं अपितु देश और विदेश में भी एक ज्योतिषी के रूप में प्रसिद्ध हुए।

डुग्गर में और विशेष रूप में भारत में कई ऐसे सिद्ध पुरुष, ज्योतिषी और तांत्रिक हैं जिन्हें कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि प्राप्त हुई होती है। वे अपनी इसी सिद्धि के कारण भविष्यवाणियाँ करके ख्याति प्राप्त करते हैं। पिशाचिनी की सिद्धि से साधक को कष्ट भी उठाने पड़ते हैं, अतः इस की सिद्धि की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।

कर्ण मातंकी

कर्ण मातंकी का रूप अति भयानक होता है। इस के साधक को बड़ी सावधानी से साधना करनी पड़ती है। कर्ण मातंकी साधना में साधक का निडर और उत्साही होना अति आवश्यक है। कर्ण मातंगी साधना के इच्छुक साधक में अपूर्व धैर्य, अटूट निष्ठा, भरपूर श्रद्धा और एकाग्रता होना अनिवार्य शर्त है। इसके अभाव में साधक का घोर अहित तो होता ही है साथ ही असीम असफलता भी हाथ लगती है।

जो साधक एक बार कर्ण मातंगी साधना को पूर्ण कर लेना है वह न केवल मनुष्य वरन पृथ्वी के भी अनजाने, अनछुए रहस्यों को भी जान लेता है। इस परा शक्ति की साधना के लिए साधक रात्रि में स्नान कर पीली धोती पहन, लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुँह करके बैठता है। यह साधना शुक्त पक्ष के शुक्रवार को प्रारम्भ की जाती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

साधना के तीसरे दिन साधक राई और तेल की 1001 आहुतियाँ मंत्र की 41 मालाएँ जपने के बाद देता है। फिर वह हवन करने के बाद स्नान करता है और तदुपरान्त वह मंत्र की 12 मालाएँ जपता है।

तीसरे दिन अखण्ड जलता दीपक बुझा कर दीपक के तेल को अपने हाथों और तलुवे में भली प्रकार मलता है। यह साधना जैसे ही पूरी होती है कर्ण मातंगी प्रकट होकर दर्शन देती है। कर्ण मालती की साधना का प्रचलन भारत के अतिरिक्त तिब्बत में भी है। प्राय: हिमालय क्षेत्र के लामा इसे सिद्ध करके लोगों का भविष्य बताते हैं।

स्वप्न मातंगी

स्वप्न मातंगी के सूक्ष्म शरीर के दर्शन नहीं होते। इसके दर्शन केवल स्वप्न में ही किए जा सकते हैं। इस के दर्शन के लिए साधक एक पूरा दिन भूखा प्यासा रहता है। रात्रि के समय वह स्वप्न मातंगी मंत्र का एक सौ आठ बार जप करके सो जाता है। रात्रि के समय मातंगी साधक को स्वप्न में दर्शन देती है और साधक के मन में जो प्रश्न हो उस का उतर देती है।

डाकिनी

डाकिनी की परिगणना भी राक्षस-वृति की अशरीरी सूक्ष्म आत्माओं के अन्तर्गत की जाती है। इसे भी महामाया देवी का अंश माना जाता है। इस का रूप भी देखने में अति भयंकर होता है।

जो साधक डाकिनी की सिद्धि करते हैं वे पहले अपने लिए साधना-स्थल का चयन करते हैं। साधना करने पर बैठने से पहले उनके लिए निवस्त्र होना अनिवार्य है। वे अपने निकट माँस और मदिरा रखते हैं। वे एक दीपक को जो चार मुखा होता है चर्बी से प्रज्जवलित करके जप करने बैठ जाते हैं। 21 मालाएँ पूरी करने के बाद हाथ में रखी पीली सरसों को सभी दिशाओं में फैंककर पुन: जप पर बैठ जाते हैं। तभी साधक को डाकिनी का भयंकर रूप दिखाई देगा। डाकिनी साधक से काम पूछती है। साधक डाकिनी को जो भी काम बतलाता है वह उसे

---

1. संदर्भ : तंत्र और प्रेत विद्या - डा. राधा कृष्ण श्री माली

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तत्काल पूरा कर देती है।

यक्षिणी

यक्षिणियों को देवी वर्ग प्राप्त है। इन में पिशाचिनी जैसी आसुरी शक्तियाँ नहीं हैं। इन में सहनशीलता बहुत है। ये शीघ्र ही साधक पर प्रसन्न होकर उसे उनके मन के अनुकूल वरदान देती हैं अथवा उस की मनोकामना पूर्ण करती हैं। यक्षिणी की उपासना सात्विक भाव से की जाती हे। इस की साधना करते समय साधक को स्वच्छ वस्त्र धारण करना पड़ते हैं। यक्षिणी का मंत्र केवल मानसिक होता है।

यक्षिणी को एक देवी के रूप में पूजा जाता है। अत: साधक जब यक्षिणी-साधना के लिए बैठता है तो वह प्रतिदिन कुँवारी कन्याओं को भोजन करवाता है और उन्हें समुचित दान देता है।

यक्षिणी के कई रूप हैं जिन में निम्न उल्लेखनीय है :

1. कुबेर यक्षिणी
2. लक्ष्मी यक्षिणी
3. कामेश्वरी यक्षिणी
4. कनकावती यक्षिणी
5. रतिप्रिया यक्षिणी
6. घंटा यक्षिणी
7. महेन्दी यक्षिणी
8. शंखिनी यक्षिणी
9. सुलोचना यक्षिणी
10. स्वामीश्वरी यक्षिणी
11. भूत लोचना यक्षिणी
12. अशुभभक्षया यक्षिणी
13. अच्छिष्ट यक्षिणी
14. सुशोभना यक्षिणी
15. श्मशानी यक्षिणी
16. कापालिनी यक्षिणी आदि।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

किन्नरी

किन्नरी की परिगणना देव योनियों के अंतर्गत की जाती है। तांत्रिकों की दृष्टि से यक्षिणी और किन्नरी दोनों आसुरी वृतियाँ नहीं हैं। इस में सहन शक्ति अत्याधिक है, अत: इसे शीघ्र ही सिद्ध किया जा सकता है। किन्नरी को तांत्रिक मांत्रिक तरीकों से वश में नहीं किया जा सकता। किन्नरी के विषय में कहा जाता है कि यह परा शक्ति देवी दुर्गा की उपासिका और सहचरी है। इसकी जो साधना करता है उसे वह सब प्राप्त हो जाता है जो उसके भाग्य में भी नहीं होता है।

इसकी साधना का वहीं विधान है जो यक्षिणी साधना का है। किन्नरी पराशक्ति के भी कई रूप हैं जिनमें निम्न उल्लेखनीय हैं:

1. दिवाकर किन्नरी
2. विशाला किन्नरी
3. सुभगा किन्नरी
4. मनोहारी किन्नरी
5. सुरति प्रिये किन्नरी
6. मंजुघोषा किन्नरी
7. अश्व मुखी किन्नरी आदि।

चुड़ैल

चुड़ैल की परिगणना दुरात्मा के अंतर्गत की जाती है। ऐसी प्रेतात्माएँ दूसरों को प्रताड़ित करती हैं। लोकमानस इन्हें पिशाचिनी वर्ग में परिगणित करता है। इन चुड़ैल के विषय में कहा जाता है कि इसका रंग काला होता है। इस के बाल बिखरे हुए होते हैं। इनके दान्त बाहर निकले होते हैं। इन का रूप अति भयंकर होता है। जब भी यह किसी व्यक्ति को देखती हैं उसे अपना रूप दिखाकर डराती हैं। प्राय: ये अर्द्ध रात्रि के समय विचरण करती हैं। इनका कद लम्बा होता है और ये लम्बे-लम्बे डग भरती हुई चलती हैं।

वैसे भी समाज में जो महिला कुरूप हो, दुराचारी हो, वाचाल

संदर्भ : तंत्र और प्रेत विद्या : डा. राधा कृष्ण श्री माली

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

हो, लड़ाकी हो, कर्कशा हो लोग उसे भी चुड़ैल कहने लगते हैं। कई बार तो ऐसा भी होता है कि इस शब्द को गाली के रूप में प्रयोग किया जाता है। प्राय: लड़ाकी महिलाओं को कह देते हैं - 'चल चुड़ैल कहीं की। हम तुम से नहीं डरते हैं। अपना रूप किसी दूसरे को दिखाना।'

चुड़ैल का नाम सुन कर लोग प्राय: रात्रि के समय डर कर बाहर नहीं निकलते हैं। मेरे गाँव में एक चौकीदार था। उसका नाम 'कैला' था वह दस बजे के बाद हाथ में लालटेन लेकर गाँव का चक्कर लगाता था। लोगों को जागते रहने को भी कहता था। सन 1945 की बात है। सर्दियों का मौसम था। वह रात के 12 बजे पहरा देने निकला तो उसने देखा कि एक लम्बी महिला बाजार में घूम रही थी। वह डर गया और एक गली में छुप गया।

दूसरे दिन रात के समय उसने पुन: उस महिला को देखा तो वह उससे डरा नहीं उसे पकड़ लिया। वह दूसरे गाँव की युवा महिला थी। उसने बताया कि वह अपनी काम तृप्ति के लिए चुड़ैल का रूप धारण करके अमूक व्यक्ति के पास जाती है। उसने चौकीदार से अनुरोध किया कि वह इस रहस्य को किसी को न बताए।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अष्टम अध्याय

मसान

'मसान' भूत की ही श्रेणी में परिगणित है फिर भी भूत और मसान में अन्तर भी है। भूत बनने के कई कारण बताये गए हैं, यथा आत्महत्या, दुर्घटना में मृत्यु, मानसिक तनाव आदि। किन्तु मसान तांत्रिकों के द्वारा तैयार किए जाते हैं।

डुग्गर में प्रचलित लोक विश्वास के अनुसार जब कोई कुंवारा लड़का मरता है तो तांत्रिक उस मृतक का अपनी विलक्षण और रहस्यमयी विद्या से मसान उठाते हैं। जब भी किसी प्रेत साधक को किसी कुंवारे लड़के की मृत्यु का समाचार मिलता है, वह रात्रि के समय अकेला श्मशान घाट चला जाता है। वह चिखा का निरीक्षण करता है। जब चिखा बुझ जाती है तो वह चिखा के निकट बैठ जाता है और चिखा को भली-भाँति निहारता है।

जब चिखा शान्त हो जाती है तो वह चिखा के चारों ओर चार कील ठोंसता है। फिर उन चार कीलो में धागा लपेटता है। इस क्रिया के बाद वह मुर्गे की बलि देता है। जब वह इस प्रक्रिया को पूरा कर लेता है तो वह मंत्र का उच्चारण करता है। पहले मंत्र का प्रभाव यह होता है चिखा के चारों ओर धुन्ध जैसी दिखाई देने लगती है। दूसरा मंत्र जब वह पढ़ता है तो चिखा से अग्नि प्रगट होती है। जब तांत्रिक तीसरा मंत्र पढ़ता है तो मृतक उठ खड़ा होता है। वह किलकारी मारता है। उसकी प्रेत छाया प्रकट होती है। प्रेत छाया को जोगी तिलक लगाकर उसका अभिनंदन करता है। माना जाता है कि इस क्रिया से जो छाया मानव सन्मुख आता है उसकी आकृति ठीक वैसी ही होती है जैसी मृतक लड़के की थी। वह प्रकट होते ही साधक को प्रणाम करता है और उसके आदेश का पालन करने की प्रतिज्ञा करता है। 'तंत्र और प्रेत विद्या' पुस्तक के अनुसार मसान उठाने या जगाने के लिए साधक अपने साथ सुरा की एक बोतल, चमेली के फूल, लोवान, छाड़छड़ीला, लौंग, कपूर, काचरी, अतर, आटे का बना चौतुखा दीपक लेकर श्मशान

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

घाट में जाता है। वह पहले लोवान को धूप करता है। चौमुखा दीपक जलाता है। इस के बाद एकाग्रचित होकर मंत्र पढ़ता है। कुछ समय बाद मसान चिखा से जाग उठता है और वह हाहाकार मचाता है। जैसे ही मसान जागता है उसे अतर के छीटें तांत्रिक देता है। वह सुरा का अर्घ्य देता है। वह चमेली फूलों से मसान का स्वागत करता है और शेष सामग्री उसे समर्पित करता है। इस क्रिया के बाद मसान तांत्रिक के नियंत्रण में आ जाता है और वह उससे मनचाहा काम लेता है।

मई 2002 में लेखक प्रात:काल साढ़े चार बजे भ्रमणार्थ अपने घर से झज्झर नाला की ओर बढ़ा। झज्झर नाला के पूर्व में सुन्दरानी गाँव का श्मशान घाट था और नाला के पश्चिम में पैंथल गाँव का श्मशान घाट था। लेखक सड़क पर चल रहा था। सड़क में एक मोड़ था। लेखक ने मोड़ लांघा तो उस की दृष्टि सुन्दरानी के श्मशान घाट पर पड़ी। श्मशान घाट में लेखक ने एक युवा लड़के को देखा जिसके पूरे शरीर से आग की लपटें निकल रही थीं। लेखक यह दृश्य देखकर आगे बढ़ा। नाले पर पुल था। पुल के निकट लेखक ने दो व्यक्तियों को देखा। उनमें गाँव के एक राजनेता बंसी लाल खजूरिया और दूसरे साई दास बैठे थे और वे दोनों भय से काँप रहे थे। लेखक ने दोनों से डरने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्होंने श्मशान घाट में एक मसान को खड़ा देखा। उसके शरीर से आग की लपटें निकल रही थीं। यहाँ आसपास अवश्य कोई तांत्रिक छुपा हुआ है जो मसान उठा रहा है। हमें उसे ढूंढना चाहिए।

मैंने सन 2002 में 21 से 23 जनवरी तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल की ओर से साँचा विद्या तथा पारम्परिक लोक विद्या पर चिन्तपूर्णी (हिमाचल) में एक सेमीनार में भाग लिया था। उस सेमीनार में वैज्ञानिकों, तांत्रिकों, ज्योतिषियों और लोक वार्तािवदों ने भी भाग लिया था। इसी सेमीनार में एक विद्वान ने भूतों-प्रेतों और मसान पर शोध पत्र पढ़ा और कहा कि भूत-प्रेतों का प्रमाण पहाड़ों में जलती वे मशालें हैं जो हम नंगी आँखों से देखते हैं।

किन्तु वैज्ञानिकों ने शोधकर्ता के तर्क को काटते हुए कहा कि

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पहाड़ों में जो आग की मशालें दिखाई देती हैं, वे वास्तव में पहाड़ों में मरे उन पशुओं की हड्डियों का फासफोर्स होती हैं जो जमीन में दबी हुई हैं। मेरे मस्तिष्क में भी फासफोर्स की ही बात बार-बार अनुगूंजित हो रही थी। मैंने अपने साथियों से कहा कि जिसे आप मसान समझ रहे हो वह वास्तव में फासफोर्स है जो अग्नि की भाँति जलता है।

किन्तु उन दोनों ने मेरी बात को नहीं माना। वे कहने लगे-वैज्ञानिकों की थ्यूरी गलत है। उन्होंने अपने पूर्वजों से जो सुना है, वह ठीक है। मैंने उन्हें वही खड़ा किया और श्मशान घाट चला गया। वहाँ मुझे सब सामान्य लगा। न कोई तांत्रिक मिला और न नर कंकाल।

मैंने उन दोनों को आश्वस्त तो किया किन्तु मेरी बातों का उन पर कोई प्रभाव न पड़ा। घर जाते ही वे बीमार हो गए और कुछ महीनों के बाद मर भी गए। मैंने पुनः एक परा विज्ञानी से सम्पर्क किया। उसे सारी घटना बताई। उसने कहा - मैंने जो देखा वह फासफोर्स भी नहीं था। फास फोर्स में आग तो दिखाई देती है किन्तु मानव नहीं।

मैं भी गंभीर सोच में पड़ गया। शायद वह फास फोर्स न हो। किन्तु वह दृश्य देख कर मैं डरा नहीं अतः उसका कोई दुष्प्रभाव मेरे मस्तिष्क पर नहीं पड़ा।

मसान से सम्बन्धित आधि-व्याधियाँ

डुग्गर प्रदेश में मसान से जुड़ी एक मुख्य आधि-व्याधि 'झड़ियाँ रोग' है। इस रोग का मुख्य कारण मसान की विभूति माना जाता है। डुग्गर के प्रख्यात शोधकर्ता डा. ओम गोस्वामी के अनुसार 'जडियाँ' से अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जो कुंवारे मरने वाले की चिखा की भभूत से एक विशेष प्रकार की जड़ी में मिलाकर किसी भी व्यक्ति को रोटी या किसी अन्य खाद्य-वस्तु में मिलाकर खिलाई जाती है।

जड़ियाँ प्रायः किसी महिला द्वारा अपने द्वेषी को खिलाई जाती हैं। माना जाता है कि जड़ियाँ खिलाने से मृतक का भूत जड़ी खाने वाले के शरीर में प्रवेश करता है। वह सम्बन्धित व्यक्ति को अति कष्ट देता है। उसे मानसिक और शारीरिक रूप से बीमार कर देता है। प्रभावित व्यक्ति की चिकित्सा जो व्यक्ति करता है उसे 'दुआला' अथवा स्याना

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कहा जाता है। दुआला का अर्थ है - दवा देने वाला।

नेटे - यह एक प्रकार की प्रतिज्ञा होती है। जड़ी लेने वाली महिला जड़ी देने वाले से यह वचन लेती है कि वह किसी भी स्थिति में उस का नाम प्रकाश में नहीं लाएगा।

रस्से पर चढ़ना

प्रभावित व्यक्ति की जो व्यक्ति चिकित्सा करता है उसे 'सौरिया' कहा जाता है। कहीं-कहीं गाँवों में उसे 'स्याना' भी कहते हैं। परिवार के लोग रोगग्रस्त व्यक्ति की चिकित्सा के लिए स्याना को बुलाते हैं। वह अपने ढंग से रोगी को देखता है। जब उसे विश्वास हो जाता है कि रोगी प्रेत-छाया से प्रभावित है तो वह प्रभावित व्यक्ति के गले में अभिमंत्रित धागा बांधता है और कुछ दिन उसका प्रभाव देखता है। निश्चित अवधि के बाद धागा का प्रभाव समाप्त हो जाता है। यदि धागा बांधने पर रोगी को कोई आराम नहीं पहुँचता है तो फिर उसे रस्से पर चढ़ाता है।

इस उपचार में एक रस्सा छत के साथ बांध दिया जाता है। स्याना रोगी को रस्सा पकड़ने के लिए कहता है। जैसे ही रोगी रस्सा पकड़ता है तो गारड़ी कारिका गायन प्रारम्भ करता है। गारड़ी के साथ और भी कई वाद्य कार आते हैं। कोई थाली बजाता है तो कोई ढोलक बजाता है। गारड़ी कारिका गायन में प्रेतात्मा की स्तुति करता है। उससे निवेदन करता है कि वह रोगी के शरीर में प्रवेश करें। रोगी के भीतर जब प्रेतात्मा प्रवेश कर जाती है तो वह नाचना प्रारम्भ करता है। तब लोक संगीतकार ढोल, थाल, कड़ा बजाना आरम्भ करते हैं। इसी क्रिया को रस्से पर चढ़ना कहा जाता है।

रोगी जब रस्से पर नाचता है तब स्याना प्रेतात्मा से प्रश्न करता है कि अपना जीवन से मृत्यु तक का वृत सुनाओ। तब रोगी के माध्यम से प्रेतात्मा अपना अता-पता बताने लगती है। यथा मेरा जन्म पैंथल गाँव में सावन मल बन्सोत्रा के घर में हुआ। मैं बारह वर्ष की आयु में बीमार हुआ। मेरे माता-पिता ने मेरी चिकित्सा तो करवाई किन्तु मैं ठीक नहीं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, ... mmu. Digitized by eGangotri

हुआ और मर गया।

मेरा संस्कार जिस दिन हुआ उस रात्रि के समय एक योगी ने मेरी चिखा पर एक अनुष्ठान द्वारा मुझे उठाया। उसने मेरी भस्म और हड्डियों में एक विशेष प्रकार की जड़ी मिलाई और गोलियाँ बना लीं। अब वह योगी इन गोलियों को महिलाओं को बेच कर धन अर्जित कर रहा है। प्रेत-योनि में मैं भी अति कष्ट में हूँ। अतः आप मेरे माँ-बाप से कहिए कि वे मेरी गति 'गया जी' में पिण्डदान देकर करवायें। स्याना प्रेतात्मा को आश्वासन देता है कि वह ऐसा ही करेगा। स्याना प्रेतात्मा से अनुरोध भी करता है कि रोगी के शरीर से बाहर आ जाए। माना जाता है कि जैसे ही प्रेतात्मा रोगी के शरीर से बाहर निकलता है तो रोगी स्वस्थ हो जाता है।

डा. ओम गोस्वामी के अनुसार रोगी व्यक्ति के नाचने और उछलने कूदने से पसीना छूटता है। इससे रोगी का रोम-रोम खुल जाता है। उसे खुला पेशाब जाता है, भीतर का मल निकलता है जिससे रोगी अपने आप को निरोग महसूस करता है। रोगी और उसके परिवार के लोग समझते हैं कि रोगी के भीतर से भूत निकल गया है। अतः वे स्याना का धन्यवाद करते हैं। वे स्याना और उसके साथी वाद्यकारों को पुरस्कार के रूप में धन राशि देते हैं। डुग्गर के पिछड़े क्षेत्रों में शारीरिक रोगों का कारण भूत-पिशाच का आक्रमण ही माना जाता है। किन्तु अब धीरे-धीरे ज्ञान का प्रकाश फैल रहा है। लोग समझने लगे हैं कि रोग का कारण वात, पित और कफ है। आहार की विकृति से पेट में सड़न पैदा होती है और उस विष से रोग उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार रूग्णता का कारण व्यक्ति का शरीर ही नहीं अपितु मन स्थिति भी है। जीवन शक्ति का केन्द्र हृदय नहीं अपितु मस्तिष्क है। अतः जो व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ रहेगा, वह रोगों से भी दूर रहेगा। 'रस्से पर चढ़ाना' की चिकित्सा प्रायः बरसात में की जाती है। इन दिनों शरीर से पसीना भी खूब छुटता है जिससे रोगी शीघ्र ही निरोगी हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

नवम अध्याय

सिद्धि ओर साधना

साधना का शब्दार्थ है निरन्तर कड़ा परिश्रम कर के किसी काम में निपुण होना या किसी कार्य में इतना अभ्यास करना कि वह सहज ढंग से होने लगे। अथवा किसी वस्तु को ऐसी स्थिति में लाना कि वह ठीक ढंग से या संतुलित रूप से संचालित हो सके। इसका एक अर्थ यह भी है कि किसी को अपने वश में करके उसे अपने नियंत्रण में रखना। परा-विद्या में साधना का अर्थ है किसी प्रेत या देव-आत्मा को अपने वश में करना और उससे अपनी इच्छानुसार काम लेना।

प्रेत साधना आज के इस वैज्ञानिक युग में अविश्वसनीय लगती है। तत्काल साक्षेय न होने के कारण इसे ढकोसला माना जाता है। किन्तु परा-विज्ञान पुष्टि करता है कि ऊर्जा और मन की एकाग्रता का अपना प्रभाव होता है। ऊर्जा और एकाग्रता पर तंत्र साधना के अनेकानेक रहस्य आधारित हैं, अतः यह साधना रहस्यमयी है।

साधना के प्रकार

साधना दो प्रकार की होती है :

1. सात्विक साधना
2. औघड़ साधना

1. सात्विक साधना : जप, तप, पूजा पाठ आदि द्वारा इष्ट को प्राप्त करना।

2. औघड़ साधना : इस साधना में माँस, मदिरा और मैथुन आदि द्वारा प्रेत साधना का विधान किया गया है।

देव साधना (सात्विक साधना)

प्रायः उच्च कोटि के संत, पंडित, विद्वान, पुरोहित आदि देव साधना द्वारा देवता के कृपा-पात्र बनते हैं ऐसे व्यक्ति किसी का बुरा कम किन्तु कल्याण अधिक करते हैं। यह जो भी वचन बोलते हैं वह प्रायः सत्य होता है। यह अपनी शक्ति से व्यक्ति का भूत, वर्तमान और

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

भविष्य भी बता सकते हैं। वे अपनी साधना से अपूर्व शक्तियाँ अर्जित कर लेते हैं और उन का उपयोग जन कल्याण के लिए करते हैं।

ऐसे साधक जिन व्यक्तियों को जो आर्शीवाद देते हैं या वरदान देते हैं या शुभकामनाएँ प्रदान करते हैं वे व्यक्ति प्रगति पथ पर अग्रसर रहते हैं और बड़ी शीघ्रता से सोपान पर सोपान चढ़ते जाते हैं। ऐसे साधकों का आर्शीवाद व्यक्ति को अनिष्ट से बचाता है। ऐसे साधकों का समाज सम्मान करता है और इन्हें महापुरुष, उच्च कोटि के संत के रूप में स्वीकार करता है। इन महापुरुषों में इतनी शक्ति होती है कि यह किसी का माथा देखकर उस की भाग्य रेखा पड़ सकते हैं।

वैज्ञानिक डा. बिल्डर मेन फिल्ड का कथन है कि मस्तिष्क में एक ऐसी पट्टी होती है तो रिकार्डिंग पद्धति के आधार पर काम करती है यह पट्टी मस्तिष्क के उस भाग में है जिसके बारे में कुछ विशेष पता नहीं लगाया जा सका। उन्हीं के अनुसार स्मरण शक्ति काले रंग की दो पट्टिकाओं में निहित हैं। यह पट्टिकाएँ लगभग 25 वर्ग ईंच क्षेत्रफल में होती हैं। इन की मोटाई ईंच के दसवें भाग जितनी होती है। जिसकी ये पट्टिकाएँ सचेत होती हैं उसकी भविष्यवाणियाँ भी सटीक रहती हैं।

परा-विज्ञान मानता है कि जिस की खोज विज्ञान नहीं कर पाया है, परा विज्ञान उसे खोजने में सफल रहा है। उच्च कोटि के संतों की स्मृति पट्टिकाएँ शेष लोगों से अधिक सक्रिय रहती हैं अतः वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष की जानकारी रखती हैं, लेखक ने कई ऐसे साधु संतों को देखा है जिस की स्मरण शक्ति विलक्षण थी। मैं राम नगर में स्वामी बलराज भारती के दशनार्थ पच्चीस वर्ष बाद गया। मैंने पच्चीस वर्ष पूर्व परा विज्ञान पर उन से जो प्रश्न पूछे थे उन्होंने वे सब मुझे बता दिए।

मैंने ऐसे कई संत भी देखते हैं जो व्यक्ति के माथे की रेखाएँ देख कर बता देते हैं कि उसका भविष्य क्या होगा।

मैं चतुर्थ श्रेणी का विद्यार्थी था। छुट्टी के बाद मैं दौड़ता-दौड़ता घर आया। मैंने अपने घर के आंगन में एक लम्बे साधु को खड़े देखा। उसने भी मेरी ओर देखा और बोला - 'बेटा तू बड़ा होकर लेखक

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बनेगा।' मेरी अभिरूचि इस भविष्यवाणी को सुनकर लेखन में बढ़ी और मैं लेखन में प्रवृत हो गया।

सन 1998 ई. में मैं गुजरात के बड्डनगर में घूमने फिरने सपरिवार गया। मैं पूरा बड्ड नगर घूम कर हाटकेश्वर मंदिर में आया तो वहाँ मेरी भेंट एक संत से हुई। बातों ही बातों में संत ने मुझे बताया कि दामोदर-भाई नरेन्द्र भाई जब नौ-दस वर्ष के थे तो वे अपने कुछ मित्रों के साथ मंदिर के प्रांगण में खेल रहे थे। उन दिनों मंदिर में एक महान संत ठहरे हुए थे। उन्होंने नरेन्द्र भाई को देखा और मुझे सम्बोधि त करते हुए बोले - देख लेना यह बालक एक दिन शंकराचार्य या चक्रवती सम्राट बनेगा। महंत ने कहा कि उस संत की भविष्यवाणी सत्य निकली। हमारे ही गाँव का वह बालक आज भारत का प्रधान मंत्री है। उस की ख्याति पूरे विश्व में है, अत: वह चक्रवर्ती ही तो है। मस्तिष्क की इसी रेखा को ज्योतिष की भाषा में भाग्य रेखा या कर्म रेखा भी कहा जाता है।

डा. बीबेन्स के अनुसार मस्तिष्क में ग्रे मैटर (भूरी-चर्बी जैसा पदार्थ) भरा होता है जिसे सूक्ष्म दर्शक यंत्र से देखा जा सकता है। वहाँ के एक-एक परमाणु में अगणित रेखाएँ पाई जाती हैं। मूर्खों में ये रेखाएँ बहुत ही कम होती हैं किन्तु जो लोग बुद्धिमान होते हैं उन की रेखाएँ गहरी होती है।

संत इन रेखाओं को बिना यंत्र के पढ़ लेते हैं और वे जो भविष्यवाणी करते हैं, वह प्राय: सत्य ही निकली है। मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा था कि फरीदकोट के एक सूफी पीर ने ज्ञानी जैल सिंह के बारे में कहा था कि वह एक दिन भारत का भाग्य-विधाता बनेगा। पीर की भविष्यवाणी सत्य निकली। ज्ञानी जैल सिंह भारत के राष्ट्रपति बने।

एक फकीर ने सरदार मनमोहन सिंह के विषय में भी भविष्यवाणी की थी। तब वह बहुत छोटे थे और पाकिस्तान में रहते थे। उस पीर की भविष्यवाणी सत्य निकली और सरदार मन मोहन सिंह भारत के प्रधानमंत्री बने।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ऊधमपुर के अंतर्गत चड़ेयाई गाँव के परा विज्ञानी अरविन्द पराशन ने सन 1998 में मेरे विषय में भविष्यवाणी की कि मैं केन्द्र के किसी संस्थान में स्थान प्राप्त करूँगा। उन की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। मैं साहित्य अकादमी दिल्ली में डोगरी की परामर्श समिति का सदस्य बना। मैं इस पद पर सन 2004 से 2007 तक बना रहा। मुझे संघ लोक सेवा आयोग नई दिल्ली में 'डोगरी-विषय' का विशेषज्ञ भी बनाया गया। मैं चार वर्ष सन 2011 तक संघ लोक सेवा आयोग दिल्ली भी आता जाता रहा। मुझे भी लगा कि परा विज्ञानी में इतनी शक्ति होती है कि वह किसी का भी भविष्य बता सकता है।

मेरे गाँव पैंथल में भी एक परा विज्ञानी रहते हैं। उन का नाम है - 'ऋषि पंडित'। स्थानीय लोग उन्हें सिद्ध पुरुष के नाम से भी अभिहित करते हैं। वे भी जब प्रसन्न मुद्रा में हों तो भविष्यवाणियाँ करते हैं। उन्होंने फरवरी 2003 में मेरे मित्रों के सामने मेरे बारे में भविष्यवाणी की कि तीन मास के अन्दर मेरा राष्ट्रीय सम्मान होगा। 29 अप्रैल 2003 को भारत के प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल-बिहारी वाजपयी जी ने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की ओर से मेरा सम्मान किया। यह सम्मान मुझे 'पाडर: लोक और संस्कृति' पर मिला। सन 2013 में उन्होंने पुनः भविष्यवाणी की कि मुझे एक और पुरस्कार एक वर्ष के भीतर मिलेगा। उनकी भविष्यवाणी सत्य निकली। मेरी पुस्तक 'किश्तवाड़ : संस्कृति और परम्परा' को वर्ष 2011 का सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार मिला। मैं सन 2014 में यह पुरस्कार लेने श्रीनगर गया।

सन 2019 में उन्होंने पुनः भविष्यवाणी की कि मुझे एक बहुत बड़ा राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार मिलने वाला है। 25 जनवरी 2020 को भारत सरकार ने पद्म पुरस्कारों की उद्घोषणा की तो पद्म श्री की सूची में मेरा नाम भी था। मेरे बड़े बेटे नलिनाक्ष के बारे में परा विज्ञानी भविष्यवाणियाँ करते रहे कि यह अपनी स्टेट छोड़ कर दूसरी स्टेट में बसेगा। उसके साथ वही हुआ। उसने सन 1990 में ग्रेजुएशन की। दो वर्ष जम्मू में भिलवाड़ा कम्पनी में रहा। बाद में पंजाब के लुधियाना नगर में चला गया। वहाँ से वह 2003 में गुजरात चला गया।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पराविज्ञानी अरविन्द पराशन ने उसके लिए भविष्यवाणी की थी कि उस का मकान किसी बड़े जलाशय के निकट होगा। वैसा ही हुआ। उसने अहमदाबाद के निकट शाँतिग्राम में फ्लैट लिया। यह फ्लैट एक कृत्रिम झील के निकट बना है।

मैं भविष्यवाणियाँ सुनता अवश्य था किन्तु उन पर अन्ध विश्वास नहीं करता था। मेरा विश्वास कर्मवाद पर था। पहले मैं कर्म करता था तत्पश्चात मुझे उस का फल मिलता था। मैं अपने काम को एक साधना मानता था और पूरी कर्मठता से अपने काम में जुट जाता था। किन्तु मैं जो भी काम करता था उस का पुरस्कार मुझे किसी न किसी रूप में अवश्य मिलता था। अतः मैं कभी निराश नहीं हुआ। मैं प्रारब्ध में अवश्य विश्वास करता था किन्तु मेरे विचार में प्रारब्ध तो मानसिक कर्म हैं जो स्वेच्छा पूर्वक, जानबूझकर तीव्र-भावनाओं से प्रेरित होकर किए जाते हैं। जिन कार्यों को विशेष मनोयोग से किया जाता है। उन का संस्कार बड़ा बलवान होता है। कभी-कभी आत्म दर्शी योगी भविष्य कथन करते हैं। इससे व्यक्ति के अन्तःकरण में एक विशेष प्रकार का वीजारोपण हो जाता है और फिर यदि उसे उपयुक्त वातावरण मिले तो वह फलीभूत भी होता है।

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। आत्मदर्शी संतों ने मेरे बारे में जो भविष्यवाणियाँ कीं मैं उन्हें सुन कर निष्क्रिय नहीं हुआ और न मैंने यह सोचा कि मैं वह सब पा लूंगा जो मेरे विषय में भविष्य वाणी में कहा गया है। भविष्यवाणियाँ सुन कर तो मैं और सक्रिय हुआ। यदि किसी ने मेरे लिए कहा कि मैं एक शोध कर्ता के रूप में मान्यता प्राप्त करूँगा तो मैं सक्रिय हो गया। मैंने अपना शोध का क्षेत्र बढ़ाया और पुस्तकों पर पुस्तकें लिखता गया। यदि मुझे किसी आत्मदर्शी ने बताया कि मैं भ्रमण अधिक करूँगा। मैं भविष्यवाणी सुन कर चुप नहीं रहा। मैं देश के कोने-कोने में घूमने लगा। मेरा घूमना चाहे मेरे शोध से सम्बन्धित था फिर भी मैं थका नहीं। निःसंदेह इस के लिए मैं आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं था फिर भी अल्पधन राशि से भी मैंने वह सब

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पा लिया जिसके लिए दूसरे लोग सरकार या अन्य संस्थानों से आर्थिक सहयोग प्राप्त करते हैं। भविष्यवक्ता तो केवल दिशा निर्देश देते हैं, प्रयास तो व्यक्ति को स्वयं करने होते हैं। जो प्रयास करता है, परिश्रम करता है मेरी दृष्टि में वही साधक है। चाहे वह मजदूर है, कृषक है, व्यवसायी है या कलाकार या लेखक।

मुझे कई भविष्यवक्ताओं ने बताया कि मेरे भाग्य में तीन घर हैं। तब मैं एक स्कूल में एक साधारण सा अध्यापक था। मेरे गाँव में मेरा पैतृक घर कच्चा था। भविष्यवाणी से उत्साहित होकर मैंने पक्के मकान का काम प्रारम्भ किया। तब मेरे पास धन का अभाव था। किन्तु माता-पिता का आर्शीवाद प्राप्त था। पहले मकान एक मंजिल का बना बाद में वही मकान दुमंजिल का बन गया।

सन 2009 में मैं एक साहित्यिक कार्यक्रम में भाग लेने किश्तवाड़ गया हुआ था। वहाँ भी मुझे एक परा विज्ञानी मिले और कहने लगे कि इसी वर्ष आप का एक नया मकान किसी दूसरे स्थान पर बनेगा।

मैं घर आया तो मैंने समाचार पत्र में हाऊसिंग बोर्ड की एक विज्ञप्ति पढ़ी जिस में लिखा था कि ऊधमपुर हाऊसिंग कॉलोनी में जिन के नाम प्लाट हैं, वे मकान बनायें। यदि ऐसा नहीं किया तो बोर्ड उन से प्लाट वापस ले लेगा। में असमंजस्य में पड़ गया। मेरा भी ऊधमपुर हाऊसिंग कॉलोनी में प्लाट तो था किन्तु वहाँ मैं मकान इस लिए नहीं बनाना चाहता था कि केदारनाथ में मुझे एक संत ने चेतावनी दी थी कि जहाँ मेरा प्लाट है वह क्षेत्र अभिशप्त है। वहाँ एक नाग की हत्या हुई है। जब तक नाग दोष से यह भूमि मुक्त न हो जाए तो मुझे वहाँ मकान नहीं बनाना चाहिए।

मैं अपना प्लाट देखने आया तो यह देख कर दंग रह गया कि मेरे मकान के साथ जो प्लाट था वहाँ प्लाट के स्वामी ने अपने घर में एक नाग मंदिर भी बनवाया था। मैंने खोज की तो पता चला कि वहाँ एक नाग और नागिन का जोड़ा रहता था। नाग की एक व्यक्ति ने हत्या

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

की और वह बीमार पड़ गया। अन्ततः नाग-दोष से मुक्त होने के लिए उन्होंने मंदिर बनाया। मैं आश्वस्त हो गया। मैंने वहाँ अपना दूसरा मकान बनाया। हमारा तीसरा मकान अहमद नगर के शाँतिग्राम में है जो मेरे बेटे ने खरीदा है। भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई मेरे तीनों मकान बन गए।

दिव्य दृष्टि

कई साधक सिद्धि द्वारा दिव्य दृष्टि प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। सिद्धि प्राप्त करने के बाद वे सन्दूक में बंद पड़ी पुस्तकें पढ़ लेते हैं। वे अदृश्य सूक्ष्म-आत्माओं के दर्शन कर लेते हैं। वे किसी के भी मन में प्रवेश करके उस के मन की बात जान लेते हैं। उन्हें दूसरे कक्ष में रखी वस्तुओं को भी देखने की शक्ति आ जाती है। ऐसे बहुत से साधक हैं जो अपनी इस शक्ति से लोगों को चमत्कृत करते हैं।

जिन दिनों डा. राजेन्द्र प्रसाद देश के राष्ट्रपति थे उनसे भी एक ऐसा सिद्ध पुरुष मिला था जिसे दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। राष्ट्रपति जी ने अपने कक्ष में बैठ कर जो लिखा उसने दूसरे कक्ष में बैठ कर सब पढ़ कर सुना दिया। वैज्ञानिकों का मत है कि ईथर की शक्ति द्वारा विचित्र बातें सुनी या देखी जा सकती हैं। कोई भी मनुष्य एस्ट्रल दृष्टि प्राप्त करके कई चमत्कारिक कार्य कर सकता है। इस शक्ति द्वारा वह दूसरों के विचार और उद्वेग भी जान सकता है।

वाक् सिद्धि

कई साधक ऐसे भी होते हैं कि वे जो भी भविष्यवाणी करते हैं वह सत्य सिद्ध होती है। ऐसे पुरुषों को लोक समाज अति सम्मान की दृष्टि से देखता है। मेरे पिता के अध्यात्मिक गुरु निम्बार्क संत बाबा जगन्नाथ दास ने मेरे बारे में कहा था कि यह बालक हिन्दी से कमाई बढ़ायेगा। मैं बड़ा हुआ। मैट्रिक-प्रभाकर की परीक्षा-उतीर्ण की। मेरी नियुक्ति हिन्दी अध्यापक के रूप में हुई। मैंने एम.ए. हिन्दी में किया तो मैं हिन्दी का प्राध्यापक बना। मैंने पुस्तकें हिन्दी में लिखीं। पुरस्कार भी हिन्दी पुस्तकों से प्राप्त हुए।

मेरी छोटी बहन शाँति के लिए उन्होंने कहा था कि यह लड़की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विधवा हो सकती है। इसे पढ़ाएं। वह पढ़ लिख गई। अध्यापिका नियुक्त हुई और विवाह के कुछ ही वर्षों बाद विधवा भी हो गई। पिता-गुरु की वाक सिद्धि से हमारे परिवार का मार्ग-दर्शन हुआ, अतः परिवार की श्रद्धा उन के प्रति बनी रही। खजूर सिंह ठाकुर की पुस्तक 'डुग्गर के लोक मंत्र' पुस्तक के अनुसार मुड़-कंडा जड़ी की दातुन एक वर्ष लगातार यदि साधक करता रहे तो उसे वाक सिद्धि हो जाती है। साधक जो भी भविष्यवाणी करता है, वह सत्य सिद्ध होती है।

हवा में समाधि लगाना

जो योगी धरती से ऊपर उठ कर हवा में समाधि लगाते हैं उन के विषय में वैज्ञानिकों और परा-विज्ञानियों के मत भिन्न-भिन्न हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार जो वस्तु हम हवा में फैंकते हैं भूमि आकर्षण के कारण वह वस्तु पुनः धरती में आ जाती है। किन्तु जो योगी हवा में समाधि लगाते हैं, वे धरती पर क्यों नहीं गिरते।

इस सम्बन्ध में परा विज्ञानी सी.डब्ल्यू लेड बीटर का मत है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि साधक को प्रेत अपने हाथों द्वारा भूमि से ऊपर उठा लेता है। प्रेत तो सूक्ष्म जीवी है, किसी को दिखाई नहीं देता। दर्शक यह समझता है कि साधक हवा में बैठा है।

'युवर्लोक' पुस्तक के लेखक लेड बीटर के अनुसार इसकी दूसरी विधि भी है। अध्यात्म-विद्या पृथ्वी के गुरुत्व-आकर्षण को समाप्त करने या उसे विपरीत दिशा में बदल देना जानती है।

इसी क्रिया के द्वारा भूमि पर से उठने का कार्य किया जा सकता है। प्राचीन भारत में एवं अटलांटिस में इसी क्रिया के द्वारा विमान हलके बनाकर आकाश में उठाए और उड़ाए जाते थे। माना जा सकता है कि भारत के योगी इस विद्या को जानते हैं और उस का प्रदर्शन हवा में बैठ कर सकते थे।

---

1. भुवर्लोक : सी.डब्ल्यू. लेड बीटर पृष्ट - 122

सौजन्य : देश बन्धु डोगरा 'नूतन'

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

औघड़ साधना

भूत-प्रेत, पिशाच, पिशाचिनी, जोगन, यक्षिणी, बेताल आदि प्रेतात्माओं को वश में करने के लिए जो साधना की जाती है उसे औघड़ साधना कहा जाता है। इस साधना में साधक को माँस, मदिरा, मैथुन आदि की अनुमति होती है।

औघड़ साधना के लिए उपयुक्त स्थान श्मशान घाट माना जाता है। श्मशान साधना आत्मिक शक्ति को बलवान बनाती है। इस साधना से मनुष्य या साधक को नई शक्ति मिलती है। जो व्यक्ति श्मशान घाट में साधना करता है वह वीतरागी हो जाता है। सुख-दु:ख उस के लिए एक समान हो जाते हैं। साधक को मोह-माया से छुटकारा मिलता है। यह एक प्रकार की असात्विक साधना है।

यह साधना साधक के लिए मरणोपरान्त घातक सिद्ध हो सकती है। अत: ऐसी साधना करते समय साधक को कुकर्मों और कुकृत्यों से बचना चाहिए नहीं तो उस का परलोक बिगड़ भी सकता है। जो साधक औघड़ साधना में रत रहते हैं उन्हें लोक समाज सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता। उन्हें पाखंडी, लालची, परपीड़क दुराचारी, व्यभिचारी, अधार्मिक और क्रोधी समझता है।

ऐसे साधक से लोग दूरी बनाये रखते हैं और उन्हें आदर और सम्मान प्रदान नहीं करते।

प्रेत सिद्धि

प्रेत सिद्धि तामसिक वर्ग के अंतर्गत मानी गई है। इस सिद्धि को प्राप्त करने के लिए साधक को किसी एकान्त स्थान में बैठना पड़ता है। प्रेत को भगवान शिव का गण माना गया है, अत: साधक के लिए आवश्यक है कि वह जिस स्थान पर भी साधना के लिए बैठे वहाँ भगवान शिव की मूर्ति स्थापित करे। साधक के लिए आवश्यक है कि वह दतचित होकर सौ दिन तक प्रेत-विद्या से सम्बन्धित गुरू से ग्रहण प्रेत मंत्र का जप करे। जब उसकी साधना पूर्ण हो जाए और प्रेत उसे साक्षात् दिखाई दे तो तब उसे शिव जी की आहुति देकर उस की पूजा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

करनी चाहिए।

प्रेत सिद्धि के बाद साधक प्रेत से सम्बन्धित किसी भी रोग का उपचार कर सकता है। वह उन स्थानों को प्रेतों से मुक्त करवा सकता है जो स्थान प्रेत-बाधा के कारण अभिशप्त हों। जो व्यक्ति प्रेत को सिद्ध कर लेता है, कहा जाता है कि प्रेत उस के अधीन रहता है। वह प्रेत को जो भी आज्ञा देता है, प्रेत उस की आज्ञा का पालन करता है। प्रेत के लिए भी यह आवश्यक हे कि वह साधक को अपना स्वामी माने और स्वामी के आदेश का पालन करे।

कई बार ऐसा भी होता है कि जो साधक प्रेतसिद्ध कर लेते हैं वे अपनी विद्या से दूसरों को क्षति भी पहुँचाते हैं। ऐसा करने पर प्रेत उनका जीवन नारकीय बना देते हैं, ऐसे व्यक्ति दरिद्रता और मलीनता का जीवन जीते हैं। प्रेत सिद्धि के अतिरिक्त पैशाचिक साधना के अंतर्गत निम्न सिद्धियों का भी उल्लेख मिलता है :

मोहिनी-साधना

किसी को अपने वश में करने के लिए यह साधना की जाती है। कहा जाता कि मंत्र सिद्ध व्यक्ति अभिमंत्रित जल के छींटे ताम्र के बर्तन से निकाल कर जिस भी महिला या पुरुष पर फैंकता है, वह महिला या पुरुष उस पर मोहित हो जाता है। इस मंत्र का साधक मोहित महिला का दुरुपयोग भी करता है।

मारण-साधना

जो साधक मारण-साधना में सिद्धहस्त हो जाता है वह अपने शत्रु को इस मंत्र की शक्ति से मार भी सकता है। यह साधना निकृष्ट कोटि में परिगणित है।

बेताल साधना

बेताल शक्ति के प्रतीक माने गए हैं। ये अनेकों प्रकार के कार्यों तथा मनोरथों की पूर्ति करने में सहायक होते हैं। इन्हें भी भगवान शंकर का एक गण माना जाता है। बेताल के भी कई रूप हैं। इनकी सिद्धि

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

की विधियाँ भी अनेक हैं। जो व्यक्ति बेताल सिद्ध करते हैं उनके सांसारिक मनोरथ तत्काल पूरे होते हैं। इन से जो भी इच्छा प्रकट की जाए ये उसे पूरा करते हैं।

डाकिनी साधना

जो साधक डाकिनी की सिद्धि करता है डाकिनी उसे वह सब प्रदान करती है जो वह उस से माँगता है।

पिशाचिनी साधना

जो साधक पिशाचिनी को सिद्ध कर लेता है वह उसके कान और मस्तिष्क में वर्तमान भूत और भविष्य से सम्बन्धित सभी रहस्य बता देती है। इसके अतिरिक्त कई लोग मुट्ठी पीर, गौ जोगिन, जोगिन तथा अग्नि बेताल आदि की साधना भी मन वांछित फल प्राप्त करने के लिए करते हैं।

डायन

जो महिला इर्ष्या-द्वेष भाव से यंत्र-मंत्र जादू-जड़ियों का प्रयोग दूसरे व्यक्ति का अहित करने के लिए करती है, डुग्गर का लोक समाज उसे डायन या डैन नाम से अभिहित करता है। जिस महिला को समाज 'डैन' घोषित करता है उस का सामाजिक सम्मान गिर जाता है। लोग उससे अति भयभीत रहते हैं और यदि वह दूर से ही दिखाई दे जाए तो वे उसे देखते ही घबरा जाते हैं। प्रायः ऐसी महिलाओं का समाज सामाजिक बहिष्कार कर देता है जिससे उस का जीना दूभर हो जाता है।

डुग्गर में प्राचीन काल से ही एक परम्परा चल रही थी कि जिस महिला पर डायन का कलंक लगता सरकारी सिपाही उसे उठा ले जाते और भिम्बर के निकट बने एक तालाब में डुबो देते। यदि महिला डूब जाती तो समझा जाता कि वह परिपक्व डायन थी। यदि वह न डूबती तो उसे बाहर निकाल देते। ऐसी महिलाओं के लिए समझा जाता था कि वे निर्दोष और निष्कलंक हैं।

'डुग्गर का इतिहास' पुस्तक में उल्लेख मिलता है कि तांत्रिक

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जिस महिला को डायन घोषित करता। राजा उसे दंडित करता था। किन्तु जम्मू नरेश महाराज रणजीत देव (1742-1781 ई.) ने एक राजादेश निकाल कर इस प्रथा पर अंकुश लगा दिया। वैज्ञानिकों के अनुसार संशय को यदि हम स्वीकार कर लें तो हमारा मस्तिष्क उन आशंकाओं को स्वीकार कर लेता है और अवास्तविकता को भी हम वास्तविकता स्वीकार कर लेते हैं। अतः वैज्ञानिकों के अनुसार डायनों का अस्तित्व पूर्णतः संदिग्ध है।

कुदृष्टि : हम दूसरों को या तो सुदृष्टि से देखते हैं या कुदृष्टि से देखते हैं। वैज्ञानिकों का मत है कि यही इवल आई (कुदृष्टि) परा विज्ञान में 'डायन' है।

धन को प्राप्त करने के लिए साधना

मेरे स्वर्गीय पिता सावन मल पाधा व्यापार में अपना बहुत सा धन लुटा चुके थे। धन लुटाने के बाद उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर हो चुकी थी। उनके लिए परिवार का पालन-पोषण करना भी कठिन हो रहा था।

धन का अभाव दूर करने के लिए उन्होंने लाटरी के टिकट खरीदना आरम्भ किए। उन्हें हर मास यही आशा रहती थी कि उनकी लाटरी खुलने ही वाली है। किन्तु वे हर बार निराश ही होते। वे निम्बार्क संत बाबा जगन्नाथ दास जी के घनिष्ठ सम्पर्क में रह चुके थे। पूजा-पाठी ब्राह्मण भी थे। साधु-संतों और तांत्रिकों के सम्पर्क में भी रहते थे। जम्मू निवास के दौरान वे कृष्ण ज्योतिषी के सम्पर्क में भी थे। उस के मंदिर में रह कर पूजा पाठ भी करते थे। उन्होंने सुन रखा था कि कृष्ण ज्योतिषी ने कर्ण-पिशाचनी सिद्ध की है जिस कारण वह एक बड़ा ज्योतिषी बना है। उसके पास धन की कोई कमी नहीं है। मेरे पिता भी सिद्धि प्राप्त कर के धन पाना चाहते थे।

वे प्रायः साधु संतों से मिलते रहते थे ओर उन से सिद्धियों की जानकारी लेते थे। एक बार एक तांत्रिक ने उन्हें बताया कि उनके घर में धन दबा पड़ा है। वे सिद्धि करें और धन प्राप्त कर लें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बात सन 1973 की है। मेरे पिता जी ने एक कमरे में अपना आसन-जमाया और सिद्धि करने बैठ गए। आसन पर बैठने से पूर्व उन्होंने मेरी बहनों को बुलाया और कहा 'मैं इक्कीस दिन के लिए आसन पर बैठ रहा हूँ। इस अवधि में मैं मौन रहूँगा। मेरे पास घंटी है। मैं एक बार घंटी बजाऊं तो आप समझ लेना कि मुझे प्यास लगी है। आप मेरे लिए पानी का गिलास ले आना। दो बार घंटी बजाऊँ तो चाय लाना, तीन बार घंटी बताऊँ तो खाना ले आना।

उन दिनों मेरी नियुक्ति हाई स्कूल टिक्करी में थी। मैं नौकरी से आता, उन्हें आसन पर बैठे देखता और चुप हो जाता। मैं भी उनकी साधना में कोई विघ्न नहीं डालना चाहता था। उन का पाठ पन्द्रह दिन तक चला। उसी रात्रि उन्होंने मेरी छोटी बहन को जोर से आवाज दी और उसे पानी लाने के लिए कहा। मेरी बहन पानी तो ले आई किन्तु उसने पिता जी को पानी का गिलास थमाते हुए पूछा - आप तो इक्कीस दिन की साधना पर बैठे थे। आप को तो बोलना ही नहीं था फिर आप क्यों बोले।

वे बोले - 'मेरी साधना भंग हो गई है। आज जब मैं साधना में बैठा तो एक महिला मेरे आसन के पास आकर बैठ गई और मुझसे पूछने लगी कि आप क्या पाने के लिए आसन जमा कर बैठे हो। मैंने उतर में कहा - 'मुझे एक तांत्रिक ने बताया है कि मेरे घर में धन ज़मीन के अन्दर दबा है। मैं धन पाना चाहता हूँ इस लिए आसन जमा कर बैठा हूँ।' वह महिला बोली- 'क्या वह धन तुम्हारा है?' तो मैंने उत्तर दिया - 'मेरा तो नहीं है पर जिस का भी है मैं यह धन पाकर आधा अपने परिवार पर खर्च करूँगा और आधा धन राधा-कृष्ण मंदिर के निर्माण में खर्च करूँगा। वह महिला बोली - तुम्हारी दूसरी इच्छा तो जरूर पूरी होगी। मंदिर तो बनेगा पर तुम नहीं बनवाओगे कोई दूसरा सम्बन्धी बनायेगा। रही धन की बात वह तो उसी को मिलेगा जिस का यह ध न है। यह धन तुम्हारा नहीं है, अत: तुम्हें नहीं मिलेगा।

मेरे पिता जी को वह धन प्राप्त नहीं हुआ किन्तु उनकी एक

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इच्छा उन्हीं के नाती मेरी बड़ी बहन के सबसे छोटे बेटे विधु मगोत्रा ने पैंथल गाँव में भव्य राधा कृष्ण मंदिर का निर्माण करवा कर पूरी की दी।

इसी प्रकार एक दिन गाँव का ही एक राजगिर मेरे पास आया और मुझे कहने लगा कि हम लोग अमूक व्यक्ति के घर डयोढ़ी बनने के लिए खुदाई कर रहे थे तो नींव खोदते वहाँ एक बर्तन पड़ा देखा। हमने वह बर्तन घर के स्वामी को दिखाया तो वह बोला यह मेरी माता की 'बलटोई' है। उसने हमें छुट्टी दे दी। जब हम दूसरे दिन वहाँ काम करने गए तो वह बर्तन वहाँ नहीं था। डयोढ़ी तो बन गई किन्तु कुछ समय के बाद उनके घर कई उत्पात हुए। राजगिर मुझे बार-बार पूछता था कि कहीं यह सब उस धन के कारण तो नहीं हुआ। किन्तु मैं चुप रहा।

गाँव में मेरे ही एक समव्यस्क ने मुझे बताया कि उसके दादा को भी कालिका मंदिर के निकट से दबा हुआ धन मिला था। उस धन के मिलने के बाद मेरा पिता पागल हो गया और पागल ही मरा। सन 2002 में कालिका मंदिर के महंत मणि महेश के गुरु ने उन्हें बताया कि जिस कुटिया में वे रहते हैं उसके नीचे दबा हुआ धन है। मणि महेश ने उन धन को प्राप्त करने के लिए कुटिया को तोड़ने का मन बनाया तो ऐसी परिस्थितियाँ बनीं कि उन्हें यह स्थान छोड़ कर ही भागना पड़ा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दशम अध्याय

परा-विद्या और लोक अनुष्ठान

अनुष्ठान शब्द की व्युत्पति 'अनु' उपसर्ग तथा स्था धातु के साथ 'ल्यूट' प्रत्यय के जुड़ने से हुई है। संस्कृत में इसका अर्थ है : किसी क्रिया का आरम्भ करना। शास्त्रानुसार किसी काम को नियम पूर्व करना आदि। किन्तु मानक हिन्दी कोश में इसका अर्थ है - फल के नमित किसी देवता की जाने वाली आराधना।

किन्तु लोक मानस में लोक अनुष्ठान से तात्पर्य है : मानव की आदि वृति या सोच और उस सोच का परम्परा ढंग से निर्वाह करना। यथा : जड़-जंगम प्रकृति में एक जैसी आत्मा में विश्वास करना, प्रकृति तथा परा-शक्तियों पर नियंत्रण की बजाय उन से सद्भावना की कामना करना। परम्परा का निर्वाह करना। परा प्राकृतिक शक्तियों से डरना, परा-शक्तियों में विश्वास करना, भूत-प्रेतों में विश्वास करना और उनसे डरना। लोक विश्वासों का अनुकरण करना तथा परा-कथाओं में विश्वास करना आदि। लोक धर्म से जुड़ी आस्थाओं और परम्पराओं का निर्वाह कना, जादू-टोने में विश्वास करना, लोक मंत्रों द्वारा परा-शक्तियों को संतुष्ट करना ये सभी विशेषताएँ लोक अनुष्ठान और लोक धर्म का एक हिस्सा हैं।

धार्मिक अनुष्ठान और लोक-अनुष्ठान में अन्तर

धार्मिक अनुष्ठान शिष्ट और उच्च वर्ग के देवताओं को सन्तुष्ट करके फल प्राप्ति के लिए किए जाते हैं जबकि लोक-अनुष्ठान संतान वृद्धि, सुरक्षा, पशुओं की सुरक्षा, प्राकृतिक-प्रकोप से सुरक्षा, अच्छी फसल और प्राकृतिक और परा प्राकृतिक अर्थात् परा शक्तियों के प्रकोप से बचने के लिए किए जाते हैं।

धार्मिक अनुष्ठानों को कोई पढ़ा लिखा विद्वान पंडित या पुरोहित अपने जजमानों से करवाता है। किन्तु लोक-अनुष्ठानों में किसी पंडित या पुरोहित की आवश्यकता नहीं होती। इन अनुष्ठानों को गाँव के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

लोग या तो सामूहिक रूप से आयोजित करते हैं या किसी 'स्याना' से करवाते हैं। 'स्याना' डोगरी शब्द है। जिस का अर्थ है - प्रेत या लोक विद्या अर्थात परा विद्या को जानने वाला। कई लोक-अनुष्ठान घर की महिलाएँ भी आयोजित कर लेती हैं।

अनुष्ठान-कर्ता

प्रेत-सम्बन्धी अनुष्ठान सम्पन्न करने के लिए डुग्गर में एक निश्चित अनुष्ठान वर्ग है। इसके अन्तर्गत निम्न पद के लोगों को परिगणित किया जाता है :

दोआला

डा. ओम गोस्वामी के शब्दों में 'दोआला' शब्द के दो अर्थ हैं (1) देवता की विनती अर्थात् प्रार्थना करने वाला (2) दवाई देने वाला। दवाई से तात्पर्य है - जड़ी देना। जड़ी से तात्पर्य है ऐसी वस्तु जिस में कोई अदृश्य शक्ति समाहित है। जब किसी को यह जड़ी किसी वस्तु में मिलाकर किसी शत्रु पक्ष के व्यक्ति को खिला दी जाती है तो अदृश्य शक्ति भी उस जड़ी के साथ खाने वाले के भीतर प्रवेश कर जाती है। वह जड़ी खाने वाले व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक कष्ट देती है। दुआला अपनी विद्या से प्रभावित व्यक्ति को प्रेत-रोग से मुक्त करता है। दुआला के लिए डोगरी में एक और शब्द प्रयुक्त होता है जिसे 'नाथ' भी कहते हैं। यह शब्द नाथ पंथ से सम्बन्धित है, अतः यह माना जाता है कि परा-विद्या के प्रचलन में नाथों का भी हाथ है।

किन्तु डुग्गर के लोक-समाज में दोआला और 'नाथ' दोनें को अलग-अलग माना जाता है। नाथ ढोल बजाता और कारिका गाता है जबकि दुआला नाचता और भविष्यवाणियाँ करता है।

दोआला के विषय में माना जाता है कि उसके भीतर देवात्मा प्रवेश करती है तो वह नाचता है। दोआला प्रेतग्रस्त लोगों की भी चिकित्सा करता है। वह जादू-जड़ी के दोष को भी दूर करता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

गारड़ी

गारड़ी का काम है, लोक देवी देवता की कारिका का गायन करके उसे जागृत करना। जब देवता जागृत हो जाता है तो वह अपने चेलों में प्रवेश करता है। चेले गारड़ी के ढोल की थाप पर नाचते हैं। डा. गोस्वामी की पुस्तक 'डोगरा लोक संस्कृति ते अनुष्ठान परम्परा' के अनुसार गारड़ी अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखते हैं और इन का मुख्य काम है ढोल बजाना। गारड़ी लोक देवी-देवता सम्बन्धी अनुष्ठान ही नहीं करवाते हैं अपितु पूर्वजों की पूजा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जोगी

जोगी का मुख्य काम है देवता के स्थान में उपस्थित होकर उस की स्तुति में कारिका गाना। जोगी का परम्परित वाद्‌य यंत्र है चकारा और किंग। ये जातर उत्सव में भी भाग लेते हैं और बीच-बीच में देवी देवता को प्रसन्न करने उसके स्थान पर भी चक्कर लगाते हैं। इस क्रिया को डोगरी में 'जगा देना' कहते हैं।

जोगी हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी हैं। इन का सम्बन्ध नाथ पंथ से रहा है, अतः ये अपनी कारिकाओं में नाथ सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को भी जोड़ देते हैं और गुरु गोरखनाथ के नाम पर शिष्यों को आर्शीवाद भी देते हैं।

गसाई

गसाई डुग्गर में शिव मंदिरों के पुजारी हैं। इन का काम भगवान शिव से सम्बन्धित लोक अनुष्ठान करवाना तथा शिव-भक्ति का प्रचार और प्रसार करना है। लोक अनुष्ठानों के क्रियान्वयन में इन की भूमिका भी अति महत्वपूर्ण है।

यह प्रेत बाधा की लोक विधि के अनुसार चिकित्सा भी करते हैं और परा विद्‌या से सम्बन्धित ज्ञान लोगों तक पहुँचाते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

भोशकी

सती मंदिर या देहरी के पुजारी को भोशकी कहा जाता है। इसका मुख्य काम है सती मंदिर की देख-रेख करना और सती की लोक विधि के अनुसार पूजा करना। माना जाता है कि सती भोशकी के माध्यम से अपने सेवकों को आर्शीवाद देती है। सती मंदिरों में जो चढ़ावा चढ़ता है, उस पर भोशकी का अधिकार होता है।

पढ़ीन

इन को 'स्याना' भी कहा जाता है। इन के विषय में कहा जाता है कि ये परा-विद्या में निपुण होते हैं। इन्होंने कई सिद्धियाँ प्राप्त की होती हैं। जिन का उपयोग ये लोक-कल्याण के लिए करते हैं। इन का काम प्रेतबाधा से ग्रसित लोगों की चिकित्सा निःस्वार्थ भाव से करना है। ये जिन परा-शक्तियों के वाहक होते हैं उन की पूजा ये लोक परम्परा के अनुसार करते हैं। इनमें भूतों-प्रेतों और डायनों को नियंत्रण में रखने की शक्ति होती है। ये दुरात्माओं के कीलने की शक्ति रखते हैं।

गुराही

शिव सम्बन्धी अनुष्ठान यथा गुसेंतन का संचालन और आयोजन जो अनुष्ठानकर्ता करवाते हैं डोगरा-समाज में उन्हें गुराही कहते हैं। इन का काम शिव-आराधना द्वारा दुरात्माओं को प्रभावित व्यक्ति से मुक्त करना भी है। ये 'शिव-जग्ग' का आयोजन भी करवाते हैं। ये मेघ प्रजाति से सम्बन्ध रखते हैं।

साई

डुग्गर में सूफी दरवेशों की मजारों में जो व्यक्ति श्रद्धा-भाव से सेवा करते हैं उन्हें साई कहते हैं। ये पीरों के नाम पर प्रेतात्माओं से ग्रसित व्यक्तियों की लोकमंत्रों द्वारा चिकित्सा भी करते हैं।

पीर

डुग्गर में मुसलमानों के धर्म गुरुओं का एक वर्ग 'पीर' कहलाता है। गुज्जरों में इन पीरों का अत्याधिक प्रभाव है। ये भी प्रेत

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बाध ा ग्रस्त रोगी की चिकित्सा करते हैं।

डुबडुबे

इन्हें शनि देवता का पुरोहित माना जाता है। ये भी सिद्धि प्राप्त करके लोगों की चिकित्सा करते हैं। इन के अनुष्ठानों से भी कई प्रेत-रोगी ठीक हो जाते हैं।

चेला

जो लोकदेवता के देहरे की देखभाल और पूजा आदि लोक विधि के अनुसार करता है उसे देवता का चेला कहते हैं विश्वास किया जाता है कि चेले में देवता प्रवेश करके अपनी प्रसन्नता अथवा नाराजगी को प्रकट करता है।

कन्नियाँ

परा-विद्या से सम्बन्धित डुग्गर में एक और वर्ग भी है जिसे 'कन्नियाँ नाम से अभिहित किया जाता है। इस का काम है रोग ग्रस्त व्यक्ति को देख कर अपनी विद्या से यह बताना कि रोगी के रोग का कारण शारीरिक रोग है या भूत बाधा है।

प्रभावित व्यक्ति के परिवार का कोई भी व्यक्ति अपने घर से थोड़े से चावल लेकर जाता है। वह चावल कन्नियाँ की थाली में डालता है। कन्नियाँ अपने इष्ट देव के स्थान के सन्मुख बैठ कर थाली में रखे चावलों को देखकर रोगी के परिवार, स्थान और घर की जानकारी देते हुए बता देता है कि रोग का मूल कारण क्या है? यदि रोग का कारण शारीरिक है तो वह वैद्य या चिकित्सक से चिकित्सा करवाने के लिए कहता है। यदि रोग का कारण भूत-प्रवेश है तो वह रोगी की चिकित्सा 'दुआला' से करवाने का आदेश देता है। कई कन्नियाँ कन्न भी देखते हैं और चिकित्सा भी करते हैं। डुग्गर का लोक समाज कन्नियों से बंधा हुआ है, अत: वह उस पर विश्वास भी करता है।

लेखक भी कई बार कन्नियों से सम्पर्क करने में सफल रहा है। ऊधमपुर के निकट ही एक गाँव है -बड़ौला। वहाँ इन्द्रू (इन्द्र

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कुमार) कुम्हार नाम का एक कन्नियाँ कन्न देखता है। जब मैं उस के घर गया तो मैंने देखा वहाँ एक कमरे में उसने अपने ईष्ट देव का छोटा सा मंदिर निर्मित किया है जिसके भीतर देवियों की मूर्तियाँ हैं। उसके कमरे की दीवार में कई प्रमाण-पत्र, स्तुति पत्र, मान-पत्र शीशों में मढे हैं। इन में सेनाधिकारियों, पुलिस-अधिकारियों तथा राज्य के कई उच्चाधिकारियों के हस्ताक्षर हैं। बताया जाता हे कि उस ने अपनी विद्या से उच्चाधिकारियों को वे गोपनीय रहस्य बताये जो वे सुलझा नहीं पा रहे थे।

लेखक ने देखा कि वहाँ बड़ी भीड़ थी। स्थानीय एक सामाजिक कार्यकर्ता ने बताया कि इन्द्रू ने जोगन सिद्ध की है। वह उससे सहयोग लेकर लोगों की समस्याओं का समाधान करता है। वैसे पूरे डुग्गर में ऐसे कन्नियाँ सैंकडों में है जिन का व्यवसाय कन्न देखकर आजीविका चलाना है।

अनुष्ठान

डुग्गर में आदि व्याधि के बचाव के लिए निम्न उपाय अनुष्ठाता की सहायता से किए जाते हैं :

कुल देवता से सम्बन्धित अनुष्ठान

डा. ओम गोस्वामी के शब्दों में - यदि रोगी को यह विश्वास हो जाए कि रोग का कारण कुल देवता का कोप है तो वह निम्न अनुष्ठान करता है :

1. गले में दुप्पटा लपेटकर मुँह में घास का तिनका रखकर लोक देवता या कुल देवता की मूर्ति के आगे झुक कर क्षमा-याचना करता है।

2. प्रेत बाधा ग्रस्त या रोगी देव स्थान पर नाक रगड़-रगड़ अपनी भूलों पर पश्चाताप व्यक्त करते हुए देवता से क्षमा याचना करता है।

3. वह लोक देवता को प्रसन्न करने के लिए पशु की बलि देता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

4. वह प्रातः काल उठ कर देव स्थान की सफाई करता है।

5. वह सांयकाल देव स्थान पर आकर दीपक जलाता है।

6. प्रेत-रोग से ठीक होने पर वह कन्या पूजन या ब्राह्मण-भोज का आयोजन करता है।

डुग्गर में इस अनुष्ठान को 'पधैड़ी प्रथा' भी कहा जाता है। इस प्रथा का प्रचलन डुग्गर के ग्रामीण क्षेत्र में अब भी है। प्रायः डुग्गर का लोक मानस आधि-व्याधि का कारण लोक देवता की नाराजगी मानता है, अतः उसे तुष्ट करने के लिए क्षमा-याचना करता है।

चौकी अनुष्ठान

लोक देवी-देवताओं को प्रसन्न रखने के लिए चौकी-अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है। इस अनुष्ठान के अंतर्गत देवी-देवता की पूजा लोक विधि के अनुरूप की जाती है। इस अनुष्ठान में चेला, दोआला, जोगी, गारड़ी का सहयोग लिया जाता है। गारड़ी लोक देवता की प्रशंसा में कारिकाएँ गाता है। कारिकाओं में देवी-देवता की स्तुति की जाती है। उससे प्रार्थना की जाती है कि वह अपने श्रद्धाओं पर कृपा बनाये रखे।

दिन-बार : प्रत्येक चौकी के लिए दिन-बार निश्चित होता है, यथा

1. नाग देवता की चौकी शनिवार और ऐतवार को की जाती है।
2. लोक देवता की चौकी पूर्ण माशी के दिन की जाती है। इस दिन गारड़ी घर-घर जाकर ढोल बजाता है और देवता की स्तुति में कारिका गाता है।
3. सतियों की चौकी सोमवार और बुधवार के दिन आयोजित की जाती है।
4. हत्या की चौकी मोहरा-स्थापना के दिन-बार को दृष्टि में रखकर की जाती है।

चौकी-अनुष्ठान से अभिप्रायः लोक देवता की पूजा-अर्चना से भी है। इस के साथ लोक-आस्था जुड़ी हुई है। अतः देवता का चेला

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

चौकी के दिन घर में ही रहता है।

सौंगल स्नान

सौंगलों को देवता का प्रतीक मान कर इन्हें स्नान देने का अनुष्ठान डुग्गर में परम्परागत है। सौंगले लोहे की छड़ियाँ होती हैं। इन्हें पहले मिट्टी, गोबर और गाय के गूंतर से नहलाया जाता है। इसके बाद इन्हें दूध, दही और शहद से स्नान कराया जाता है। सौंगलों के ऊपर द्रुबा से जल छिड़क कर लोक मंत्र पढ़कर इसे जीवादान दिया जाता है। इसके बाद देवता के झुंड तथा सौंगल को कुल की परम्परा के अनुसार वस्त्र पहनाये जाते हैं।

सौंगल को जीवादान देने के बाद इन्हें देवता वर्ग में सम्मिलित कर लिया जाता है। देवता को आटे से बनी बबरियों का भोग लगाया जाता है। गारड़ी देवता की स्तुति में ढोल बजाता है। देवता को तुष्ट करने के लिए बकरे की बलि दी जाती है। बलि से पूर्व बकरे को पुष्प, चावल तथा पानी के छीटों से पूजा जाता है। बकरी को दवेता के सन्मुख खड़ा किया जाता है। यदि बकरे में कम्पन आए तो समझा जाता है कि देवता को बलि स्वीकार है। जैसे ही देवता बलि स्वीकार करता है उसकी गर्दन काट कर देवता को अर्पित की जाती है।

यदि बकरे में कंपन न आए तो समझा जाता है कि देवता को बलि स्वीकार नहीं है। तब देवता के आगे अनुनय-विनय करके उसे मनाया जाता है। बकरे का रूधिर एक बर्तन में रखा जाता है। फिर एक बच्चे को बुलाकर उस का पंजा रूधिर में रख कर उसकी छाप कुल देवता के मंदिर में लगाई जाती है। इसके बाद सभी को माँसाहारी भोजन परोसा जाता है। यह अनुष्ठान आदि कालीन लगता है।

हत्या सम्बन्धी अनुष्ठान

डा. ओम गोस्वामी के शब्दों में -'हत्या शब्द का प्रयोग हत्या के कारण लगने वाले पाप तथा मृतात्मा के प्रकोप से बचने के लिए यह अनुष्ठान किया जाता है। लोक विश्वास है कि जिस व्यक्ति की हत्या की जाती है, उसकी आत्मा भटकती रहती है, उसकी गति नहीं होती।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अशान्त आत्मा हत्यारे को दंडित करने का प्रयास करती है जिससे हत्यारा परेशान और अशान्त रहता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि मृतात्मा अपने परिवार के लोगों से प्रसन्न नहीं रहती, अतः वह परिवार के लोगों को भी दु:ख देती है। कई मृत महिलाओं की आत्माओं ने अपने मायके अथवा ससुराल के लोगों पर असन्तुष्ट रहने के कारण उन्हें दंडित ही नहीं किया अपितु हानि भी पहुँचाई।

लोक विश्वास है कि हत्यारा यदि अपना धर्म बदल ले तो मृतात्मा उसे कष्ट नहीं पहुँचाती। यही कारण है कि मृतात्मा के प्रकोप से बचने के लिए कई हत्यारे हिन्दूओं ने अपना धर्म बदल लिया और वे मुसलमान बन गए। ऊधमपुर गगेड़ा का जागीरदार ज्ञान चन्द चन्देल ने अपने ब्राह्मण पुरोहित की हत्या की। उसकी प्रेतात्मा के सन्ताप से बचने के लिए वह मुसलमान बन गया। कई बार ऐसा भी होता है कि प्रेतात्मा की इच्छाएँ अपूर्ण रह जाती है।। वह उन की तृप्ति प्रेत या भूत के रूप में भी करना चाहता है। इसी प्रकार अनजाने में कई महिलाएँ प्रेतात्माओं का शिकार हो जाती हैं उन्हें भी दु:ख भोगना पड़ता है।

पकड़ : (प्रेत-बाधा) प्रेतात्मा की पकड़ से छुटने के लिए परिवार के लोग किसी स्याने (पराविज्ञानी) को बुलाते हैं। वह अनुष्ठान द्वारा प्रभावित व्यक्ति को प्रेत-बाधा से मुक्त करवाता हे। इस से प्रभावित व्यक्ति प्रेत के प्रभाव से बच जाता है। इस अनुष्ठान में प्रेत को प्रसन्न करने के लिए माँस-मदिरा को भोग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रेतात्मा प्रभावित व्यक्ति को मुक्त करने के बाद अपने जाने का संकेत बंद दरवाजा खोल कर या वृक्ष की टहनी हिला कर देती है।

पशु पक्षियों की हत्या

डुग्गर में पशु-पक्षियों की हत्या का दोष लगने पर उन की मूर्तियाँ (मौहरे) स्थापित करनी पड़ती हैं। डा. ओम गोस्वामी के अनुसार ऐरमां की बावली में चिड़ी का मोहरा और कडग्हेल (जम्मू) गाँव में मुर्गे का मौहरा इस ओर स्पष्ट संकेत करते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

हत्या के संकेत

डा. ओम गोस्वामी ने हत्या के निम्न संकेत माने हैं :

1. घर में पशु रोग फैलना।
2. घर में लड़ाई झगड़ा होना।
3. चिकित्सा करवाने पर भी रोगी का ठीक न होना।
4. सुनसान स्थानों में दीप जलते दिखाई देना।
5. घर में रखे वस्त्रों में आग लगना।
6. चारपाई उलट जाना।
7. दु:स्वप्न आना।
8. शरीर में कंपन होना।
9. पेट में दर्द रहना।
10. पक्के चावलों में कीड़े दिखाई देना।
11. सब्जियों में रक्त के धब्बे दिखाई देना।
12. शुभ कार्यों में विघ्न बाधा आना।

हत्या के निवारणार्थ दो प्रकार की पूजा की जाती है :

(1) कच्ची पूजा (2) पक्की पूजा

कच्ची पूजा : कच्ची पूजा सात दिन तक चलती है। इस में जोगी या गारड़ी को बुलाया जाता है और वह कारिकाएँ तथा भजन गाता है। परिवार के लोग भी भजन कीर्तन में भाग लेते हैं।

पक्की पूजा : इस की विधि कुछ कठिन है। इस में 'स्याना' का सहयोग लिया जाता है। वह मृतक का मौहरा स्थापित करने में सहयोग देता है।

पक्की पूजा से यह अभिप्राय लिया जाता है कि मृतात्मा अब कुल पितरों में सम्मिलित हो गई है। पक्की पूजा में मौहरे (मूर्ति) को पाँच गव्य स्नान तथा पंज रत्नी स्नान कराना अनिवार्य है। मौहरा स्थापना के बाद यह मान लिया जाता है कि मृतक का वायावी रूप मौहरे में समाहित हो गया है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मौहरे को पक्की पूजा में बलि भी दी जाती है जिस में रोट, सात सब्जियाँ अनिवार्य हैं। रोट के ऊपर गिली मिट्टी का पुतला बनाया जाता है। कई स्थानों में बकरे की बलि भी दी जाती है। जो मिट्टी का पुतला बनाया जाता है उसे टीका भी लगाया जाता है।

वासक बांधना अनुष्ठान

इस अनुष्ठान से अभिप्राय है कि प्रेतात्मा के मौहरे की विधि पूर्वक स्थापना करना। 'वासक बांधना' की भी निश्चित तिथियाँ हैं और वे हैं:

आषाढ़ मास की पूर्णमाशी

प्रायः दोआला या स्याना के निदेशानुसार परिवार के लोग पूरी श्रद्धा के साथ आषाढ़ मास की पूर्णमाशी या कार्तिक मास की पूर्णमाशी के शुभ दिन वासक-बांधना अनुष्ठान का आयोजन करते हैं। इस आयोजन में कुल के लोग, परिजन भी भाग लेते हैं। इस दिन एक भण्डारा भी आयोजित किया जाता है जिसमें गाँव के लोग आमंत्रित होते हैं। कन्या पूजन को भी अनिवार्य माना जाता है। वासक-बांधना अनुष्ठान के पश्चात् परिवार के लोग सन्तुष्ट हो जाते हैं।

क्षेत्र बांध

यह एक प्रकार की ऐसी लक्ष्मण रेखा है जिस के भीतर प्रेत-प्रवेश नहीं कर सकते। प्रायः साधक सिद्धि द्वारा यह शक्ति प्राप्त करते हैं। जिस व्यक्ति को प्रेत-बाधा हो, तांत्रिक एक रेखा खींच कर उस व्यक्ति को उसके भीतर बैठा देता है। जो व्यक्ति इस लक्ष्मण रेखा के भीतर आ जाता है, भूत-प्रेत इस लक्ष्मण रखा का उल्लंघन करके प्रेतग्रस्त व्यक्ति के भीतर प्रवेश नहीं कर सकते। यह भी एक प्रकार की असात्विक साधना है। यह साधना साधक के लिए मरणोपरान्त घातक सिद्ध हो सकती है। अतः ऐसी पैशाचिक साधना से बचना चाहिए।

---

1. संदर्भ : डोगरा लोक संस्कृति ते अनुष्ठान परम्परा, डा. ओम गोस्वामी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जातर-अनुष्ठान

डुग्गर में लोक देवी-देवताओं के सम्मान में जातर अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है। जातर अनुष्ठान के भी कई भेद और प्रभेद हैं। यथा कुल देवता की जातर, ग्राम देवता की जातर, नाग देवता की जातर, जोगनी की जातर इत्यादि।

कुल देवता किसी विशेष कुल का अधिपति होता है, अत: उस की जातर में केवल एक विशेष कुल के लोग ही सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार की जातर को 'मेल' खारका या भंडारा कहते हैं।

ग्राम देवता की जातर में पूरा गाँव सम्मिलित होता है। इस जातर-उत्सव में दोआला, स्याना, गारड़ी, चेला जोगी भी आमंत्रित होते हैं। देवता की लोक विधि से पूजा करने के पश्चात् 'जातर' का आयोजन होता है। इसमें गारड़ी या जोगी देवता का आह्वान करता है। देवता की छाया जिस-जिस व्यक्ति के भीतर प्रवेश करती है वह हाथ से झुंडे लेकर देवता का नाम लेकर नाचना आरम्भ कर देता है। छाया दोआला में भी आती है। वह देवता की ओर से भविष्यवाणियाँ भी करता है। अंत में पशु-बलि के साथ यह उत्सव समाप्त हो जाता है।

जातरा के भी दो प्रकार हैं (1) दिन की जातरा (2) रात्रि की जातरा। माना जाता है कि रात्रि जागर पैशाची होती है। इनमें नर्तक माँस-मदिरा का खुला प्रयोग करते हैं। इस अवसर पर मशालें जगा कर जातर-स्थल को प्रकाश से आलोड़ित किया जाता है।

कुछ जातरें जोगनों से भी सम्बन्धित होती हैं। जुलाई और अगस्त जोगनो के महीने माने जाते हैं। कुछ 'जातरें' दिव्य देवी-देवताओं के सम्मान में भी आयोजित होती हैं, इनमें गगैह्ल और फुम्मनी इत्यादि नृत्यों का आयोजन किया जाता है।

जोगनों से सुरक्षा के लिए अनुष्ठान

डुग्गर के लोगों का विश्वास है कि जोगनें यदि क्रुद्ध हो जाए तो वे क्षति पहुँचा सकती हैं। अत: उन से बचाव के लिए भी अनुष्ठान

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

किए जाते हैं।

डुग्गर का लोक मानस विश्वास करता है कि डायने और जोगने कृष्ण जन्माष्टमी के पश्चात् पूर्णमाशी तक पक्षी या वायावी रूप में 'वासकुंड' में स्नान करने जाती हैं। मार्ग में उनकी दृष्टि यदि किसी व्यक्ति या घर पर पड़ जाए तो वे उसे क्षति पहुँचाती हैं। इस अनिष्ट से बचने के लिए उन दिनों लोग अपने घरों में पाँच पतरों वाले बन्ने की टहनियाँ अपने घरों की सौंगलों के साथ बांध देते हैं। लोक विश्वास है कि बन्ने पतरों में वह शक्ति है कि वह जोगनों और डैनों की कुदृष्टि से घर और व्यक्ति की सुरक्षा कर सकता है। वैज्ञानिकों का भी मत है कि बन्ने में रसायनिक गुण होते हैं। इनके उपयोग से लाभ लिया जा सकता है।

बल निकालने का अनुष्ठान

डुग्गर में प्रेत-बाधा ग्रस्त तथा रोगी व्यक्तियों को रोग से मुक्त करने के लिए 'स्याना' के सहयोग से बल निकालने की भी परम्परा रही है। बल में सात रंग-बिरंगी झंडियाँ, एक दीपक, कुछ पक्के अन्न के बबरू इत्यादि अभिमंत्रित करके चौराहे में रात्रि के समय रखे जाते हैं। माना जाता है कि जोगनें उन का भोग लगा कर सन्तुष्ट हो जाती हैं और रोगी को अपने प्रभाव से मुक्त कर देती हैं।

मैंने बचपन में देखा था कि चौराहों में बल की सामग्री बिखरी पड़ी होती थी। कुते उन को खा रहे होते थे। हमें आदेश था कि हम बल के ऊपर से न गुजरें। हम ऐसा ही करते थे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

एकादश अध्याय

यंत्र तंत्र मंत्र

यंत्र, तंत्र और मंत्र का परा-विद्या में एक विशिष्ट स्थान है। इसे गुप्त विद्या भी कहा जाता है। इस गुप्त विद्या का प्रावधान शैव, शाक्त, बौद्ध साहित्य में उपलब्ध है। मुख्य रूप से मंत्र और यंत्र में यह अन्तर है कि मंत्र पढ़ा जाता है और यंत्र लिखा जाता है। मंत्र पढ़ कर यंत्र प्रेतबाधा से ग्रसित या किसी भी रोगी को पहनाया जाता है। दुआला या स्याना कोई भी जो यंत्र-विद्या को जानता है वह प्राय: मंत्र पढ़ कर एक बती धुखाने के लिए देता है। रोगी को या घर में जब यह बती धुखाई जाती है तो इसके प्रभाव के कारण प्रेतात्मा उस स्थान को छोडकर चली जाती है और रोगी कुछ समय के लिए ठीक हो जाता है।

यंत्र के प्रकार

यंत्र भी दो प्रकार के हैं :

1. वाम-मार्ग से सम्बन्धित यंत्र
2. दक्षिण-मार्ग से सम्बन्धित यंत्र

वाम मार्ग से सम्बन्धित यंत्र :

1. जादू-टोना टोटका
2. दक्षिण-मार्ग से संबंधात यंत्र

ये यंत्र कल्याण-कारक होते हैं। ऋषि मुनि अपनी तपस्या से जो अर्जित करते थे वे जन-कल्याणार्थ उस का उपयोग करते हैं।

दक्षिण मार्ग में श्रीयंत्र, बीसायंत्र, दुर्गायंत्र, भद्रकाली यंत्र, महाकाली यंत्र, महामंगला यंत्र आदि परिगणित किए जा सकते हैं।

यंत्र का उपयोग

1. रोग-बिमारी को दूर कना।
2. शत्रु भय से मुक्ति
3. मुकद्दमा-बाजी में जीत।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

4. नौकरी की प्राप्ति।
5. व्यापार में बढ़ोतरी।
6. किया-कराया अर्थात् ओपरा रोग दूर करना आदि।

जादू

जादू लोक मानस द्वारा मान्यता प्राप्त है। जादू की विकसित स्थिति को अनुष्ठान कहा जा सकता है। जादू का आधार श्रद्धा और अंध -विश्वास है। जादू श्रद्धा-भाव के सहारे खड़ा है जबकि विज्ञान तर्कवाद पर स्थिर है।

जादू का उपयोग

1. जादू का उपयोग आधि-व्याधि से मुक्ति प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
2. इस से प्रेतात्माओं के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है।
3. जादू से मौसम पर नियंत्रण पाया जा सकता है।
4. जादू जानने वाले भविष्यवाणी कर सकते हैं।
5. जादू से भौतिक सुख-समृद्धि को प्राप्त किया जा सकता है।

यहाँ जादू में श्रद्धा का पालन किया जाता है वहाँ तर्क की उपेक्षा भी की जाती है। इस विद्या में बौद्धिकता या तर्कवाद को कोई स्थान नहीं दिया जाता। इस में विश्वास का भाव रहता है।

जादू की आवश्यकता क्यों पड़ी?

आदि मानव ने प्राकृतिक शक्तियों, प्रेतात्माओं तथा देव-आत्माओं को अपने पक्ष में करने के लिए इस का उपयोग अपने हित में किया। आदि माानव प्रकृति के रहस्यों को भी जानना चाहता था अत: उसने इसके लिए जादू का सहारा लिया।

जादू के प्रकार

जादू के निम्न दो प्रकार हैं :

1. **चिट्टा जादू (नूरी)**

यह जादू कल्याणकारी होता है। इससे रोगग्रस्त व्यक्तियों की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

चिकित्सा की जा सकती है। लोगों का मार्ग दर्शन किया जा सकता है।

2. **काला जादू**

यह जादू अहितकारी होता है। यह अपने विरोधियों को प्रताड़ित करने, उन का उत्पीड़न करने उन की मानसिक स्थिति को अस्थिर करने, किसी की प्रगति में बाधा आदि पैदा करने के लिए किया जाता है। यह प्रत्येक दृष्टि से अहितकारी है।

व्यक्तिगत अनुभव

मेरे पिता स्व. सावन मल पाधा को यह विश्वास हो गया था कि उनके व्यापार व्यवसाय में अवधान डालने, उन्हें दु:खी करने, उनकी आर्थिक स्थिति चौपट करने के लिए उन पर किसी ने जादू किया है। वह एक ऐसे व्यक्ति की खोज में थे जो जादू के प्रभाव को समाप्त करने की क्षमता रखता हो। अन्तत: ऐसा व्यक्ति मिल ही गया जिस की उन्हें खोज थी। वह व्यक्ति तहसील अखनूर का था। उसने आने से पूर्व मेरे पिता को अपनी फीस बता दी। पिता जी ने उस की फीस स्वीकार कर ली और वे उसे अपने घर पैंथल ले आए। वह सायंकाल के समय हमारे घर पहुँचा। उसने आते ही एक बोतल शराब और एक मुर्गा लाने का आदेश दिया। मेरे पिता जी ने इन दोनों की व्यवस्था का दायित्व मुझे सौंपा। मैं शराब को हाथ भी नहीं लगाता था किन्तु घर के उज्जवल भविष्य का स्वप्न देखकर मैंने अपने मित्रों के सहयोग से व्यवस्था कर दी।

सन 1965 में जुलाई का महीना था। थोड़ी-थोड़ी बारिश भी हो रही थी। मैं अपने मित्रों को भी निमंत्रण दे आया। रात के 11 बजे उसने अपना अनुष्ठान आरम्भ किया। उसने शरीर के वस्त्र उतारे, हाथ में चिमटा लिया और हवन करने लगा। वह जोर-जोर से मंत्र पढ़ता जाता था और अपनी पीठ पर जोर-जोर से चिमटे की चोट करता था।

बारह बजे के लगभग उसने मुझे और मेरे पिता को मकान के चारों कोणों में मिट्टी खोद कर लाने को आदेश दिया। हमने मिट्टी खोदी और हवन कुंड के निकट एक मिट्टी का छोटा सा ढेर लगा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दिया। उसने पुनः जोर-जोर से मंत्र पढ़ना आरम्भ किए। वह मंत्र पढ़ने लगा। उसने शराब की बोतल और मुर्गा को हवन स्थल पर रखा और हमें कहा कि जो मिट्टी हम लाये हैं उसे हाथ से मसलें।

मैं मिट्टी मसल रहा था कि एक गेंद जैसी वस्तु मेरे हाथ में आई। उसने मुझे उसे खोलने का कहा। मैंने देखा कि लोहे की पतली चादर गेंद के ऊपर चढ़ाई गई थी। मैंने उस चादर को खोला तो देखा उसके भीतर हड्डियाँ, कुछ बाल, मेखें और एक पुतला सा पड़ा था। उसने वह सब मेरे हाथ से लिया और हवन कुंड में डाल दिया।

उसने बताया यही जादू था तो आपके परिवार का अहित करने के लिए दबाया गया था। अब जादू बाहर आ गया है। आज से आप के लिए सुख समृद्धि का युग आरम्भ होगा।

तंत्र

तंत्र शब्द तन् तथा त्र दो शब्दों के जोड़ से बना है। तन् का शाब्दिक अर्थ है - विस्तार और 'त्र' का अर्थ है त्राण अर्थात् रक्षा।

डा. ओम गोस्वामी के शब्दों में - 'तंत्र द्वारा जो जादू के अभिचार किये जाते हैं उन में प्रमुख हैं :

1. अपने वश में करना।
2. फूट डालना या डलवाना।
3. मन उचाट करना।
4. मारना या मरने की स्थिति तक पहुँचाना।
5. किसी वांछित वस्तु को प्राप्त करना।

डा. ओम गोस्वामी के शब्दों में - तंत्र में वाम मार्गी क्रियाओं से जादू सम्बन्धी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

तंत्र का प्रयोग विनाश के लिए किया जाता है। अतः यह एक भयंकर प्रक्रिया है। यह साधक को नर से पिशाच बना देती है। तंत्र में

---

1. संदर्भ : डोगरा लोक संस्कृति ते अनुष्ठान परम्परा - डा. ओम गोस्वामी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

माँस-मदिरा और मैथुन की अनुमति है, अतः तंत्र की परिगणना तामासिक वर्ग में की जाती है। तंत्र निवृति की उपेक्षा प्रवृति पर जोर देता है। इसमें खोने की अपेक्षा पाने का भाव होता है। तंत्र में गोपनीयता बनाये रखना अनिवार्य है, अन्यथा इस के परिणाम भयंकर भी हो सकते हैं।

लोक मंत्र

डा. सत्येन्द्र के शब्दों में हम कह सकते हैं कि - जो केवल शब्द रूप में प्रभाव पैदा करने वाला हो वही मंत्र है। मंत्र का सीधा सम्बन्ध शब्द से है - अर्थ से नहीं। हमें मंत्रों के शब्द तो ज्ञात हैं किन्तु अर्थ नहीं। अतः मंत्रों में अर्थ का महत्व बहुत ही गौण है।

मंत्र में शब्द उच्चारण पर बहुत बल दिया जाता है। यदि शब्द का उच्चारण शुद्ध नहीं तो मंत्र का प्रभाव भी नहीं। इसी लिए वेद मंत्रों के उच्चारण के लिए विद्वानों ने कई नियम बनाये हैं। भारतीय संस्कृति में मंत्रों का विशेष महत्व रहा है। वैदिक युग में ही इन का प्रचलन हो गया था। कई प्रकार की बाधाओं का दूर करने का विधान हमारे मंत्रों में है। धर्म ग्रंथों के अनुसार धर्म, अर्थ काम-मोक्ष की प्राप्ति मंत्रों द्वारा की जा सकती है।

लोक मंत्र : जिन मंत्रों का प्रचलन लोक समाज में लोक भाषा में लोक चिकित्सा के लिए है उन्हें लोक मंत्र के नाम से अभिहित किया जाता है। इन मंत्रों का उद्देश्य उपद्रवी प्रेतात्माओं के त्रास से मुक्ति पाना भी है। इन मंत्रों का सृजन सिद्धों, नाथों, योगियों और पीर-फकीरों ने जनहित में किया है। लोक-समाज में अच्छे मंत्रों का प्रचलन भी है और बूरे मंत्रों का प्रचलन भी है। डुग्गर में यह लोक विश्वास प्रचलन में है कि लोकमंत्र से द्वेषी व्यक्ति को दुःख दिया जा सकता है और इन मंत्रों द्वारा व्यक्ति का रोग और कष्ट दूर भी किया जा सकता है।

शाबर मंत्र

शाबर मंत्र सिद्ध-पीठों द्वारा सिद्ध किए गए मंत्र हैं इन की सिद्धि कठिन नहीं होती। विधि निषेध सम्बन्धी आदेशों का पालन करने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

की भी इनमें आवश्यकता नहीं पड़ती। इनमें भी कई मंत्र अच्छे हैं और कई अहितकारी। डुग्गर में ये मंत्र प्रेतात्माओं को वश में करने के लिए सिद्ध किए जाते हैं।

डोगरी लोक मंत्र

डोगरी-भाषा के लोक मंत्रों के कुछ उदाहरण निम्न हैं :

हनुमान का मंत्र

हनुमान बलवान
बारां बरस के जुआन
हाथ में गदा
मुक्ख में पान
जीह्वा जोती करे
कंचन कान पड़े गड़ी
पढ़ो पलक तीसरी घड़ी
तीसरा पलक
जा तीन सो
बामन वीर को पान
सब सखी जोगन को बांद
उच्चके को बांद
चड़ेल को बांद
कच्चे मसान को बांद
मसान को बांद
खलारी के खेत को बांद
ताप तजारी को बांद
मेरा बज्जे आ न बज्जे तो
अंजनी का पिया दूध
हराम कर
मेरी भक्ति, गुरां दी शक्ति
ईश्वर महादेव तेरा वाचा
फुरै

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इस मंत्र से भूत-प्रेत, चुड़ैल, मसान इत्यादि सभी पकड़ में आ जाते हैं। महिलाओं के रोग भी दूर होते हैं।

जोगन का मंत्र

ओम नमों
गास गुड्डी
गास जोगन
बोली जोगन
बैहरी जोगन
रतै मूँह
बूचै कन्नै
भद्दर काली
झिक्कै मम्मैं
अत्थर काली
बड्डै दंदै
त्रै सो जोगन
चलदी कन्नैं
बैरी जोगन
बैठी चक्कर मारै
नौ नाथैं
धूनी लाई
फगड़ी जोगन
बधुनियाँ लाई
बाल्ला जोगी
नारद ज्ञाणी
कच्चा धागा
त्रै चुट्टियाँ पानी
सत सताना
काली बकरी

---

1. डुग्गर के लोक मंत्र - खजूर सिंह

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मिठै बब्बर
करदी न्हारी
काली जोगन
खुद-खुद करै
अच्छी जोगन
खिड़-खिड़ हस्सै
हनुमानै मारी हक्क
उसदी रक्ख (कवच)
डाकनी दी भक्ख
अगड़ी कर हिक्क
पिचड़ी कर पिट्ठ
खुट्टी-सुटाई
भैजी भजाई।

इस मंत्र से जोगनी का प्रभाव प्रभावित महिला से दूर हो जाता है। कन्याएँ और महिलाएँ रोग मुक्त हो जाती हैं।

सरसाली का मंत्र

गल्ड गल्ड अम्बर गर्जै
हैट्ठ गर्जै सरसाली
सरसाल कुस कमाती
कुस कमाई,
ईश्वर कमाती
गोरखैं कमाई
दैहनै हत्थ चण्डिका (मोड़ छड़)
ब्राह्मैं हत्थ शुरी,
शुरी मेरी ऐ शरतोली (शतोली)
घड़ी कुस लुहार
सतै तां घड़ी
घड़ी नचन्दरै तार (महिने का पहला ऐतवार)
गोरख कुण्डली पढ़न लगे सरसाल,

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आईयाँ घनकोर,
खाद्दियाँ मोर,
कौह्दा कण्डा क्या करै,
कौह्दा किश खा,
लोहा कोठा,
लोहै कौठै र हनुमत बीर बैठा
तलै शीश नाग,
शीश नागै र बिरज शिला,
बिरज शिला र थौल
धौले र धरतरी
धरतरी र कुम्भ
कुम्भ शणाकै,
शुरिया णाके
गौरजां राणी
ऐ सियाणी
कम्बैं सरली
सक्खड़ झंझा ऐण बटाल
मंझा कप्पै रथ कपाल
पीली सौली बदली औवै
धरत त्रौड़ी गास न्हौवै,
गंगा न्हौन जा।

मसान को कील देने का मंत्र

ओम नमों गड़ गड़न्ता चलै
सना पहार लोह् की शमक को तोड़ता चलै,
जो आवै मार मार करता
सो देखिए पाहि पंड़ता,
चलन हारे का पाँव क्हील,
मास हारे का हाथ क्हील,
नौ नाड़ी को क्हील,

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ब्हतर कोठा को क्हील,
मढ़ी मसान डाकनी शाकनी क्हील्ले,
तां हनुमान क्हील्लै।
नेई क्हील्लै तां माता अंजली का दुद्ध
रहाम करै।
बज्जर का सोट्टा,
बज्जर का कुड़गाट,
गरूड़ का रूखाल,
हनुमन्त की चौकी,
लक्ष्मण जी की दुहाई,
जिस पर बैठे कालका माई,
सोट्टा का वे बास नां आवै,
भूत प्रेत, पशाच, ब्रह्मा की कुंजी,
ईश्वर का ताला,
जहाँ पर बैठ हनुमन्त रूखाला,
ओम् - ओम् - ओम् ।

भूत-प्रेत, मसान, डाकिनी, शाकनी आदि दुरात्माओं का प्रभाव जिस पुरुष या महिला पर हो स्याना उसकी चिकित्सा लोकमंत्र द्वारा करता है। जब वह विधिपूर्वक उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रेतात्मा को कील लगाता है तो प्रेतात्मा प्रभावित व्यक्ति को छोड़ देती है। उस का प्रभाव भी समाप्त हो जाता है।

पीर की कलाम

ला इल्ल लल्लाह
मुहम्मद रसूल अल्लाह
अतला कुरसी
यारी-खुदा
सांस की साली
लोहै कोट

संदर्भ : डोगरी-भाशा ते अदब दी तिहासक परचोल - देशबंधु डोगरा नूतन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ताम्बै कूंजी
मारी फोड़
फोड़ अल्लाह
मुहम्मद तेरी लोड़
शाहे म्यार सुलेमान
पैगंबर नबी रसूल
जा बाबा अली
कुतै लाया लगाया
भेज्या भजाया
ऐ नबी उदै
घर पुजायां
रसूल-ए-कलाम
करेआं कबूल
दुहाई माता
दोनों जट्टी दी
पंज पीरें दी।

इस मंत्र में एक ओर इस्लामी प्रभाव है और दूसरी ओर स्थानीय प्रभाव भी है। यह मंत्र पीर-फकीर फांडा, दबा, दारू करते प्रयोग में लाते हैं। इस मंत्र के प्रभाव से प्रभावित व्यक्ति आधि व्याधि से मुक्त हो जाता है।

भूत का मंत्र

खुर-खुर नालू ऐं
जली जलीगंन
मेरी भक्ति
गुरां दी शक्ति
फूरो मैत्तरा
इश्वरों बाचा।

---

1. संदर्भ : डुग्गर के लोक मंत्र - खजूर सिंह

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विधिपूर्वक इस मंत्र का उच्चारण करने से प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति ठीक हो जाता है।

भैरों का मंत्र

काला भैरों काली रात
काला चलै अद्धी रात
कालिया रातीं बामना बीर
पर नाली सिर रक्खै
छाती पाँव घड़कै
लाया लगाया
खोट खुटाला
भेज्या भजाया
निं जावै तां
माता कालका दा
दुद्ध रहाम करै
निं फुरै तां
लूना चमारी दे कुंड में
गलै
इश्वर महादेव
तेरा वाचा फुरै।

इस मंत्र को विधिपूर्वक पढ़ने से बाह्य शारीरिक रोग 'स्याना' दूर करता है।

छाया दूर करने का मंत्र

ओम श्री खंड किला मन
श्री रिषी काम वान
मतो नार सिंह हंकार दी
कहाँ लगाई बाद
गरी, छुआरा, जाफल
अपना पूजा लिए
हमारा मंतर सिद्ध करै

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शब्द सांचा
पिंड कांचा
चला मंतर
ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का विधिपूर्वक उच्चारण करने से प्रेत छाया से मुक्ति मिलती है।

काला मंत्र

जल से उब गेई जोगन
तीनों करै उपाए
लहू भखे मानसा
सूली भखे खार
हनुमत की चेली
बड़ी हंकार
जिस पर लग्गै कालका
पुट्ट सुट्टै घर बाहर
ईश्वर महादेव तेरा वाचा फुरै
वाचा निं फुरै
माता कालका दी दुहाई
माता गौरजां दी दुहाई।

बाहरी रोग दूर करने का यह मंत्र स्याना विधि के अनुसार पढ़ता है।

वशीकरण मंत्र

काम रूप देश से आई
कमक्खेआ देवी
जहाँ इसमाईल जोगी
की लगी फुलवारी
जहाँ बसे लोना चमारी
जहाँ जाए हमारे फूल की बास

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सो आवे हमारे पास
दोहाई लोना चमारी की।

इस मंत्र का विधिपूर्वक उपयोग करने से किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है।

परी वर्णन

(डोगरी लोक गीतों में परियों, जोगनों, डायनों का भी उल्लेख मिलता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है।)

मुंडिया धारा ढड़े तराटे
बिच-बिच सैला घाऽ ते टामें बूटे जी।
बूटे दे इक टाहला बेइयै
सुन्दर कोई नार लैंदी झूटे जी।।
ऐसी कोई दिक्खी नेईं
जिस लम्में सुनैहरी बाल।
बालें कांघी जी
गोरे चिट्टे मक्खन हत्थ
ते पुट्ठे ओह्दे पैर,
सूआ साहलू जी

(मुंढीधार में सब्ज घास है और उस घास में कहीं-कहीं वृक्ष भी हैं। एक वृक्ष की टहनी पर एक सुन्दर नारी बैठ कर झूटे ले रही है। मैंने ऐसी सुन्दर महिला पहले कभी नहीं देखी जिस के बाल सुनहरे हो और लम्बे हों। उसके बालों में कंघी है। उसके हाथ मक्खन की भाँति सफेद और गोरे हैं। किन्तु उसके पाँव उल्टे हैं। उसने लाल रंग की ओढ़नी लपेटी है।

प्रायः जो लोग परी देखने का दावा करते हैं वे परी का रूप रंग ऐसा ही बताते हैं जैसा इस गीत में वर्णित है।

परी की परिगणना भी पिशाचिनी आत्माओं के अंतर्गत होती है। उन्हें प्रायः काम-वासना के कारण उतेजित बताया जाता है।

---

1. संदर्भ : डुग्गर के लोक मंत्र - खजूर सिंह 'ठाकुर' 2. पंचैरी : लोक और संस्कृति

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विदेशी ग्रंथ

1. द बुक आफ लिविंग डेड : सर विलियम बेरेट
2. टकनीक्स आफ एल्टूल प्रोजेक्शन : डा. राबर्ट कूकल
3. मोर एबाउट लाइफ इन दी वर्ल्ड अनसीन : एन्थोणी बेगिया
4. दि अदर साइड : डा. जेम्स पाइक
5. आफ्टर डेथ : डब्ल्यू टी. स्टेड
6. लाईफ आफ्टर डेथ : रेमंड मूडी (नार्जिया)
7. वियांड द बाडी : सूसांन
8. लाईट्स एण्ड शैडोज आफ स्प्रिचुअलिज्म
9. फेक मिथ्स एण्ड लिजेण्डस
10. टवंटी केसेज सजेस्टिस आफ रिइन्कानेशन : डा. इवान स्टीवेन्सन
11. एस्टूल प्लेन : सी.डब्ल्यू. लेड बीटर

विश्व प्रसिद्ध परा विज्ञानी

1. वैल्क मोरे
2. सर कैनेडरिंग
3. सर रेमंड मूडी
4. वैल्क मोरे
5. सर केन्ने डरिंग
6. डा. स्टीवेंसन (वर्जीनिया)
7. डा. राबर्ट कूकल
8. डा. ए. रसल वालेस
9. सर विलियम बैरेट
10. प्रो. एच.पी. प्रायस
11. डा. विल्डर
12. डा. ए. रसल बालेस
13. सर विलियम वैरेट

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

संदर्भ ग्रंथ

1. मरणोतर जीवन : तथ्य और सत्य सम्पदक – ब्रह्म वर्चस
2. तंत्र ओर प्रेत विद्या : डा. राधा कृष्ण श्री माली
3. डुग्गर के लोक मंतर : खजूर सिंह ठाकुर
4. डोगरा लोक संस्कृति ते अनुष्ठान परम्परा: डा. ओम गोस्वामी
5. डुग्गर की संस्कृति : शिव 'निर्मोही'
6. डुग्गर की लोक गाथाएँ : शिव 'निर्मोही'
7. डुग्गर के लोक देवता : शिव 'निर्मोही'
8. बसोहली दर्शन : शिव दोवलिया
9. कल्याण देवतांक : वर्ष 1964 गीता प्रैस गोरखपुर
10. नागराज वासुकि : ओम गोस्वामी
11. श्री गरूड़ पुराण : बजाज बुक डिपो, जम्मू
12. डोगरी भाशा ते अदब दी तिहासक परचोल : देशबंधु डोगरा नूतन
13. शीराजा डोगरी अंक 154 : कल्चरल अकादमी जम्मू-कश्मीर
14. डुग्गर की जातियाँ : एक अध्ययन शिव 'निर्मोही'
15. तंत्र विद्या : आचार्य सत्यानन्द
16. हिमाचल लोक संस्कृति के स्रोत : डा. वंशी राम
17. डोगरी लोक गीत भाग 2 : सम्पादक नीलाम्बर देव शर्मा
18. राज दर्शनी : गणेश दास भटैहड़ा
19. कल्याण : पुर्नजन्म अंक : गीता प्रैस गोरखपुर
20. पाडर : लोक और संस्कृति : शिव 'निर्मोही'
21. पंचैरी : समाज और संस्कृति : शिव 'निर्मोही'
22. डुग्गर दा लोक जीवन : चम्पा शर्मा
23. भद्रवाही लोक साहित्य : प्रियतम कृष्ण कौल
24. अन्तिम संस्कार : हँसराज शास्त्री
25. हिन्दू संस्कार : डा. राज बलि पांडेय

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

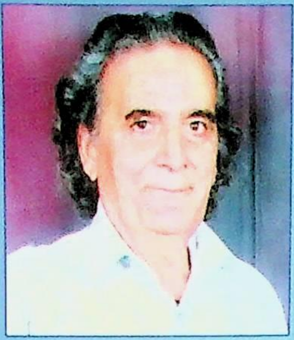

लेखक परिचय

नाम: शिवदत

लेखकीय नाम:- शिव निर्मोही

माता-पिता का नाम: आसो देवी- सावनमल जन्म

तिथि:- 19-04-1937

जन्म स्थान:- पैंथल (कटड़ा- वैष्णो देवी)

व्यवसाय: अध्यापन

रचनाएँ:-

1. डुग्गर की लोक गाथाएँ (पुरस्कृत)
2. डुग्गर का लोक साहित्य (पुरस्कृत)
3. डुग्गर की संस्कृति (पुरस्कृत)
4. पाडर लोक और संस्कृति (पुरस्कृत)
5. किश्तवाड़ संस्कृति और परम्परा
6. डुग्गर का भाषायी परिचय
7. डुग्गर के लोक देवता
8. डुग्गर के अमर सेनानी
9. डुग्गर के देवस्थान
10. डुग्गर की दन्त कथाएँ
11. डुग्गर का इतिहास
12. डुग्गर के दुर्ग
13. डुग्गर के गुफा मंदिर
14. डुग्गर के मंदिर
15. डुग्गर के लोक गीत
16. डुग्गर के दरवेश
17. डोगरा गाँव- पैंथल
18. डुग्गर के नगर
19. डुग्गर की ऐतिहासिक नारियाँ
20. डुग्गर में बुद्धमत
21. डुग्गर के निम्बार्क संत
22. डुग्गर की नदियाँ
23. दाता रणपत की अमर कथा
24. कश्मीर की कहानी
25. डुग्गर की जातियाँ
26. स्वामी नित्यानन्द
27. जीवन चक्र (डोगरी)
28. जातराचक्र (डोगरी)
29. पंचैरी: समाज और संस्कृति
30. डुग्गर के राज महल
31. डुग्गर के तालाब
32. डुग्गर के सर
33. डुग्गर की समादिया
34. डुग्गर के शहीदी स्मारक
35. डुग्गर की बावलीयां

₹ 240/-

अक्षय प्रकाशन

अंसारी रोड, नई दिल्ली।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri